



# स्वेन

—

मूढ इतिहास—  
सेवमा लेजरलाफ  
[ नोबुम पुरस्कार विजयिनी ]

—

प्रकाशक—  
एस० एस० मेहता पेशड ब्रदर्स  
ई३ सूतटोला-मनारस

—

प्रकाशक—

६० गिरिजाशंकर मेहता

एस्० एस्० मेहता पंड मद्रस

जशी।

---

नोबुल-पुरस्कार के निर्णायकों की राय:—

For reason of the noble idealism, the wealth of imagination, the soulful quality of style which characterise her books”

---

एद्रक—

५० गिरिजाशंकर मेहता

मद्रस मद्रस अट प्रेस, जशी

सेवा में—

समय में



## दो शब्द

ज्ञान स्योदन को सर्वश्रेष्ठ उपन्यास लेखिका हय्यर  
सेल्मा तोडलाक लिखित स्योदिशु ०१५ १ ०० ०१  
या श्रमजी नाम 'The Interest' का दिशु अनुयाय फाटकों  
की सेवा में गेट करते हुए अथवा 'तुम्हारे ही उदा है।  
पुस्तक कैसी है, इसपर अथवा मत लिखना शुरू की अपक  
दिखाना है। फिर भी इतना लिखना अनुचित न होगा  
कि यह पुस्तक इस महान लेखिका की मार्गचम औपन्यासिक  
रचना है।

इसमें मानव जीवन की अतन्त्र परिवर्तता और मज्जा  
या अतिक्रमण करना कितना भयकर अथवा है, युद्ध,

जो दिन-दहाड़े हजारों निर्दोष प्राणियों को तलवार के घाट उतार देता है, मानव-जाति का कितना सघातक शत्रु है; सत्सार अतस्तल को गभीर भावनाओं को पहचानने में धोखा खाकर कितनी निर्दयता के साथ निरपराधियों को पैरों तले रौंदा करता है और समाज से वहिष्कृत व्यक्ति का जीवन-पथ निराशा के गहन अधकार से आच्छादित होकर कितना दुरतिक्रम्य बन जाता है—इसका ऐसा गर्मस्पर्शी, करुण और भावपूर्ण चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है कि पढ़कर दिल में अहिंसा, जाति प्रेम और आत्मोत्सर्ग के भाव भरे बिना नहीं रहते। यह उपन्यास नहीं, आधुनिक संसार को अधोगति और क्रूरता का रोमांचकारी खाका है, जिसमें कथानक के आवरण में कुशल लेखिका ने जीवन की कई गहनतम पहलियों पर ऐसी फड़कती हुई शैली से प्रकाश डाला है कि पढ़नेवाले अवाक रह जाते हैं। इसमें जीवन की महत्ता और पवित्रता के साथ साथ इस महान् तथ्य की भी अभिव्यक्ति की गयी है कि तिरस्कृत होकर भी मनुष्य अपनी नम्रता, सहन्शीलता और परोपकार-वृत्ति से गहरी घुराइयों को जड़ खोद सकता है। वस्तुतः डाक्टर लैजरलाफ ने यह पुस्तक मनुष्य-मात्र के मनमें युद्ध के प्रति घृणा और जीवन के प्रति का भाव

भरने के उद्देश्य से रची थी। गत महासमर के भीषण हत्याकांड ने इनके हृदय पर जो गभीर आघात पहुँचाया था, वही दो वर्ष बाद इस पुस्तक के रूप में इन्होंने अभिव्यक्त कर संसार के समक्ष रखा, ताकि मन्येरु मनुष्य के दिल में यह बात गढ़ जाय कि हिंसा से बढ़कर दूसरा कल्मष और अपराध पृथ्वी तल पर नहीं है।

आशा है, पाठक इस प्रकार के उत्तम उपन्यास को पढ़ने का कष्ट उठाने की कृपा करेंगे इसे अपनाकर हमको प्रोत्साहन देने की भी कृपा करेंगे, जिससे हम भविष्य में भी इसी प्रकार उत्तमोत्तम संसार प्रसिद्ध साहित्यिकों की पुस्तकों को अनुवाद कराकर प्रकाशित कर सकें।

—प्रकाशक





( १ )

**स्वी** डन की पश्चिमी पहाड़ियों से घिरे हुए ग्रामन के टापू में कुछ वर्ष पहले एक व्यक्ति अपनी स्त्री के साथ रहा करता था। वे सुरत शरु में एक दमर से मिलकुत्र ही मिल थे, क्योंकि जहाँ पत्रि एक भद्रा, प्रदसुरत और सुस्त व्यक्ति था, वहाँ पत्नी पचाम की चम्र में भी बीस वर्ष का युवती-जैसी सुन्दर और सुकुमार थी। उनके नाम जोल और तालिया थे।

एक दिन रविवार की सुझावनी सध्या के समय जोल अपनी पत्नी के साथ कुटिया के सामनेवाली खटान पर बैठा था। वह अपनी चारु चातुगी दिटाराने का बहुत ही शौकीन था और अपने हा शब्दों का आनन्द लूटने के अभिप्राय से अकमर पत्नी के साथ गप्पें भी लगाया करता था। आज भी वह सायकाल के समय पट्टे हुए किसी अखबार का समाचार सुना रहा था, किन्तु तालिया का

मन पति की बातों पर एकाग्र न था। वह मन ही-मन सोच रही थी—'इनका कैसा अजीब दिमाग है! श्यामर की दो चार पक्षियों से ही कितना रहस्य निचाय लेते हैं। किन्तु अकसोच है कि हमरों के लिये सीर खपाने के बजाय हम लागों के लिये अपनी प्रतिभा का कुछ भी उपयोग नहीं करते।'

कुटिया के सामने एक जोर्या शीश्या मकान था, जहाँ पहले कुछ मल्लाह और जहाजी पतन रहा करते थे। किन्तु वह रहने के योग्य न था। इसीलिए जोल उस कुटिया में रहता आ जा पहले रसोई। घर और भण्डार का काम देती थी। यकायक तालिया की दृष्ट उस मकान पर जा पड़ी और उसके मन में विचार उठ खड़ा हुआ—'यदि इन्हें भी अपने बाप दादों की तरह समुद्र से प्रेम हाता, तो श्यामर में कितने पैस जमा हो जाते। किन्तु खेता की दुन के आगे कुछ सुभे तय न दिवाजा निकल रहा है, फिर भी खेती के पीछे हाथ धाकर पड़े हैं।'

यद्यपि तालिया पनि के समीप चुपचाप बैठी थी, उसका मस्तक चिडिया के चञ्चल निर की तरह इधर उधर घूम रहा था। वह टापू की चट्टानों के बीच जहाँ-तहाँ ऊंगे हुए आलू और गोहूँ के खेतों की आर देख रही थी। मोमन का अधिनाश भाग पहाड़ी शीर ऊसर था। अतएव काली-काली चट्टानों के बीच हरे-रोत द्वीपों जैस सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। यह समय जोल की ही कठोर मिहनत का फल था। मोमन की जमीन को उपजाऊ बनाने के लिये वह कई बार नावों पर जाकर खाद और मिट्टी लाया था। उसे उम्मीद थी कि किसी दिन उसकी मेहनत का पुरा पुरस्कार प्राप्त होगा। किन्तु तालिया उन धानों पर विश्वास न रखती थी। वह पति की खेती की आर देखकर अक्सर यही सोचा करती थी—'इन देजों में पसीना बहाने से क्या लाभ? उत्तर की

वर्फीली हवा का एक झोंका ही इस हरियाली को मिट्टी में मिलाने के लिये काफी है। मैं तो हमेशा बहती हूँ कि खेती के क्रमेले में पड़ना भारी मूर्खना है। इसमें तो बेइतर समुद्र का व्यवसाय ही है।

आज भी जब उसकी दृष्टि मजान की ओट में मिलमिज मिन मिल करती हुई अनंत जलराशि पर पड़ी तो उसके दिम से एक ठण्डी निश्वास निकल पड़ी और मन में विचार उठ खड़ा हुआ— 'ओह ! समुद्री व्यवसाय कितना बढ़िया है ! मजे से माल ढोना और भाड़ा कमाना। चादी ही झड़नी रहती है। पाचों अगुलिया घी में तर रहती हैं। अगर मैं पुरुष होती तो सबसे पहले समुद्र की ओर दौड़ पड़ती और भूतकर भी खेती का पचडा न उठाती। देखो न, हम बूढ़े हो रहे हैं। जब थककर लाचार हो जायगे तब क्या दुर्दशा होगी ? लड़के तो इस जजाल में फसंगे ही नहीं। और उन बेचारों का इसमें दोष ही क्या ?'

'सुनती नहीं हो ?—इसी समय उसके पति ने गौर के साथ देखते हुए कहा। उसने स्त्री के स्वगत विचार भाप लिए। वह उत्तरी ध्रुव से लौटे हुए कुछ अमेज यंत्रियों का बिस्ता सुना रहा था। यथायक सन्देह हुआ कि तालिया का ध्यान एकाग्र नहीं है। किन्तु उसे न तो आश्चर्य ही हुआ, और न क्रोध ही, क्योंकि यह पहनाही मौका न था, जब उसे तालिया से उसकी लापरवाही की शिकायत करनी पड़ी हो।

'वाह ! कौन कहता है मैं नहीं सुन रही हूँ ?' स्त्री ने हक्का बक्का होकर उत्तर दिया इसी क्षण सोच रही थी, कि आप कितने अच्छे बक्का हैं ! क्या ही अच्छा होता, यदि पादरी का काम करते !!'

'खुब कहती हो !' जोल हसता हुआ बोला, 'एक आता तो सभलता नहीं, और पादरी बनाने चली हो !'

मन पति की बातों पर एकाग्र न था। वह मन ही-मन सोच रही थी—'इनका कैसा अजीब दिमाग है! अल्पवार की दो-वार पत्नियों से ही वित्तना रहस्य निचाड़ लेते हैं। किन्तु अकसास है कि बूमरों के लिये सीर खपाने के बजाय हम लोगों के लिये अपनी प्रतिभा का कुछ भी उपयोग नहीं करने।'।

कुटिया के सामने एक जोर्य शौर्य मकान था, जहाँ पहले कुछ मल्लाह और जहाजी फतान रहा करते थे। किन्तु वह रहने के योग्य न था। इसीलिए जोल उस कुटिया में रहता आ जा पहले रसोई। घर और भण्डार का काम देती थी। यकायक तालिया की दृष्ट उस मकान पर जा पड़ी और उसके मन में विचार बठ उड़ा हुआ—'यदि इन्हें भी अपने बाप दादों की तरह समुद्र से प्रेम हाना, तो आज घर में कितने पैस जमा हो जाते! किन्तु खेता का पुत्र के आगे कुछ सुके तब न दिवाला निकल रहा है, फिर भी खेती के पीछे हाथ धाकर पड़े हैं।'।

यद्यपि तालिया पनि के समीप चुगचाप बैठी थी, उसका अस्तक चिडिया के चञ्चल सिर की तरह इधर उधर घूम रहा था। वह टापू की चट्टानों के बीच जहाँ-तहाँ ऊगे हुए आलू और गहूँ के खेतों की आर देख रही थी। ग्रामन का अधिकांश भाग पहाड़ी आर ऊसर था। अतएव बानी-काली चट्टानों के बीच हरे खेत द्वीपों जैस सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। यह सब जोल की ही कठोर मिहनत का फल था। ग्रामन की जमीन को उपजाऊ बनाने के लिये वह कई बार नावों पर जाकर खाद और मिट्टी लाया था। उसे वम्बोद थी कि किमी दिन उसकी मेहनत का पूरा पुरस्कार प्राप्त होगा। किन्तु तालिया उन बानों पर विश्वास न रखती थी। वह पति की खेती की आर देखकर अक्सर यही सोचा करती थी—'इन देगों में पसीना बहाने से क्या लाभ? उत्तर की

वर्फीली हवा का एक झोंका ही इम हरियाली को मिट्टी में मिलाने के लिये काफी है। मैं तो हमेशा कहती हूँ कि खेती के कामेले में पड़ना भारी मूर्खना है। इससे तो घेःतर समुद्र का व्यवसाय ही है।

आज भी जब उसकी दृष्टि मञ्जान की ओट में मिलमिन मित्र मिल करती हुई अनत जलराशि पर पड़ी तो उसके दिम से एक टपही निश्वास निकल पड़ी और मन में विचार उठ खड़ा हुआ—  
‘ओह ! समुद्री व्यवसाय कितना बढ़िया है ! मजे से माल ढोना और भाड़ा कमाना। चादी ही कड़नी रहती है। पाचों अगुनिया घों में तर रहती हैं। अगर मैं पुरुष होती तो सबसे पहले समुद्र की ओर दौड़ पड़ती और भूतकर भी खेती का पचड़ा न उठाती। देखो न, हम बूढ़े हो रहे हैं। जब थरुकर लाचार हो जायगे तब क्या दुर्दशा होगी ? लड़के तो इस जजाल में फसेंगे ही नहीं। और उन बेचारों का इसमें दोष ही क्या ?’

‘सुनती नहीं हो ?—इसी समय उसके पति ने गौर के साथ देखते हुए कहा। चमने स्त्री के स्वगत विचार भाप लिए। वह उत्तरी ध्रुव से लौटे हुए कुछ अमेज यंत्रियों का किस्सा सुना रहा था। यत्रायक सन्दह हुआ कि तालिया का ध्यान एकाग्र नहीं है। किन्तु उसे न तो आश्चर्य ही हुआ, और न क्रोध ही, क्योंकि यह पहनाही मौका न था, जब उसे तालिया से उसकी लापरवाही की शिकायत करने पड़ी हो।

‘वाह ! कौन कहता है मैं नहीं सुन रही हूँ ?’ स्त्री ने हक्का बक्का होकर उत्तर दिया इसी क्षण साच रही थी, कि धाप कितने अच्छे बक्का हैं ! क्या ही अच्छा होता, यदि पादरी का काम करते !!’

‘खुब कहती हो !’ जोल हसता हुआ बोला, ‘एक सभलता नहीं, और पादरी बनाने चली हो !’

'कैसे जानत हैं कि मैं नहीं सुन रही थी ? रत्ती-रत्ती मग तो याद है—जिस तरह वनका जहाज हुआ, धरक में पूरा वर्ष कटा जब सामान चुरु गया और चमड़े के टुकड़े चवान पड़े ..."— वह चिढ़कर कहने लगी। उसका मुँह इस तरह काँप रहा था, माना दिज्ञ में लजबली मच रही हो।

'जरा कल्पना करा, यदि उन लोगों के साथ कोई हमारा ही निकट-सम्बन्धी भूयो सरती हाता !'—पति न लापरवाह की तरह कहा।

स्त्री चोंक उठी और तीक्ष्ण दृष्टि से जोल की ओर ताकत लगा। समझ न सकी, उसपर शब्दों का आशय क्या था। 'कुछ-न कुछ अर्थ वा होगा ही।' उसने सोचा, किन्तु जोल की मित्र मित्राती आत्मा से उसका दिज्ञ भावना आसान न था।

'यों दूसरों के लिये ही भविष्य और समय बर्बाद करते रहेंगे तो जीवन में कुछ भी रस न बचेगा।' आदिशरकार वह घात पलटने के लिये धोली—'जब वे लोग मच ही गये तो निरर्थक कल्पना करने से क्या लाभ ?'

तालिया की दृष्टि में उस बात के लिये दिमाग खपाना मूर्खता थी, जिसका अन्त सुखमद हो। किन्तु जोल न वे शब्द नेमतलब नहीं कहे थे। तालिया 'को लापरवाह दखकर हमने कहना शुरू किया—'कल रात को मैंने एक अजीब सपना देखा ! ऐसा नजर आया मानो स्वर्न सिरहाने खड़ा होकर किसी भारी अपराध के लिय मुझे काँस रहा है। और, सपनों में कुछ अर्थ होता है या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, किन्तु एक बात का आश्चर्य है। आज ही अखबार में भी उसका नाम देखा ...'

'अखबार में ?' तालिया चोंककर चिछा उठी। उसकी लापरवाही न जाने कहाँ भाग खड़ी हुई। 'किस अखबार में ?'

हिमका नाम ?' आदि पचीसों प्रश्नों की बौद्धा से ज्ञान परेशान हो गया। असावधानी की शिकायत करने की अब आवश्यकता न रही। बात यह थी कि यदि और किसी के मंत्र में ऐसा कहा जाता तो वह कदापि इतनी अधोर न होती। किन्तु यह तो स्वर्न का समाचार था। उमका—जो तालिया का सबसे लाड़ला बेटा था। जिसको नौ वर्ष की उम्र में ही एक अपेक्ष मज्जन ले गये थे। जिसका सत्रद वर्ष से न कोई पत्र आया था, न समाचार और ही।

अचानक ही नाव की यात्रा करते करते एक अयत्न दुम्पति इस टापू पर आ पहुँचे थे। स्वर्न उस समय देवत नौ माल का लड़का था। उनके पास अगार मम्पति थी, किन्तु बाज पछा एक भी न था। स्वर्न को देवतार से मुख्य हो गये और उमे गोद लेन के लिए तैयार हो गए। तालिया पहले तो अपने पुत्र को देने से द्विचिन्तायी, किन्तु भविष्य का विचार कर आखिरकार राजी हो गयी। लड़का हानदार और प्रतिभाशाली था—अवसर मिलने पर काफी नाम कमा सकता था। यही माचकर माता-पिता ने उमे दूबर्गों के हथ सौंप दिया। तब से सत्रद वर्ष बीत गए, स्वर्न उन लोगों के लिए उतना ही अज्ञात था, जितना समुद्र के तले में पड़ा हुआ पाणी।

'यह दरजो, बचे हुए यात्रियों में उमका भी नाम सम्मिलित है।' जोन ने अत्यन्त स्थिरते दुःख कहा।

फ्लॉटर तालिया ने अत्यन्त स्वीच लिया।

'पूले ही क्या न कह दिया कि स्वर्न भी यात्रा में शरीक था ?' वह उलहने के स्वर में बोली—'अब दुबारा वही किस्सा दाहरना होगा। मैंने एक शब्द भी न सुना।'

जान बुद्ध हताहताहित सा हो गया। वह स्वर्न की चर्चा छेड़ने के पड़ने काकी भूमिका बँट देना चाहता था। वैसे



से असभ बात कइना आसान होता, किन्तु जब पत्नी की बेचैनी ने सारा मामला ही पलट दिया, तो जाचार होकर उसे फिर से सब बातें दोहरानो पडीं ।

‘ओइ ! अपने बच्चों को बाहरी लोगों के हाथ सौंपना छुग है । तालिया किस्सा सुनती हुई कहने लगी उसने ‘क्या-क्या मुसीबतें न उठायी हागी ? जब जहाज के साथ खाने का समान भी छूट गया होगा, तब बेचारों ने क्या खाया होगा ?’

इसी समय जोत उतरी धव के यात्रियों की वापसी पर निकाले गये जलूस और स्वागत-समारोह का वर्णन करने लगा । ‘जाखों स्त्री पुरुष बदरगाह पर आये थे । जगह-जगह यात्रियों के स्वागत की घूम थी ।’

‘आह ! अगर हम भी सड़क के एक कोने में खड़े रहकर समझा स्वागत दख सकते !’—तालिया बीच में ही धोख उठी ।

‘सड़क पर क्यों ?’ माता पिता और रिश्तेदारों के लिए तो खास जहाज तैयार खडा था ।’

‘आह ! हमें उस जहाज पर कौन जाने दता ?’ स्त्री ने एक निश्वास खींचत हुए कहा, ‘क्या ‘बह’ ऐसी बात सहन कर सकती थी ?’

स्वेन की जिसमाता ने गोइ लिया था उस माता को तालिया । ‘बह’ क नाम से पुंता काती थी । बात यह थी कि जब से उस रमणी न स्वेन का पत्र लिखन से मना कर दिया था, तब से तालिया उससे बहुत ज्यादा अपसन्न रहा करती और अपने मन में उसे राजसी की तरह निर्दय और डरावनी स्त्री समझने लगी थी । आज भी बातचीत क प्रवाद में वह महिला याद हा आई, जिससे तालिया का चेहरा उदास हो गया ।

‘दखने से तो मना न करती !’ जोर ने कुछ साहस घटोर-

कर उत्तर दिया। वह स्त्री के समक्ष कोई महत्वपूर्ण समाचार पत्र करना चाहता था, किन्तु ऐसा विदित जाना था मानो एक दम कह देने के पढ़न उन कुछ समय की आवश्यकता है। इसलिये वह बार-बार अपने मन में कह रहा था—‘आह ! उसी एक बात पर तो हमारा भाग्य तुला हुआ है।’

‘अजी, अभी तुम क्या जानते हो।’ तालिया रोप भरे स्वर में चिंता उठी, ‘सप्रद्वरस में एक पत्र भी तो उस दुष्ट ने लिखने न दिया ! स्वने कोई बच्चा ता या नहीं, चाहता तो खानगी तौर पर ही एकाध पत्र लिख ही सकता था, किन्तु लिख कैसे ? बात तो साफ झलक रही है कि उस हरामजादी न भोले लड़के के कान खुब भर होंगे। जरूर स्वेन क मास्टरक में यह बात ठूँसी गई होगी कि हम लोग बड़ों की सङ्गति क बिजकून अयोग्य है।’

कहते-कहते उसका गला रुध गया। आवाज भराने लगी और आँखों में आँसू छलक आये। चेहर से प्रसन्नता का भाव विलुप्त हो गया और मन में कई पुरान रज्जिटा विचार उठने लगे।

‘सच कहती हो, आश्चर्य की बात है कि स्वने को एक अन्तर भी लिखने की फुर्सत न मिली, जरूर उन लोगों ने भड़काया होगा।’ जोल हॉम हॉ मिलाना हुआ बोला।

किन्तु तालिया ने कुछ भी उत्तर न दिया। दिन की व्यथा के आगे बीजना उसक लिए असम्भव हो रहा था।

‘मामला विगड़ रहा है !’ जाल ने अपने मन में कहा, ‘अगर यही दशा रही तो कुछ भी दम्भीद न रहेगी।’

वह अपनी पत्नी से एक जरूरी समाचार कहने के लिए उरसुक हो रहा था, किन्तु तालिया की उदासीनता देखकर, उस समाचार कहने से वह डर रहा था। यही कारण था कि वह इस बात को कहने के लिए उपयुक्त अवसर की राज म था। पर जब स्त्री का

से असज्ज घात करना आसान होता, किन्तु जब पत्नी की बेचैनी ने सारा सामान ही पनट दिया, तो आचार होकर उसे फिर से सब घातें दोहरानो पड़ें।

‘ओह ! अपने बच्चों को बाहरी लोगों के हाथ सौंपना घुग है। तालिया किस्मा सुनती हुई कहने लगी उसने ‘क्या-क्या सुमीवर्ते न छठायी हागी ? जय जहाज के साथ खाने का समान भी छूट गया होगा, तब बेचारों न क्या प्राया होगा ?’ इसी समय जोन उत्तरी भ्रम के यात्रियों की घापसी पर निकाले गये जलूस और स्वागत समारोह का वर्णन करने लगा। ‘लाटों स्त्री-पुरुष बदरगाह पर आये थे। जगह-जगह यात्रियों के स्वागत की धूम थी’

‘आह ! अगर हम भी सड़क के एक कोने में खड़े रहकर उसका स्वागत दग्न सकत !’—तालिया बीच में ही बोन छठी। ‘सड़क पर क्यों ! माता पिता और रिश्तेदारों के लिए तो खास जहाज तैयार रखा था।’

‘आह ! हमे उम जहाज पर कौन जाने देता ?’ स्त्री ने एक निश्वास सींचते हुए कहा, ‘क्या ‘वह’ ऐसी बात सहन कर सकती थी ?’

स्वेन की जिसमाना ने गोद लिया था उस माता को तालिया। ‘वह’ क नाम से पुकारती थी। बात यह थी कि जब से उस रमणी न स्वेन को पत्र लिखने से मना कर दिया था, तब से तालिया उससे बहुत ज्यादा अपसन्न रहा करनी और अपन मन में उसे राक्षसी की तरह निद्रय और डरावनी स्त्री समझने लगी थी। आज भी बातचीत क प्रवाह में वह महिला याद हा आई, जिससे तालिया का चेहरा उदास हो गया।

‘दरन से तो मना न काती !’ जोन ने कुछ साहस बटोर-

कर उत्तर दिया। वह स्त्री के समक्ष कोई महत्वपूर्ण समाचार प्रकट करना चाहता था, किन्तु ऐसा विदित जाना था मानो एक दम कठ देने के पक्ष उन कुछ समय को आवश्यकता है। इसलिए वह बार-बार अपने मन में कह रहा था—‘आह! उसी एक बात पर तो हमारा भाग्य तुला हुआ है।’

‘अजी, अभी तुम क्या जानते हो।’ ताजिया रोप भरे स्वर में चिखा उठी, ‘सत्रह बरस में एक पत्र भी तो उस दुष्ट ने लिखने न दिया! स्वने कोई बच्चा ता था नहीं, चाहता तो खानगी तौर पर ही एकाध पत्र लिख ही सकता था, किन्तु लिख कैसे? बात तो साफ झलक रही है कि उस हरामजादी न भाले जड़क के कान खुब भर होंगे। जरूर स्वने क मास्टरक में यह बात ठूँसी गई होगा कि हम लोग यहाँ की सद्गति क विनाशक अयोग्य है।’

कहते-कहते उसका गला रुध गया। आवाज भराने लगी और आँखों में आँसू छलक आये। चेहर से प्रसन्नता का भाव विलुप्त हो गया और मन में कई पुरान रजीदा विचार उठने लगे।

‘सच कहती हो, आश्चर्य की बात है कि स्वने को एक अक्षर भी लिखने की फुर्सत न मिली, जरूर उन लोगो ने भड़काया होगा।’ जोल हों में हों मिलाना हुआ बोला।

किन्तु ताजिया ने कुछ भी उत्तर न दिया। दिल की व्यथा के आगे धोखना उसके लिए असम्भव हो रहा था।

‘मामला विगड़ रहा है।’ जाल ने अपने मन में कहा, ‘आठ यही दशा रही तो कुछ भी सम्पीद न रहेगी।’

वह अपनी पत्नी से एक जरूरी समाचार कहने के लिए उत्सुक हो रहा था। किन्तु ताजिया की उदासीनता दरकार, उस समाचार कहने से बर्हांडर रहा था। यही कारण था कि वह इस बात को कहने क लिए उपयुक्त अवसर की राज में था। पर जब स्त्री का

भगइते देखा तो बात छिपाने का साहस न रहा। दूरी जवान से  
सने कहना शुरू किया—'आज गिर्जाघर में एक नई छतर सुनी  
है तालिया ! शाम को पादरी मुझे घर लिवा ले गये थे। उनके  
बास इग्नेड से कुछ समाचार आया है। वहीं तो मुझे अलमार भी  
मिला।'

'पादरी ?' तालिया हडबड़ाकर पूछने लगी।

'हाँ, स्वेन के बारे में कुछ कहना चाहते थे।'

'उह ! हमे स्वेन से क्या मतलब। वह चाहे जो हो गया  
था, हमार लिए एक सा है।' वह चुप हो गई और मुह मोड़कर  
बैठ गयी।

जान ने भी कुछ उत्तर न दिया। बहुत देर तक दोनों चुप्पी  
साधे बैठे रहे।

आखिरकार तालिया ने ही मौन भंग किया।

'कैसे निष्ठुर आदमी हो।' वह उत्तेजित होकर बोल उठी,  
'इसी दुखिया फो पत्सुक बनाकर तडपाने में ही तुम्हें मना आता  
है। पादरी वाला समाचार क्यों नहीं कहते ?'

'पादरी स्वयं कह देंगे अभी अभी आनेवाले हैं।'

'पादरी ?', तालिया छल्लकर चिखा उठी, 'कैसे अजीब  
आदमी हो। पादरी आनेवाले हैं और तुम ध्यान जगाये बैठे  
दो ! मुझसे कहना तो चाहिये था ?'

वह मकान की ओर बठी। देखना चाहती थी, कि घर की  
सज्जता दुर्लभ है, किन्तु यकायक चकते चकते रुक गयी।  
'पादरी क्यों आ रहे हैं ?' पनि की ओर दगरकर वह बोली, 'हागा  
कुछ दाल में फाला। अथवा पादरी का क्या काम ?'

वह जान के विचार भोवने का प्रयत्न करने लगी। 'सम्भव  
है भुत्र की बफाती हया खाने और चमड़े के दुकाने खाने से।

स्वेन का टिमाग ठिकाने आ गया हो और वह हमसे मिलने का इरादा कर रहा हो, किन्तु याद रखो, इस घर घसे घर में पैर भी न रखने दूँगी। वह हम लोगों को क्या समझता है? अगर हम उसक कुछ भी नहीं हैं, जैसा कि वह समझ रहा है, तो हमें उस छोकर स कुछ सरोकार नहीं।

‘अबान सभाज कर बोले तालिया।’ पति ने डाँटकर कहा, ‘अब असली बात जानोगी तो इन शब्दा के लिए पछताओगी।’

वह स्त्री के उत्तेजित शब्द सुनकर तमतमा उठा। ‘मैं कुछ कहता हूँ और यह उल्टा ही अर्थ लगा लेती है।’ उसने मन-ही मन से कहा, ‘ओह!’ इसकी खोपड़ी फट सुभरगी। बात का न मतलब समझती है, न अरज से ही जबाब देती है।

‘आखिर कहो तो, पादरी क्या समाचार सुनानेवाले हैं?’ तालिया पति की घमकी से डाँकर बोली। उसे तगह तगह की आशकाएँ सनान लगीं। ‘इसका ता यही अर्थ होता है कि स्वेन सज्जन नहीं है।’

‘ऐसा नहीं है।’

‘वसा मालूम पड़ता है कि लडका किसी आफत में फस गया है।’ पति ने गम्भीर मुख मुद्रा बनाकर कहना शुरू किया— ‘पहले तो उनक स्वागत के उपलक्ष्य में खुर जलूस निकले, दावतें हुए और तरह तरह की खुशियों मनाई गईं। किन्तु एक दा दिन भी न बीत पाय होंगे कि लोग उत्तरी ध्रुव के यात्रियों के सम्बन्ध में तरह तरह की भद्दी अफवाहें सुनाने लगे

‘अफवाहें!’ स्त्री न दातों तले डैंगली बनाकर कहा— ‘तुम ता कुछ गड़बड़ हुई है।’

‘यहाँ तक कि लोग उनका खुनेआम तिरस्कार और नीच बाजार में उनक झूठे भी छान लिये।’

लोग उनका दर्शन करने के लिये दूटे पढ़ते थे और सड़क पर तिज्र घरने की भी जगह न थी। पर अब दर्शनामिलापा। उनक मुँह पर वूकने को तैयार खड़े थे ।

‘ओफ ! ऐसी बात ता आज तक भी सुनने में न आयी थी ।’ तालिया आश्चर्य के साथ बोली, ‘अच्छा हाता, अगर स्वेत घर पर ही हम लोगों के साथ रहता ।’

‘और यह कोई प्रचमने की बात नहीं है’ जोल अब जोश में आकर कहने लगा ‘असाधारण कामों में ऐसी अनहोनी वाग्दार्ते अस्सर हो ही जाती हैं। बेवार मुखों मर रहे थे। भजे बुर का न ज्ञान था, न पाप पुण्य का ही भान ! तब सहसा पेट की आग से पागल होकर एक यत्नी ने आत्मघात कर लिया। वस, फिर क्या था ! सब लोग गिद्ध की तरह उस पर दूट पड़े और सिर काट कर ।’

‘वै ? उसको खा गये ?’ तालिया चीख सी पठी ।

‘व-हैं सुध-बुध ता थी नहीं ! पागलों की तरह बेभान हों गये थे !’

‘और स्वन भी बन लोगा में शरीक था ? स्वन भी ?’

‘न रहा होगा ता अवरन शामिल कर लिया गया होगा। ऐसे मौकों पर लोग खुब सावधानी रखते हैं ।’

‘आह ! अब समझी कि पादरी महाशय क्यों तशरीफ ला रहे हैं। दूमरी जगह तो उसके लिये ठिकाना रहा ही नहीं, तब हजरत हमार पास आ रहे हैं। और शिकारिश करने के लिये पादरी का है हूदा ।’

हर्ज क्या है ?’ स्त्री उसी स्वर में चिल्ला पठी—‘अब गुल छर उडाना रहा, तब चिह्नी लिखने का और अब ठिकाना न रहा ता हर्ज और अब ठिकाना न रहा ता हर्ज में उसे दरवाजे पर पैर भी न

। क्या हुआ ? ऐसे लड़के को किसी हाजत में घर में स्थान न  
 । उसने वह काम किया है, जिससे सभी लोग नफरत करते हैं ।  
 जोल पत्नी की उत्तेजना देखकर अधीर होने लगा । वह मन-  
 । मन बोला—'यह औरत कितनी बेवकूफ है । कैसी जिद्दी और  
 स्वाल । कितनी बढ़िया बात होगी यदि एक जवान लड़का  
 बुढ़ापे में सहायता देने आ पहुँचे ! पर तालिया अपनी हठ  
 आगे कुछ सोचती ही नहीं ! तैर, अभी उसका दिमाग ठिकाने  
 । रता हूँ ।'

'ठाक है, जो मैंने सोचा था वह गलत नहीं है ।' वह स्त्री की  
 देखकर वाला—'अब पत्र की खबर सुनाने पादगी के  
 । तरह की कठिनाई न होगी !'  
 स्त्री का माथा ठनका जोल की धमकी काम कर गई । अब  
 वह और भी बढ़ी निगाह से देखता हुआ बोला—'कहे, पादगी  
 के आने तक ठहरागी या मैं ही कह दूँ ?'—और उदरदता पा  
 दण्ड देने के इरादे से कहना शुरू किया—'यह तो तुम्हें मालूम ही  
 है कि हमक धर्म के मों वाप लण्डन में रहत हैं, यात्रा के बाद वह  
 वही लौटा भी । दि बु जय उसके समय में वई भदी अफवाहे उदने  
 रागी, ता एक दिन पिता ने उसके पास वह अखबार भेजा, जिसम  
 उसी तरह की एक बेहूदी रापर छपी थी । पर मिर्क अखबार  
 ही नहीं, साथ ही एक भरी हुई पिस्तल भी  
 वें ?' तालिया चीख पठी 'और उस स्त्री ने चू तक भी न  
 क्या ?'

'यह भी पति से सहमत थी ।'

'तब ?'

'तब वही हुआ जो वे लोग चाहते थे ।'

'और वह दामिन दायती टो रही क्या ? वही, जो उसकी मा'



झिठी थी, तालिया तमतमा कर बेज़ी, 'नहीं नहीं, यह असंभव है। तुम झूठे हो।'

'मैं भी एक घण्टे पहले शायद ऐसा ही कहता।' पति ने शांति के साथ कहा, मैं भी पहले यही सोचा करता था कि स्त्री का हृदय इतना कठोर नहीं हो सकता किन्तु अब मुझे सन्देह नहीं है, क्योंकि तुम्हारी बातें इसकी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि ससार में हृदय हीन स्त्री असंभव नहीं है।'

तालिया के गानों पर आँसू की धारा बह चली है। वह मुँह मोड़कर मिस करने लगी, 'स्वेन, तू न रहा, अरे।' वह तेरी माँ थी?। वह पापण हृदय, जिसने तुम्हें मरते देखते हुए एक आसु भी न बहाया।'

वह विनाप करने लगी, 'हे भगवन्! हमने उसे जाने ही क्यों दिया? और उसे मरना डानने का, और उस को क्या अधिकार था जिसको पैदा करनेवाले दूसरे ही लोग थे।'

'चुप रहो तालिया! इसी समय पति ने कहा, 'दोनों पादरी आ गये हैं।'

'कह दो, वापिस लौट जायें। मुझे अब सुनने की आवश्यकता नहीं है।'

'नहीं! नहीं! जब उन्होंने आने का कष्ट उठाया है, तो ऐसा फटना उचित नहीं—कह कर जोल नाव के सामने गया और कुछ ही मिनट बाद पादरी को लेकर वापस लौट आया। साथ में एक टुबला पनला नौजवान भी था।

'जोस कहते हैं कि आप समाचार सुन चुकी हैं, मेनी हुई स्त्री के समीप आकर पादरी ने कहा, 'दुर्भाग्य से स्वेन एक येहूदे भूमंड में फँस गया था, जिसके पत्र स्वरूप धर्म के माता-पिता ने उसे घर से निघाल दिया है।'

तालिशा, जो अञ्जल से मुँह ढोंपे अब भी सिसक रही थी, ममान प्रदर्शित करने के लिय उठ खड़ी हुई, किन्तु उषो ही उसकी छि पादरी के साथ वाले नवयुवक पर पड़ी, वह चौंक उठी। 'है ! यह ता स्वेन है।'—उसके अत करण से एक आवाज आई और क्षणभर बाद ही अनेक विचार बबलडर की तरह उठ कर उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगे। 'तब क्या जौल ने जो समाचार कहा था यह झूठा था ?' वह मन ही मन पूछने लगी और उस समझते दर लगी कि क्यों उसका पति स्वेन की खबर सुनाते समय झूठ बोला था। 'आह, जौल के ढग निराल हैं ! कितनी अजीब राति से मुझे अपनी निर्ममता का दण्ड दिया। किन्तु अब स्वेन का क्या अपने साथ ही रखना पड़ेगा ?' पुत्र के फलक की याद आते ही उसके दिल में खलबली सी मच गयी। ऐसा प्रतीत हुआ, मानों पुत्र के कुक्षम से उसके दिल में जो रज पैदा हुआ था, वह लात्त प्रयत्न करने पर भी न मिट सकेगा। 'ओफ ! कितना बेहदा काम कर लिया। मनुष्य का मौस !'—वह सोचने लगा और उसके मन में विचारों का एक तुमुल सयाम मच गया। किन्तु इसी समय उसकी टाए पुत्र के दुबल चेहर पर जा पड़ी। उसकी आँसों में कितनी बदना अर्पित थी। ऐसा लगता था माना मदमद मुस्कुता हुआ वह सहानुभूति और दया की भिक्षा माँग रहा हो। पुत्र के उस कारुणिक स्वरूप का देखकर तालिशा के ठण्डे विचार न जान कहीं भाग गए और उसके हृदय में यकायक प्रेम का एक डबर उमड़ आया। 'आह, जौल ! आज तुमने मरी आँसों खोल दो हैं।' वह मन ही मन कहने लगी, 'तुमने बतला दिया है, मैं क्या हूँ। मेरी भावनाय क्या हैं। क्योंकि आज मैं अच्छी तरह अनुभव कर रही हूँ कि धरों से त्रिखुंडे हुए पुत्र को मैं प्यार किये बिना

पर ही जा अटकती, जो असह्य पापियों से भरी हुई एक कडाही क नाचे धक्कती भही में ईधन झोंक रहा था। उसकी दुम रस्ता की तरह तीन भागों में गुथी हुई बहुत अनोखी थी, जिसके सिरे से वह कडाही का उलझता हुआ शोरवा हिला रहा था।

बचपन में उस तस्वीर को देखकर स्वन तरह-तरह की कल्पना दौड़ाया करता। कडाही और भही को एक साथ संभालने वाला उस अद्भुत रसोइय का देखकर उसे आश्चर्य और कौतूहल हान लगता था। किन्तु शैशव की वह मधुर कल्पना, आज के रज्जु दा गिचारों से कितनी विभिन्न थी। 'यदि गिर्जे में बैठे हुए श्री पुरुष-जो रजिवार को कायामत की उस डरावनी कडाही और डराव शैतान को देखते हैं—यकायक जान लें कि उपासना-मन्दिर में एक ऐसा व्याक बनक साथ बैठा है, जो मनुष्य का मास भक्षण कर चुका है, तो क्या क्षण भर के लिए भी वे मुझे इस स्थान पर रुड़ा रहन देंगे? ओह! यों तो राज ही नये नये पाप होते हैं, भारी-से भारी अनाचार होता है। चोरी, धोखेमाजी, शराखोरी, खून, अत्याचार और व्यभिचार सभी बातें इन दुनिया के लिए सामान्य हो गई हैं। होंगे कुछ लोग जो उपासना नाम सुनकर नाक भौंहा मिखाडे। पर अधिकांश लोगों के लिए तो इनमें न कुछ असाधारणता है, न कोई गम्भीर महत्व ही है। नित्य ही ये चोरी दिन-दहाडे होती हैं और कोई धान भी नहीं फटफटाता। फिर भी एक महापाप ऐसा है, जिसकी कल्पना मात्र से लोग थर्रां पड़ते हैं; जिसकी तुलना में चोरी से लेकर खून तक सभी अपराध नहीं के बराबर हैं, और मैं वही दुष्कृति बिना हिचकिचाहट के कर चुका हूँ। तब मुझसे अधिक घृणित व्यक्ति कौन होगा? कौन होगा मुझ जैसा शैतान?'

स्वन इसी तरह के विचारों में तल्लीन हो रहा था कि पड़भी

ने गिर्जे में प्रवेश किया। चर्च में बैठे हुए लोगों में जोन और वॉलिया को छोड़कर, स्वेन के वापस आने का अमना कारण यदि कोई जानता था तो वह एज्जम का पादरी था। उसकी सहायता और सहायुभूति से ही स्वेन ग्रीमन में रहने का स्थान पा सका था। उसने ही गत रविवार को माता-पिता से लड़कर अपना नाम का जोरदार अनुग्रह भी किया था। उसने ही स्वेन को अपनी शक्ति भर सहायता भी दी थी। यह सोचकर किजो कुछकुछमं उमन किया था, वह अपनी स्वतन्त्र इच्छा से नहीं, बल्कि दूसरे लोगों द्वारा बलात् लाचार बनाया जाकर किया था। प्रत्येक बात में पादरी ने उसके प्रति दया और चढ़ारता ही प्रदर्शित की थी। वह जानता था कि स्वेन उस बेहूद शिकजे में फँस गया था कि जिसमें मुक्ति न हाने पर सम्भव था कि वह आत्मघात भी कर लेता। यही साचकर पादरी ने उसे भरसक सहायता भी दी थी, हार्दिक सहायुभूति भी दी-पाई थी। और स्वयं ग्रीमन जाकर उससे माता-पिता से शरण देने की सिफारिश भी की थी। यह सब तो ठीक था। किंतु स्वेन को आज चर्च में उपस्थित देखने की उसे च्छरा भी आशा न थी। अतएव ज्योंही गिर्जे की ढालान में क्रम रखा और उसकी दृष्टि उत्तरी भ्रुव की यात्रा से लौट हुए उस नर मांस भक्षी मनुष्य पर पड़ी, उसके शरीर में एक ऐसी सनसनी फैल गई, माना नकरत क मारे उसका गला घुटा जा रहा हो।

‘यदि घर आता तो किसी हाजत में भी मुझे नागवार न होता!’ पादरी अपने मन में कहने लगा—‘बल्कि वहाँ तो उसका स्वागत भी करत मुझे इचकिचाहट न होती, किंतु यहाँ? यहाँ आने के पूर्व क्या उसे मालूम न था कि वह ऐसा घृणित कृत्य कर चुका है, जो सर्वथा कुत्सित, घृणित और अपवित्र है। नर मांस भक्षण क्या यह मामूली बात है? तब उसने इस

पर दूसर ही दिन उसे अपनी बेवकूफी मालूम पड़ी। 'श्रोतु मैं कैसी मूर्खता कर डाली।' वह अपने आपका कोसने लगा— 'कैसा लड़कपन ? कितनी जल्दबानी !! जगन्नी आदमी की तरह निर्ग प्रेरणा के वशीभूत होकर मैं कितना अनुचित कार्य कर डाला ? पर अब क्या हो सकता है। अब तो मामला जितना सुधारा जाय उतना ही बिगड़ने लगगा। बेइतर है कि किसी उचित अवसर की प्रतीक्षा की जाय।'

और तब आश्चर्य से श्रोतु फाड़कर उसने अपने मन में कहा— 'श्रोतु ! इस घृणा की भावना में कितनी जबरदस्त शक्ति है कि मुझ-जैसी व्यक्ति को भी उसने चुटकी में पराजित कर दिया। और वह भी उस समय जब उपासनालय जैसे पवित्र स्थान में एक धर्मोपदेशक और आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक की हैसियत से मैं प्रार्थना के लिये आए हुए नर-नारियों को आदेश दे रहा था।

उधोही प्रार्थना समाप्त हुई और पादरी मञ्च से उतरा, भीमन से आए हुए वे तीनों प्राणी भी उठे और नीचा सिर किए हुए गिरजे से बाहर निकले। किन्तु बाहर आते ही उनके पैर न जाने क्यों रुक गए। हक्क-बक्क होकर वे चारों ओर देखने लगे।

गिर्जाघर के आस-पास एक खुला हुआ समतल मैदान था। देश के उस पहाड़ी प्रांत में यह एक अनहानी बात थी। जवा चौड़ा तो न था, फिर भी था बहुत गु जाइशदार। यद्यपि एक सिरे से दूसरे सिरे की चीजें स्पष्ट दिखलाई पड़ती थीं, तथापि उस मैदान में गिर्जाघर और दस बीस झोपड़ियों व खेतों के उपयुक्त पर्याप्त स्थान था। चारों ओर भूरी पहाड़ियों की एक लंबी दीवार थी, जो इतनी ऊँची तो न थी कि उत्तर की धर्मीली हवा का राक सक, पर उस पार की सभी वस्तुओं से इस छोटे से गोंड का छिपा रखने के लिये पर्याप्त थी। सारा मैदान छपि के उपयुक्त छोटे-छोटे

खेतों में विभाजित था, जो नाप-तौज में एक दूसरे के समान थे। और ऐसे ही किसानों के कुछ नीले-पोले मकानात भी थे, जिनमें न बड़ी-बड़ी आलीशान इमारतें नजर आनी थीं, जो दूसरे मकानात को दबा दें, न अत्यंत टूटी झोपड़ियाँ ही। सब समान और एक-से थे। न ऊँच नीच का भाव था, न छोटे-बड़े का ही भेद।

यही हाज बर्दों की हरियाली का भी था। न उसें खूब हरा भरा स्थान ही कह सकते थे, क्योंकि पहाड़ियों, मैदानों और सबको पर घृतों का अभाव था और न बिलकुल ऊँच ही उसे कह सकते थे क्योंकि खेतों में गेहूँ और मटर का एक समुद्र सा लहराता था।

इसी विचित्र मैदान के बीचोबीच वह गिर्जाघर था, जहाँ से श्रीमन के वे तीनों प्राणी इस तरह नीचा सिर किए हुए निकले हैं मानों धक्के देकर वे निकाल दिए गए हों।

गिर्जाघर की पुरानी ढग की इमारत इतनी भद्दी तो न थी कि विनकुल ही बदसूरत बड़ फही जा सके, क्योंकि उसकी छत पर एक मीनार थी, जिसका देखकर हृदय ईश्वरामिमुख होने लगता था। किंतु उसे अधिक सुन्दर भी नहीं कह सकते थे, क्योंकि उसका नीचे वाला हिस्सा इतना घुँगला और मुका हुआ था कि देखकर मन में एक उदासीनता ही छाने लगती थी।

ज्योंही वे तीनों चर्च के बाहर निकले, उनकी दृष्टि गिर्जाघर के हाते में इधर-उधर घूमती हुई एक चितकवरी विही पर जा पड़ी वह कोई बदसूरत जानवर तो न थी, क्योंकि उसके बाज जैसे नरम थे और चाँद भी अत्यंत मद् और मधुर थी। फिर ज्यों ज्यों उसकी ओर देखने लगे, उसकी नरम चमड़ी के विभिन्न अंगों के हिलने डुलने में एक ऐसा भाव नजर आने जिसमें धूर्तता और शैतानी छिपी हुई थी। सिर्फ

थी। तालिया अब बार-बार उस गाव की सकर करने और खियों से बातें करते समय स्वेन को निर्दोष साबित करने काफ़ी प्रयत्न भी करने लगी। यह स्वेन की प्रशंसा के पुनः बांध रेशा और उसके सरल निष्कपट स्वभाव का रजा भी खीब देती, कि कुछ दिनों के बाद ही उसे अपना प्रयत्न निष्कपट प्रतीत होन जा। तालिया कुछ दुःख-भला तो न कहनी, किन्तु तरह तरह के बहाने बनाकर स्वेन से संबंध रखनेवाली बातें अनसुनी कर देती थी।

'ओह ! ये स्त्रियाँ इस नश्वर पृथ्वी के उपयुक्त नहीं, प्रत्युत देवप्रोक मे रहने योग्य हैं।' तालिया वहाँ से वापस लौटते समय ग्लानियुक्त व्यग के साथ कहती—'धार्मिकता और सचाई से ये इतनी लजालन भरी हैं कि इनके दिल में अब दया की एक भी बूँद ममाने का स्थान तक नहीं बच पाया है।'

उधर यही हाल जील का भी था। जब कभी कोई व्यक्ति उसके पास आता, वह कहता—'भाई ! मैं तो इतना थक गया हूँ कि कुछ भी काम नहीं कर सकता। चाहता हूँ कि शीन ही स्वेन मेरे कंधों का भर उठा ले.....'

किन्तु लोग इस बात पर फ़ान भी न देते, किमान या दोष, जा कोई भी आते, स्वेन की बात खिड़ जाने पर वैसे ही यदरे घन जाते जैसे नेपफोर्ड की 'कट्टर धार्मिक' स्त्रियाँ तालिया की बात सुनकर घन जाया करती थी।

एक दिन त्रिसमस की शाम को माता, पिता और पुत्र कुटिया में बैठे भविष्य के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहे थे। उसी समय स्वेन—जो आज हमेशा से भी ज्यादा प्रसन्न मालूम हो रहा था, बोल उठा—'अम्मा, यह भोपड़ा तो बहुत सफ़ा है। अगर इसे छोड़ कर बड़े मकान में रहने लगे, तुम्हारी क्या राय है

ते क्या हो ? उसमें न छत है न 'फर्श' ही ।' तालिया त होकर बोली ।

'ठीक है' लड़के ने कहा—'पर अभी इतना घुग तो नहीं या कि कागिल मरम्मत भी न हो । मैंने उसकी दीवारें देखी की मजबूत हैं । कमरे भी खूब जम्मे-चौड़े हैं और प्रकाश भी है । और सबसे बढ़िया बात तो यह है कि उसका रुख समुद्र ओर है । शर्म की बात होगी, अगर हमार रहते घूटे कप्तानों का मिट्टी में मिल जाय ।'

इक की बात माता-पिता के गले उतर गई । वे मकान लेने को राजी भी हो गए । पर अब सवाल पैसे का उठा ।

न ने इसका भी एक सीधा नुस्खा पेश किया । बोला—'पास कुछ रुपया जमा है । सौतेले माँ बाप का नहीं, वरन् की गादी कमाई का है । भ्रम यात्रा के लिये एक हजार मिले थे । उससे आप '

'उससे !' जोल यकायक चिल्ला उठा—'कदापि नहीं । मकान वाने के लिये इन्कार नहीं है, पर उस पैसे से कदापि नहीं ।' रुपये का नाम सुनते ही उसे ऐसा प्रतीत हुआ, मानों घ प्रदर्शित करने के लिये वहा के पुराने निवासी कध में रहे हैं ।

माता और पुत्र भौचक्के होकर जोल का मुह ताकने लगे । क्षण भर बाद ही घे उसके दिल का भाव भाप गए । अतएव शब्द भी न कहकर चुप्पी साधे बैठे रहे ।

'ओह ! किन्ने भोले-भाजे, पाक-दिज आदमी के कप्तान ' जोल उन प्राचीन निवासियों की याद करने लगा—'बन्हे न बत-सगत की चाह थी, न बोजचाल की ही परवा । घ समुद्र पर ना बहाकर दो रोटि कमा लेते थे और उसी से सन्तुष्ट होकर



बचे बचाए होश भी उड़ गए । दो मिनट याद का नञ्जारा उसकी आखों के पर्दे पर नाचने लगा । 'वे खिलाने के लिये जबरदस्ती करेंगे और मैं इन्कार करूंगा । क्या ऐसा घृणित कर्म स्वप्न में भी कर सकता हूँ । नहीं । नहीं !! संसार की काई भी शक्ति मुझे ऐसे वीभत्स कार्य के लिये बलात् बाध्य नहीं कर सकती । तब एक साय ही जात-घूमों की बौछार के साथ वे मुझपर दूट पड़ेंगे और सम्भव है, प्राण लेकर ही पिँड छोड़ें ' ' ' ज्यों-ज्यों वह सोचने लगा, धमका साहम भी दूटता गया ।

किन्तु अभी हाथा पाई शुरू होने में कुछ देर थी ! जिसकी प्रातः काल के समय वह मरा हुआ साँप मिला था, उस शरुस ने अब जेब में हाथ डालकर उस चिकनी लोथ को बाहर खींचना आरम्भ किया । अब पूरा साँप निकल आया, तो उसे इधर-उधर सुजाता हुआ तालिया की आखों के समीप ले गया और शरारत भरी मञ्जाक करता हुआ बोला—'कहो, है न स्वेन के लिये बढिया पकवान ?'

'अर ! तुम अपने को इन्सान समझते हो ?' लो क्रोध से लाल होकर नोल उठी—'तुम किस गुमान में हो ? क्या मैं इतनी मूर्ख हूँ कि तुम-जैस गुण्डों के साथ, स्वेन को जो तुम सब लोगों से हजार गुना ज्यादा कीमती है, भेज दूँगी ?'

गुण्डे जोर से खिञ्जखिलाकर हस पड़े ।

'तालिया ! डरो मत' वही शरुस पुन धाञ्जा, 'उसे ज्यादा दूर न जाना होगा । सिर्फ किनार तक चञ्जने की तो बात ही है । वहीं डम जाग आग सुलगाकर उसके लिये मनमाना पकवान पका देंगे ।'

माता ने अपने पुत्र की ओर मुड़कर एक निगाह डाली । देखा वह किवनी उदासीन मुसकान मुस्कराता हुआ बैठा है । चेहरे

पर न हो रोप के ही विन्द हैं, और न विरोध प्रदर्शित करने की चतनना ही। मानो जसा करता हुआ वह सब कुछ सहन करने के लिये तैयार है।

'स्वेन !' माँ ने विद्या कर कहा—'यों चुपचाप बैठकर क्या सोच रहे हो ? इनके साथ जाने का तो तुम्हारा विचार नहीं है न ? जानते हो ये लोग कौन हैं ? यह देखो—जो सबसे आगे गड़ा है—'उसका नाम ओलास है। यह वही आदमी है जिसने पैदा होते अपने बच्चे को मार डाला और जन्म की उस समय भी हिकागत न की, जब वह लाचार और लगभग बेहोश थी।'

गुणदे पुनः विलविलाकर हस दिए।

'चिन्ता न करो !' ओलास बोला, 'स्वेन भी हिकागत में हम कुछ भी कसर न रखेंगे। नमक-मिच डालकर उसकी चीज काफ़ी स्वादिष्ट बना देंगे। और फिर जो-कुछ वह खा चुका है, उसकी तुलना मे सोंप है ही किस गिनती में ?'

'वह देखो' तालिया एक सबसे ऊँचे और खूँखार व्यक्ति की ओर इशारा करती हुई बोली, 'वही कोरफीजन है, जिसने याप के सिवा जिनदगी में दूसरा काम ही न किया। वही वह व्यक्ति है जिसने बीमा के रूपों के लोभ में जानपरो और चौपायों से भर हुए मवेशीखाने में आग लगा दी थी।'

'वह योही बढ़बढ़ करती है। तुम उसकी बातों पर ध्यान मत दो बेटे ! हमारे साथ आओ।' कोरफीजन ने स्वेन के कंधे पर हाथ धरकर कहा।

पर तालिया यिना रुके कहती ही रही, 'वह देखो यही, बर्तिल है जिसने अपनी दादी को भूखों मार डाला, और यह टासन है जिसने आज तक ऐसी एक मछली नहीं बेची, जिसे उसने दूसरा ही जाल से चुराई न हो और फोने में जड़लड़ते हुए जो दो

पकड़ कर उठा लिया और देखते ही देखते कुटिया के बाहर दूँ मारा ।

उसी समय सरदार की मदद के लिये फोरफीजोन सामन लपका । किंतु दूसरे ही क्षण उसकी भी कमर में दो मजबूत हाथ जकड़ दिए और थोड़ास की तरह वह भी ऊँची टोंगे किए मकान के बाहर धड़ाम से जा गिरा ।

अब अंगजोल भी भाई की मदद के लिए बढ़ा । कुछ देर की गुत्थम गुत्थ्या के बाद सब रफूचककर हुए और मैदान साफ हो गया । अंगजाल ने फौरन ही दरवाजे की धुराही चढ़ा दी । तब अदन के साथ हाथ बढ़ाकर भाई के समीप आया । 'कैसे तुमने उन सबको दे मारा ?' वह प्रशंसा के स्वर में बोला—'वह दौब तो मुझे भी सिखाना होगा ।'

बड़े भाई का चेहरा जड़ार्ह की उत्तेजना से जाल हो रहा था । अब चेहरे पर न वह रज्जिदा मुसकान थी, और न वह उदासीन विरक्ति ही ।

'खून छकाया सालों को !' अंगजोल बोला, 'ऐसा सबक मिल गया है कि भविष्य में पास फटकने की भी उनकी हिम्मत न होगा । पर भैया ! जब तुम उन सबको पछाड़ने के लिये अकेले ही काफ़ी थे, तो इतनी देर चुपचाप सहन क्यों करते रहे ?'

स्वेन का गजा रुँध गया कुर्सी पर लुढ़क कर वह हाथों में मुँह टापकर सिसकने लगा । यह पहला ही अवसर था, जब उसके दिज का बाघ फूट चला हो ।

आह ! अंगजाल वह लाकत और क्यूत किस काम की ?' वह राता हुआ चिल्ला उठा—'किस तरह मैं अपने आपको, बचा सकता हूँ जब स्वत ही अपने आप से इतनी नफ़रत करता हूँ, जितनी वे सब भी मिलकर नहीं करत होंगे ? ओफ ! कितना

मेरा स्वरूप भयङ्कर है ! कितना बीभत्स है ! तुम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते । केवल मैं ही जानता हूँ, मैंने कितना भीषण दुष्कृत्य किया है । ओह ! जब मेरे मस्तिष्क पटल पर वह वस्तु आठों पहर अद्विप्त रहती है—वह जो सबसे अधिक घृणित और बीभत्स है, तो कुछ शराबियों के मुह बन्द कर देने से मुझे कैसे सात्वना मित्र सकती है ?

‘मुझे तो उसका कुछ भी समाचार नहीं मिला।’ अंगजोख बोला, ‘हाँ, लोगों की गपशप कह सुनाता हूँ। कहते हैं कि पहले तो नेद पर केवल छ ही आदमी थे, जिनमें एक ने अपना ब्रह्म मार डाला था, दूसरे ने दादी को स्वर्ग पहुँचा दिया था, तीसरा डोरों से भग घर जन्ना चुका था, चौथा मछली चुराकर बेचता था और शेष दो शराब पीकर मृत्यु को न्यौता दे रहे थे, पर अब उन्हें सातवा साथी और भी मिल गया है, जो मनुष्य का भास भक्षण कर चुका है। अतएव खून मजेदार समाज जुटा होगा।’

‘वेमा कहनेवाले गधे हैं।’ तालिया ने सुँह धनाकर कहा। पर पुत्र का कुशल-समाचार पाकर वह मन में प्रसन्न थी। अतएव जब अंगजोख जाने लगा तो, वह बोली—‘ज्योंही उसकी खबर उसे मिले—फौरन ही आकर सुना जाना। भूलना मत, यही तुम्हारे लिए माता पिता की सेवा है।’

पंद्रह दिन बाद लडका फिर टापू पर आ धमका।

‘पर अब लोग कहते हैं कि स्वेन ज्यादा दिन उन लोगों के साथ नहीं टिक सकता।’ वह कहने लगा, ‘क्योंकि उसने काम ऐसे कर डाले है जो उन लोगों को स्वप्न में भी सहन नहीं हो सकते। सुना है कि स्वेन की देखरेख से नेद—जो पहले सब से भद्दी किरती मानी जाती थी, अब ऐसी सुगर गई है कि न उसका इजिन ही बिगड़ता है, न सँडा ही फटा नजर आता है। सब फटे पाल सो दिए गए हैं। नाव नये रंग से पोत दी गई है। खाना भी बढ़िया मिलता है और धरतन भी पहले से बहुत साफ रहते हैं। और यही कारण है कि उनके साथ स्वेन की नहीं पट सकती। क्योंकि नेद के लोग किसी बदमाश को अपने साथ रखना चाहे पसंद कर भी लें, पर धरतन साफ रखना और पाल-पतवार रगना पोतना तो वे स्वप्न में भी सहन न करेंगे।’

'आह ! लड़का मेरी खिल्ली उड़ा रहा है।' माने मन में था। पर स्वेन के लिये वह पहले से भी ज्यादा प्रसन्न हुई।

ग्रीमन क निवासियो को खबरें जल्दी-जल्दी नहीं मिल सकती। अतएव लड़का पुन दो सप्ताह बाद आया।

'सचमुच ही स्वेन उनके साथ ज्यादा दिन अन्न नहीं निभ सकता।

वसी तरह कहने लगा, 'क्योंकि दिनोंदिन वह 'नेद' क रंग बदलता ही जा रहा है। और सभी प्रकार के काम भी ज्यादा से होने लगा है। सब जाजें सुभर गई हैं। इसलिए मछलियो टेर जाग जाते हैं। पर यही तो कारणा है, क्यो वो लोग स्वेन से हैं, क्योकि ओलास और कारफोजान, वर्तिल और वार्सन चाहे किसी नर मासों भक्तों के साथ रहना स्वीकार भी कर ल, पर पुर्तों से काम करना और खूब पैसा पैदा करना तो उन लोगों को कभी स्वीकार ही नहीं हो सकता।'

साभिया उसकी बेसिर पैर की बातें सुनकर चिढ़ गयी। पर नाराज न हुई। उसे विश्वास होने लगा कि स्वेन की उन लोगों से खूब पट रही है। अतएव वह मन ही-मन प्रसन्न थी।

'ओह, जोल सचमुच ही सबसे बुद्धिमान आदमी है। वह जानता था कि लड़का काफी सफल होगा। तभी उसे मेजने का इतना अनुरोध किया।' वह बोली।

पांच-सात दिन बाद अगजोज पुन एक नवीन समाचार लेकर आ पहुँचा।

'स्वेन को तो मैं नहीं देख सका' वह बोला, 'क्योंकि क्विंटियो आजकल उत्तर की ओर गई हैं। पर लोगों की अफवाह फइ सुनाता हूँ। लोग कहते हैं कि जब ओलास मकान बनवा रहा है, तो नेद क मछाहों में जरूर कुछ गढ़बड हुई है। जरूर कुछ दास में काजा है। उन लोगों ने एक मनुष्य मांस भन्ती को अपना

पत्नी चौंज पड़ी। 'ता शायद तुम ठेका लेने का निश्चय ही कर चुके हो। पर अपने बज्र पर उसे निभा भी लगे ?'

बूढ़ा कुछ अचकचा गया। बोला—'घर में जवान लड़क तो है !'

'अजीब आदमी है !' ताजिया पति की धूरदर्शिता देखकर बोली, 'उसमे पहले पूछना तो चाहिए था ?'

मां को भरोसा न था कि जड़का बाप के काम में सहायता देगा। क्योंकि स्वैन कुछ दिनों से बहुत उदासीन नजर आता था।

मैं तो नहीं समझता कि स्वैन इस काम से हिचकेगा' बूढ़ा बोला, 'प्रत्येक आदमी को इसारती काम से जानकार रखना चाहिए, क्योंकि सत्रको मकान में रहना ही पडता है।'

पर स्त्री के गले एक भी बात न चतरी। वह समझ न सकी कि स्वैन उस मकान का काम कैसे कर सकेगा, जिसका संबंध एप्लम के गिर्जे से है, जहाँ का लोकमत सर्वथा विरुद्ध है।

जब माता पिता स्कूल की चर्चा में उलझ रहे थे, स्वैन भी उपस्थित था। पहले तो उसने कुछ भी न कहा, पर जब पिता को निराश होते देखा, वह यकायक बोल उठा, 'सैर, जब ठेका लेना आप मजूर कर ही चुके हैं तो अब छोड़ना नहीं चाहिए। मैं शक्ति भर आपको मदद दूँगा।'

घात यह थी कि स्वैन अपने पिता का आंतरिक रहस्य जानता था। उसे मालूम था कि जोज उसे किसी भी साधन से समाज में प्रवेश कराना चाहता है। अतएव सीमन में एकान्त वास करने की प्रबल इच्छा होने पर भी, वह पिता को राजी करने के लिये स्कूल में योग देने को तैयार हो गया।

स्त्रीकृति पाकर जोल बहुत प्रसन्न हुआ और उसी दिन बर्दई,

मजदूर आदि से मिळाने के लिये पुत्र को अपने साथ गया।

अनिच्छा रहने पर भी स्वेन कुछ ही दिनों में उस काम में टोन लगा। पिता ने भी धीर-धीरे सारा काम पुत्र को सौंप दिया। अब वही काम की निगरानी रख सकता था इच्छानुसार रद्दोबदल भी कर सकता था। लडका अब चाया भी फिजूल बर्बाद करना नहीं चाहता था। अतएव श्रीमन आना भी छोड़ दिया। वह उसी स्थान पर रात-दिन रहता था, जहाँ इमारत का काम चल रहा था। जोल भी

भार पुत्र के कर्षों पर रख चुका था। अतएव वह श्रीमन में ही रहने लगा। सिर्फ कभी-कभी चक्कर घूमा जाता था। और जब कभी लौटता, पत्नी का वहाँ फ सुनाता रहता था। स्त्री पुत्र के लिये चिंतित होकर हमेशा करती थी कि श्रीमन क लोग स्वेन से असंतुष्ट तो नहीं हैं। जोल उसे हर बार विश्वास दिलाया करता था।

'कज मुझे इसराइल जानसन मिले थे', एक दिन उसने पत्नी फदा, 'वही स्थानीय काउन्सिल के समापति हैं। मैंने स्कूल इमारत के बारे में उनकी राय पूछी ता ये बोले—'जो ज तो हम लोग तुम्हारे लडके को यह काम सौंपते दिचकिचा थे। पर अब ता स्कूल और गाव की काउन्सिलें ऐसा सोचने पडले दो बार विचार करेंगी। क्योंकि जब हम देखते हैं कि मामूली पत्थर की जगह चन्दा पत्थर और पतले पटियों के कामकी लकड़ी काम में ला रहा है तो हमें यही कहना पडता है कि जो उससे विद्वेष रखते हैं, वे गलती कर रहे हैं।'

गालिया अब समझ गई कि जोल ने केवल इसीलिये ठेका था, ताकि स्वेन अपनी योग्यता प्रदर्शित करने का मौका



एक दिन स्कून की इमारत के निये खरीदे हुए सामान का  
 हिमाच चुकाने स्वेन यनवरी गया था। लौटती बार वह रेल से  
 आया और एप्लम के पासवाले स्टेशन पर उतरा। किन्तु प्लेट  
 कार्म से बाहर आने पर जब उसे वह घोडागाड़ी—जो उसके  
 लिये आनेवाली थी—न मिली तो स्वेन एक प्रजीव  
 में पड़ गया। गाँव करीब दस मील दूर था। पैदल  
 न था। वह निश्चय नहीं कर सका कि वह इस  
 इसी समय एक छोटी-सी बरघी खडखडाते  
 स्टेशन के सामने ठहर गई। स्वयं उमकी  
 । हुआ तापका। पर दरियापत करने

उके लिये नहीं पर एणम के नव विवाहित पादरी के लिये आई । उतर के किसी पुरोहित की लड़की से अभी हाल में ही उसने ली थी और इसी गाड़ी से नम्रधू के साथ वह वापस आया था ।

स्वेन निराश हो गया । बग्गी के लिये उसने पहले ही सूचना दी थी । पर अब पता चला कि वह सदेशा एणम तक पहुँचा ही नहीं था । अब क्या किया जाय ?

‘बग्गी का कोचबक्स खाली है । आप पादरी से कहियेगा । हाँ बैठकर आप मजे से एणम तक चल सकेंगे ।’ गाड़ीवान राय दी ।

पर स्वेन क गने वह नहीं उतरी । जबरदस्ती किमी क सिर मटता वह नहीं चाहता था ।

इसी समय स्टेशन के फाटक से पादरी अपनी नई पत्नी के साथ निकला । दोनों की जोड़ी खुद फरती थी । पादरी लगभग तीस साल का एक हृष्ट पुष्ट नौजवान था । उसका ललाट चौड़ा, चेहरा तेजस्वी और मस्तक विशाल था । दाढ़ी घुघराली और दाँत मोती जैसे स्वच्छ थे । उसमें वे सभी बातें मौजूद थीं, जो नम्रधू को अपने पति में देखना चाहनी है । स्त्री को जीवन की आपदाओं से बचाकर, उसे सुख और सम्मान देने के लिये वह सर्वथा उपयुक्त और समर्थ था ।

नम्रधू भी कोई माधारण सुन्दरी न थी । उसे देखकर अंग्रेज चित्रकारों की आदर्श रचनाएँ बाद आने लगती थीं, जिसमें ऐसा ही रूप अधिकतर चित्रित किया जाता है । लम्बा कूट, पनना बदन, डालू कपड़े, झुकी हुई गरदन, सुनहले बाल, गुनगुना गाय “ ” और स्वर्गीय ज्वालि से जगमगाते हुए विशाल नेत्र, जो अनित्य संसार से हटकर सर्वदा किसी अदृष्ट स्वर्ग लोक

की ओर ताका करते हैं। यह युवती उसी रूप की साकार प्रतिमा थी।

स्वन उस अप्रतिम सौंदर्य को देखकर विमुग्ध ना हुआ, किन्तु स्त्री की तुलना में उस पति बहुत भद्दा, निरुष्ट, और लंगमग कुत्स ही प्रतीत होने लगा। ज्यों ज्यों स्वन स्त्री के नाजुक बदन के साथ पादरी के भारी शरीर की तुलना करता, उस ऐमा मालूम पड़ता मानो वह व्यक्ति उस अनुपम सुन्दरी के सर्वथा अयोग्य है। कह नहीं सकते, स्वन के मन में पादरी के प्रति इत दुर्भावना का कारण क्या था। संभव है, उस दिन चर्च में किए गए अपमान को दाद कर वह पादरी को निरुष्ट कह रहा हो। पर स्वन को तो यही विश्वास था कि वह किसी भी दुर्भावना से प्रभावित नहीं है।

ज्योंही वह दोनों गाड़ी के समीप आए, स्वन और न ही वहाँ से खिसक गया। किन्तु कुछ ही क्षण बाद उसने पादरी को अपनी ओर आते देखा। गाड़ीवान ने स्वन को ले चलने के लिये अपनी ओर से पृष्ठ किया। समीप आकर पादरी ने गाड़ी में बैठने का अनुरोध किया। बात यह थी कि उसके मन में इस अभागे नवयुवक के लिये हमेशा सहानुभूति का भाव रहा करता था। 'ओह! क्याज कितना गलत था ?'

आग की सीट पर बैठते हुए स्वन ने अपने मन में कहा— 'हमेशा मैं अल्दबाजी में लोगों को समझने में गलती करता हूँ। पादरी वास्तव में कैसे अच्छे हैं! कितने सजा हैं! और तब क्षण भर पहले के विचार के लिये वह अपने आपकी ओर लगे और मन-ही-मन उन लोगों की प्रशंसा भी करने लगा, 'वहीं से ऐसी सुन्य और समान जोड़ी सैने नहीं देखी थी। बाघों में साथ-साथ बैठे हुए दोनों कितने अच्छे मालूम पड़ते हैं ? दोनों इस समय नवीन सुन्य के स्वप्नों को देखने में

हो रहे हैं ! अब हमारे एटम-जैसे घर में गृहिणी के प्रवेश से कितना सजाला हो जायगा ! पादरी एक घड़ी के लिये भी वहाँ से दूर रुकना न चाहेंगे ?

इन विचारों में स्वेन इतना निमग्न हो गया कि वह चौंक पड़ा, जब यकायक नवध्यू की थकी हुई आवाज सुनाई दी, 'ओह ! कभी इनका अंत भा हागा ?'

'अन्त !' स्वेन चौंककर अपने मन में दोहरा गया, ऐसी कौन सी वस्तु है जो इसको नकभीकद रही है ? और वह भी रास आज्ञा जघ कि वह पहले गदल पति के घर आ रही है ?

वह आँखें झोड़ाकर चारों आर देखने लगा और वैसे मम भूते देग न लगी कि खो मिस वस्तु से ऊब उठी थी, 'आह ! इन फाली-फाली चट्टानों को देखकर वह घबरा उठी है ।' स्वेन ने अपने मन में कहा ।

सचमुच ही वह एक अनोख प्रदेश था, जहाँ गाड़ी इस समय दौड़ रही थी । न उसे पड़ाई प्रदेश ही कह सकते थे— क्योंकि वहाँ ऊँची चोटियों या पर्वत शिखरों का नामानिर्गमन भी न था—न वह मैदान ही कहा जा सकता था, क्योंकि जगह-जगह चट्टान और टीले नजर आ रहे थे और वे भी कहीं इतने संकर थे कि गाड़ी के लिये गस्ता ही नहीं बनता था और कहीं इतने दूर दूर कि गाँव घमने के क्राशिल बड़े बड़े मैदान नजर आने लगते थे दाहिने और बाए, आगे और पीछे चारों ओर खज्ज चट्टान ही चट्टान थी । न उनका आरम नजर आना था, न अन्त ही । स्वाभाविक ही था कि उनको देखकर किसी अजनबी का दिम ऊब उठे । सडक भी उन चट्टानों के बीच इतनी घूमता फिरती हुई जा रही थी कि पना ही नहीं था कि आगे कैसा प्रदेश आनेवाला है । रास्ते भर उन्हें ऊपर टिला-खण्ड ही

सामने मिलते थे। उनके सिवा न हरे-भरे वृक्ष थे, न छोटे-बड़े पौधे ही। अप्रिकाश चट्टानें नगी ही थीं और कुछ ढकी भी थीं, तो इतनी छिटवुट घास से कि कभी-कभी एक ही नजर आती थी। उनका देखकर मन घबराता लगता था और जब कभी थोड़ा खुला मैदान दीखने लगता तो साक प्रदेश पाने की उम्मीद से दिल उछलन लगता था। किन्तु क्षण भर बाद ही पुनः एक ही चट्टान सड़क के सामने आ खड़ी होती थी।

'सचमुच ही यह टोल बहुत बेहूदे और दिन में घबराहट पैदा करनेवाला है। अफसोस है कि इस युवती को अपने समुदाय आत समय पहले-पहले इन्हीं भद्दी चट्टानों के दर्शन हुए हैं। मैं समझता हूँ उसका भात में ऐसा खराब दृश्य न हाग। स्वप्न न साचा और दुमर ही क्षण उस पुनः आवाज सुनाई दी। 'आफ! इन बाढ़-पहाड़िया में तो सपने काड़-खड से भी ज्यादा सुनमान लगता है!'

इसी समय एक जगह ऐसी आई जहाँ कुछ गाए और कुछ भट चर रही थीं। समाप हा कुछ बच्चे भी वहाँ चुन-चुन का खा रहे थे। उन्हें देखकर युवती अपने पति की आंग मुड़ के घाला, 'बच्चा कम से कम दा-चार बच्चे और जानवर ता नच आप। वरना मैं तो यहाँ साच रहा थी, कि हमजोग किसो जगह देश मे से गुजर रहे हैं, जहाँ रभ्यता का नामानिशात भ गहाँ है।'

यह क्या कहती हो सिधन !' उसका पति बोल उठे 'जानती हा, यह मगी मातृमूर्ति है ? यहाँ का एक-एक ककड़ और तिनका मुझे प्राण से भा अधिक प्यारा है। अगर तुम्हारा प्रान्त के बार में एस ही अपशब्द बहें तो तुम्हें कितना दुःख लगगा ?'

जैसा कि स्वाभाविक था, उसका उसका शब्द से कप गई।

बहुत देर तक वह कुछ भी नहीं कह सकी और अन्त में जब बोली तो इतने रुधे कंठ से कि स्वेन समझ गया, वह अपने शब्दों के लिये पति से क्षमा माँग रही है।

'वस्तुतः और दिन में ऐसी अनगनी नहीं रहती थी। कह नहीं सकती आज मुझे क्या हा गया है।'

उसका प्रत्येक शब्द इतना प्याग जगता था, प्रत्येक शब्द इतनी गभीर थी कि स्वन मन में सोचे बिना न रह सका। 'मगवान कर, यह इसी तरह बोलती रहे। इसके मुख से कुरूप वस्तुओं की तिन्दा सुनने में भी एक आनन्द ही है।'

कुछ देर तक चुप रहकर वह पुन कहने लगी। इस बार उसके स्वर में एक त्रिचित्र कण्ठ था—'एहरेहरे! मैं जानती हूँ ऐसी बातों से तुम्हें आघात पहुँचाकर मैं भारी अपराध कर रही हूँ। पर क्या करूँ, मैं इतनी भयभीत हो गई हूँ कि लाख प्रयत्न करने पर भी उस भावना का नहीं दवा सकता। इमोजिये तुमसे सहायता पान के लिये बहती हूँ। क्योंकि मुझ विरहास है कि जीवन युद्ध में कमजोर होने पर मैं अब तुम्हारा सहाय पा सकूँगी।' उसकी बायाँ मेहनती गभीर अभ्यर्थना थी कि चोरी से उसके उद्गार सुनने के लिये स्वेन को एक तरह का सन्तोष होने लगा।

'ऐसा याद आता है' वह पति से अपने मन की घबराहट प्रकट कर रही थी, 'मानो इन चट्टानों को मैं पहले भा कभी दूर चुकी हूँ। मानो कोई व्यक्त मेरा पीछा कर रहा था और मैं प्राण बचाने के लिये उन पहाड़ियों की भुलभुलैय में भाग रही थी। ओह! वही भय आज भी मेरा गला दबाए बैठा है। मानो अब भी कोई हाक लगाए समोप बैठा है और जाय भर याद ही भयकरता के साथ मुझ पर दूर पड़ेगा। यदि मेरे मन में कोई इच्छा

कहते-कहते पादरी रुक गया। किंतु स्त्री चरसुक होकर बोली—‘तब ?’

‘तब ! नम कुछ नहीं। उस दृश्य को देखकर मेरे हृदय में इतनी चुलचुनाइट पैदा हुई कि तत्काल ही आँखें खुल गईं। पादरी इतना रुहकर चुप हो गया। किंतु स्त्री के दृश्य में उस रहस्यपूर्ण फिस्से से इतनी खलषजी मचने लगी थी कि वह अपने मन के आवेश का गुरु न मकी।

‘तो आपका यही मतलब है न, कि यदि मेरे दिल में भी वतनी ही गर्मी उत्पन्न हो जाय तो ये सुनो चट्टन भी सुन्दर प्रतीत होने लगें ?’ वह गद्-गद् कठ से बोली—‘बबगदर नहीं। अब मेरा भय भाग गया है। मैं भी अब वैसा ही अनुभव कर रही हूँ जैसे आपका उस र प्र में हुआ था। आपको प्यार देश और घर के देखकर मेरे दिल का आनन्द उमड़ रहा है।’

‘दया न ! स्वेन अब मन-ही मन कहने लगा, ‘पड़ने-पड़ने देखकर किम्बा बात का भला युग कदन में अक्सर फितना भाग्योखा हो जाता है। इस पादरी से अच्छा और कहीं मिन सफर था ? उसका हृय तो विशाल है ही। साथ ही मस्तिकर असाधारण है। वगना कौन उस युवती को इतना अच्छी से उत्तर दे सकता था ?’

( ७ )

**न**व दपती मंगलवार को आए थे। जगले शनीचर को स्कूल-सभवा कुछ जरूरी कागजात लेकर स्वने पादरी क मकान पर पहुँचा। उस आशा थी कि व घर पर ही मिलेंगे। इसलिये द जान में हाकर वह सीधा आफिस में जा धमका। पर पादरी नदारत। सोचा कही आस-पास ही गए होंग, कशकि दो चार बच्चों और कित्तारों मेज पर खुली पड़ी थी। कलम भी दावात में ऊचा टाँग किए खड़ी थी। स्वने की यह आदन न थी कि हर कमरे मे मँकता फिरे और पूछे, 'साहब घर पर है ?' अतएव कुछ देर के लिये वह दफ्तर मे हो ठहर गया।



पर इसी समय पास के कमरे में कुछ फुस-फुस सुनाई दी। दरवाजा करीब करीब अर्ध-खुला ही था, अतएव साफ-साफ सुनाई पड़ा।

‘सियन !’ वह पादरी का ही स्वर था, ‘ढाक आ पहुँची होगी। पर आज जाने से लाचार हूँ। सम्भव है, कोई मिलन-जुलने आ जाय।’

‘तो चिंता की क्या बात है !’ स्त्री ने उत्तर दिया, ‘मालि-याजार जायगी ही। उधर से पत्र भी लेनी आएगी।’

स्त्रेन ने ममझा, अब पादरी वीपस बाहर आ जायगे। डाका प्रवध करने दूमरे कमरे में गए थे। काम बन गया।

पर बहुत देर बीतने पर भी पादरी न आए। क्षण भर का पुन उनका स्था सुनाई दिया, ‘क्या हर्ज है, यदि तुम्हीं आज चले जाओ ? दिन सुहावना है। कल की बरसात के बाद मङ्क सु गई है। अच्छा है, यदि कुछ हवा खा आया। टहलना भी जायगा और दिल भी बदनगा।’

‘मैं खुश-खुशी जाती। पर देखिए न, ये परदे कमरे में बँधे बिखर पड़े हैं। इनको ठोक किए बिना कैसे जा सकूँगी ?’

स्त्रेन ने साचा अब पादरी जल्द दरवार में आ जायें क्योंकि आगे कहन की कोई बात हीन थी। पर बहुत पतीता क पर भी वे न आए। प्रत्युत आवाज कुछ बिगडती सुनाई दे देना लगा, मानो मामला अभी समाप्त नहीं हो पाया है। पति का स्वर सुन पडा, ‘ओइ पेशक आप जैनी कुनोन मदि... अपने पति क जिये ढाक लाने कैव जा सक्ती हैं !’

निस्पन्द यह मञ्जरु में कहा गया हागा। पर उममें ऐसी न थी निमसे साफ-साफ झूठक रहा था कि पत्रा के इन्कार यह चिढ़ गया है।

‘एडवर्ड, ओक ! तुम मेरा मतलब ही न समझ पाए !’

‘सम्भव है, आप-जैसी सुन्दरी के लिये एप्लम बहुत मही जगह हो ।’ वह उसी स्वर में कहता रहा, ‘शायद श्रीमती जी तब तक हवा खाने नहीं निकलती जब तक ऐसा रमणाय स्थान न मिले, जहाँ चारों ओर सुन्दर झट्टालिकाएँ और सुरम्य वाटिकाएँ न हों । ओह, भूल गया । मुझे चाहिये था एक बग़ीचा का इन्तजाम करता, ताकि आप × ×

‘एडवर्ड !’ वह अधीर होकर चिल्ला उठी ।

‘आह, मैं जानता हूँ बेचारा एप्लम क्या बराबरी करेगा, आपके पिता के आम की । पर मुझे मालूम न था, आप इतनी सुकुमार हैं कि एप्लम की ज़मीन पर पैर ही न रखेंगी ।’

‘ओह एडवर्ड, क्या कह रहे हो ! मैं फिलहाल नहीं जा सकती ।’

‘नहीं जा सकती ?’ पति ने आश्चर्य से नेत्र विम्फारित कर पूछा ।

इसी क्षण स्वेन ने सोचा, छिपकर बानें सुनना अनुचित है । प्रतएव दरवाजे का हैंडल पकड़ कर जोर से खटखटाया । जूने भी बजाए और खसा भी । पर किसी ने उसकी आवाज़ पर ध्यान ही न दिया । पति पत्नी उसी तरह बातें करते ही रहे ।

‘नहीं, मैं नहीं जा सकती’ स्त्री कह रही थी, ‘इस स्थान में कोई ऐसी वस्तु है, जिससे मेरा गला घुटने लगता है । मैं नहीं जानती वह क्या है ? वह माता पिता से थिल्लुङ्गने का रज नहीं बनूँ कोई दूसरी वस्तु है । जब तक घर में रहती हूँ, मजे में रहती हूँ, पर ज्यों ही बाहर निकलती हूँ, वह वस्तु मेरा गला आ दबोचती है ।’

चसना गला रुंध रहा था। शब्द टूट रहे थे।-उत्तेजना धर रही थी।

'पर सिघन, मैंने कोई धुरी धान तो कही नहीं !'

'ओरु ! तुम मुझे नहीं जानते।' वह सिसरुने लगी, 'मैं वैसा घमंडी नहीं हूँ, जैसी समझ रहे हो। मेरे घावालों से पूछो, बताएंगे, मेरा स्वभाव कैसा है। यह कारण नहीं है कि यह जगह सुंदर नहीं है, सुशुक्ली नहीं है। नहीं ! नहीं !! मेरे भय का कारण

'सुनो, सिघन ! यों मन ही मन जलने-कुड़ने में कुछ सार नहीं। तुम्हें इन सब बातों का साक मतलब कह देना चाहिए। यह मजाक या त्रिजवाड़ नहीं है !'

स्वेन बड़े पशोपेश में पड़ गया। बहुत देर से वह धनकी बातें सुन रहा था। यदि वे जान लें कि यह वहाँ छिपकर बैठा है तो मामला और भी बदतर हो जायगा। वह उठकर दरवाजे की ओर बढ़ा, पर ठिठक गया। वान यह भी कि वह निश्चय नहीं कर पाता था क्या करे ? उस जैसा शकाशील और आत्म-विश्वासहीन व्यक्ति शायद ही कोई मिलेगा। उसका मन अत्यंत दौंदाहोल रहा करता था।

'वस्तुतः उसका कुत्त भी अर्थ नहीं है', स्त्री पूर्ववत् अघोर हो कर कहने लगी, 'इसोलिए मैंने तुमसे कहा नहीं। उसे मैं देख या सुन नहीं सकती, केवल घर के बाहर निकलने पर अनुभव करने लगती हूँ। ऐसा प्रतीत होता है मानो एक सफ़र, सुने स्थान में बढ़ रहने का मुझे दृढ़ मित्रा है। यही सोचकर एक विचित्र चदासी मेर दिल में छाने लगती है। मुझे अपनी दुर्दशा पर ध्याना है।'

'ओह ! अथ समझा।' स्वेन ने सोचा, 'वह इसी ह्रादे से बातें कर रही है ताकि पति पुनः सुदर वक्ति सुनाए, जैसी

दिन बंधो मे सुनाने लगा था । और पादरी है भी इस प । स्त्री को ठिकाने लाने की उसमें काफी शक्ति है । दिग्ग भी और दिग्ग भी ।'

'आह ! अगर मैं इस बिल में कैद न होती और पहाड़ियों यह दीवार धारों और न दीव्यती, अगर इस कघ-जैसे तहने में गद्दी न होती और कुत्र बाहर का भी प्रकाश पा सकती ।'

अटकती-अटकती बोली, 'पर यह कोई किसी पूर्वजन्म का फल है, वरन् मैं यहाँ आती ही क्यों ? ओह, इस दुग् रास्ता बतलाने के लिये तुम भी दा शब्द नहीं कह सकते ?'

'अब पादरी जरूर कोई सजेदार बात कहेंगे ।' स्वेन ने सोचा है छड़ा रहने के लिये स्वेन के मन में पछतावा न था । स्त्री आवाज मीठी थी और आशा थी पति भी कोई बात होगा ।

'पचोसों धार मैंने बाहर निकलने का प्रयत्न किया' स्त्री कहती ही, 'पर नहीं जा सकी । तुम नहीं जानते, मुझे कैसा अनुभव में लगता है । मेरा गना घुटा जाना है, मैं राने लगती हूँ—'

'अब यहा तो ऐसा कुत्र भी नहीं है सिधत । यह केवन तुम्हारी शान्ति है ।

'नहीं ! नहीं ! यहा अवश्य कोई वस्तु है, ना मुझे नकार करना है । जो मेरा सुख हडप लेना चाहती है । जानते हा, मैं आजकल क्या किया करती हूँ ? मैं धार-धार अपने गाव की तस्वीर का देखती हूँ ? जो भाई ने मेरे लिये खोच दी थी । पहले उस नदी और मकान, उस फाटक और सड़क को रटकर मैं मजाक कर लगती थी । पर अब समसे ही हटना टाढम बँध रहा है । माना उसको ही देखकर मैं जिंदा रहती हूँ ।'

'मुझे भय है प्रिये ! तुम बेरकूती से भरी हुई निरर्थक कला

नाथों में उमङ्ग रही हो, पति अब सपदेशक के गंभीर स्वर में कहने लगा, 'तुम्हें चाहिए कि जब तक वह भ्रान्ति दृढ़ हो, पहले ही उसे पूरी तरह दबा दो। इसीलिये मैं कहता हूँ—करो—जाया डारघर तक कुछ दहल आओ !'

'नहीं, नही जा सकती।' वह चिल्ला उठी।

'सुना सियन ? इस तरह बेसिर पैर की बातों में उलझ लड़कपन है। तुम इतनी कमजोर तो हो नहीं कि डाकघर तक जाने में थक जाओ। तब क्यों हिचकिचा रही हो ? यदि तुम चाहती हो कि हमारा सुप्त एक दो सप्ताह हो नहीं, वरन् जीव भर अटल रहे, तो तत्काल इन वैद्यकृतियों को अपने मस्तिष्क से निरास्र फेंको !'

और कुछ नरम पड़ गई। बानी, 'आज तो मुझे छुट्टी दे दो, दूसरी बार चली जाऊंगी। एक दो दिन में इस वदासी को दब दूँगी—'

स्वेन साँस राके खटा था। उत्सुक था, देखू पति—सही प्रार्थना स्वीकार करता है या नहीं। पर स्त्री के गिड़गिड़ान पर भी जब पादरी न बही कहा कि उसे ताजा अखबार देरने की सख्त जरूरत है, तो स्वेन को अचानक एक घात ऐसी सूझी जो पहले ही सूझ जानी चाहिए थी, पर बातों की घबड़ाहट में बाध ही न रही थी। धुपचाप दरवाजा खोलकर वह धीरे से बाहर खिसक गया। पादरी का मकान दिग्गता रहा तब तक तो वह धीमे क्रम गयता हुआ चलता रहा। पर ज्यों ही मकान दृष्टि से शोभन हुआ वह एक सपाटे से डाकघर की ओर लपका।

अतप्य पति की आह्ला से जाचार होकर जन्न सियन और और बीमार की तरह फौपती-लड़खड़ाती हुई, सबक ओर बनी, तो उसे अधिक दूर नहीं जाना पड़ा।

क्रदम गई होगी कि एक नवयुवक सामने आ खड़ा हुआ और  
 से अभिवादन कर, उस दिन की याद दिलाने लगा, जब  
 टेशन से एप्लम तक वे साथ ही बगची में बैठ कर आए थे ।

सिमन उसकी ओर आश्चर्य के साथ ताकने लगी । समझ  
 उसकी उसका आशय क्या है ? तब स्वेन ने बतलाया कि वह  
 गकघर गया था और सिमन कौरन समझ गई, वह क्यों उसके  
 गस आया है । समझ गई कि पोस्टमास्टर ने उसके हाथ  
 प्रखवार भेजा है । पर युवक इतनी हिचकिचाहट के साथ बोल  
 हा था कि उसका पूरा मतलब समझना फठिन था ।

उसने स्वेन के हाथ से आखबार ले लिया । पर घर की ओर  
 वापस मुड़ी नहीं । मानो ध्यान ही न हो कि जिस चीज क लिये  
 जा रही थी, वह उसे मिल चुकी है ।

तब नवयुवक पुन उसके समीप आया और अत्यन्त विनय  
 के साथ कहने लगा, 'घृष्टता क लिये क्षमा करें । यदि आप  
 टहलने निषज्जी हों, तो इन सुहावनी सध्या के समय समुद्र तट से  
 ादकर दूमरी '

'समुद्र-तट ?' वह चौंकर बोल उठी, 'क्या यहाँ समुद्र  
 ही है ?'

'हाँ, समीप ही । और यदि हमें आशा करें तो जाने में ज्यादा  
 र भी न लगेगी ।'

वह पश्चिम की ओर जानेवाली एक पगडण्डी की ओर  
 दा । उसके वस्त्र मामूली मजदूरों से कुछ ही बेहतर होंगे । पर  
 हारे से सचाई, ईमानदारी और नम्रता टपकी पड़ती थी ।  
 सके साथ जाने में सिमन को कुछ भी हिचकिचाहट  
 हुई ।

आकाश एक विविध अरुणिया से अनुरजित था । वह

( ८ )

रविवार का मनोरम मात काल था। अक्टूबर का अन्तिम सप्ताह।

प्रभात कालीन वायु दक्षिण के उन छप्पा प्रदेशों को साफ करती चली आ रही थी, जहां पगीचों में गुलाब खिल रहे थे, अगूर की नई फसल ढल चुकी थी और कोल्हूओं में दाख का ताजा रस उफान रहा था। उसकी अनवरत गड़खड़ाहट में हृदय को बेचैन कर देनेवाली एक विचित्र ध्वनि थी, जो चित्त में वैसी ही शलघनी मचाने लगती थी, जैसी किसी अजनबी की धोली। कह नहीं सकते, उस अशीथ आवाज में कोई निगूढ रहस्य छिपा था, घुसों के पीले पत्तों, ऊमड़ घोंसलों और तितलियों के

वेतर पत्तों की फरफराहट थी। नहीं जानते, उस विचित्र बड़बड़ और फुम-फुम का अर्थ क्या था। किन्तु इसमें तो तनिक भी सन्देह नहीं कि वायु की उस विचित्र भाषा में दिल की कथा जगा देनेवाली कोई शक्ति अन्तर्हित थी।

कुछ ही क्षण पूर्व एल्लम के छोटे से बन्दरगाह पर नाव से दो आदमी नीचे उतरे थे। बूढ़ा तो घाट पर उतर कर, प्रार्थना में सम्मिलित होने के लिये सीधा गिर्जे की ओर चल दिया था। किन्तु लड़का पिता के साथ न जाकर वहीं किनारे एक पहाड़ी-कदरा में घुसा बैठा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो पहले से ही उसे वह एकान्त स्थान ज्ञात है और बात थी भी सोलई आना ठीक ही। क्योंकि बचपन में अक्सर इसी अट्टान के खोपड़े में घुसकर वह दिन-दिन भर लेटा रहता था।

स्त्रेन की उदासी अब धीरे-धीरे मिट चली थी। न उसका श्रोतों पर अब पहले जैसी रजिदा मुमकुराहट थी, न हृदय में वह कड़ुवी वेदना ही, जो आग की तरह प्रतिपल उसके अन्तराल में घघकती रहती थी। भ्रम से जोटा, तब से किसी दिन भी उसे इतना सुख नसीब न हुआ था, जितना पिछले एकाघ सप्ताह में। यही कारण था जब समुद्र तट की उस एकान्त कदरा में लेटे-लेटे, वह प्रभाव-वायु का रहस्यमय संगीत सुनने लगा तो अचानक उसके मस्तिष्क में कई पुरानी स्मृतियाँ उमड़ आईं और उसे याद हो आया वह दिन—जब इसी तरह कितिज तक फैले हुए अनन महासागर की सुखमा निहारता हुआ, वह किनारे की एक ढलुवा अट्टान के सहारे लेटा था। जब पानी पर प्रतिबिम्बित हानवाले प्रकाश की चकाचौंध के आगे आँखें खुल ही न पाती थीं और अन्त में जब बहुत देर तक मुदी रहने पर वे अकारण



लगी। किनारे की ढालू घट्टान से एक आदमी नीचे उतर रहा था। 'ओह ! यह तो वही नौजवान है, जिसने कुछ सप्ताह पूर्व मुझे पहले-पहल समुद्र का दर्शन कराया था।' उसे पहचानकर वह मन ही मन कहने लगी, 'अभी तो उस दिन की अनुकम्पा के लिये धन्यवाद देना भी बाकी है.....' और जल्दी-जल्दी आलें पोंछ वह आगन्तुक की ओर बढ़ी।

किन्तु तब तक वह स्वयं नजदीक आ पहुँचा था। यद्यपि इतवार का दिन था, उसकी पोशाक महलों-जैसी सादी और मैली थी। पैर में भारी समुद्री जूते, घदन पर खुरदर कपड़े, सिर पर पुराने जमाने के सम्राटों के फौजी ताज जैसी एक बरसाती टोपी। किन्तु साधारण होने पर भी वे सब उसे खूब फव रहे थे।

'आपको यहाँ घेठी देख, सोचा कुछ सेवा करने का साहस करू।' वह समीप आकर बोला, 'नजदीक ही मेरी नाव है, जो दीखन में भद्दी होने पर भी वास्तव में घुरी नहीं है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी यदि कुछ देर तक समुद्र की सैर कराने का मौका देकर अनुगृहीत करेंगी।'

यदि और किसी दिन होता, तो वह शायद ही स्वीकार करती; किन्तु आज तो वह थोड़ी सी सहानुभूति के लिये भी तरस रही थी। साथ ही उसे भय था कि वह नवयुवक कहीं अपनी साधारण पोशाक और टूटी नौका को ही अस्वीकृति का कारण न समझ बैठे। यह सोचकर वह इन्कार न कर

पाज घटा दिया गया। दक्षिणी पवन के झोंक पर वह तन उठा। नौका और तिरछी होकर एक ओर और ऊँची स्वेन ने पत्तवार समाल कर डॉढ़ चलाता

शुरू किया, खाड़ी को चीरती हुई वह समुद्र की ओर भाग बली ।

पहले तो समुद्र की सैर से आनन्द नाम की सिधन को न आशा थी, न अभिजापा ही । उसे विश्वास ही न होता था कि संसार में उसका दिल का बोझ हलका करनेवाला कोई पदार्थ है । किंतु जब छाया-चुंबित धरातट को त्याग कर नौका असीम महासागर में प्रविष्ट हुई, तो सिधन के हृदय में ऐसी शान्ति और शरीर में ऐसी ताजगी का अनुभव होने लगा कि कठिन से कठिन विपाद को धर दशाना भी उसे अत्यन्त सज प्रतीत होने लगा ।

इस-उधर बिखरे हुए बादलों के कुछ सफेद घबघों को छोड़ आकाश लगभग निरभ्र था । किन्तु प्रखर किरणों को मद करने के उपयुक्त, निचले वायुमण्डल में अंध भी पर्याप्त घुन्घ विद्यमान थी, जिससे ढककर आसपास की नगी चट्टानों और सूखी पर्वत-मालायें रग-विरगी छायाओं का नृत्य प्रदर्शित कर रही थीं । उनका प्रतिबिम्ब जगमगाते हुए सागर के वक्ष स्थल पर पड़ रहा था, जिससे आँखों के सामने एक अजीब समों बंध जाता था । आसपास के ढालू पगारे भयानक दृष्टिगत हो रहे थे । दूर की पर्वत मालायें रग-विरगी रेखाओं के रूप में एक के बाद एक सामने आ रही थीं ।

इस वातावरण में प्रवेश करते ही सिधन की आँखों में एक विशाल तुल्य चक्का का भाव झनकने लगा । उसके हाथ आप-ही-आप आपस में बंधकर गोदी में लटक गए । वह इतनी श्रद्धा और भक्ति के साथ सागर की ओर देखने लगी, माना प्राकृतिक सौंदर्य पर विमुग्ध होकर प्रकृति की एकमात्र उपासना में तलोन हो रही हो ।

आज तक बसने जाना भी न था कि 'समुद्र के इतने समीप आकर, उसका श्यामोच्छवास सुनने और दागा दागा पर हमारी सुखाकृति के भावपरिवर्तन का कौतुक देखने में कौन सा रहस्य निहित है। आज तक उसे अज्ञात था कि सागर के वक्षस्थल पर शिशु की तरह लेटकर प्रकृति की शांत लोरियाँ सुनने में कितना ध्यान है। कितनी विश्रांति है! यह पहला ही अवसर था जब वह ईश्वर के एक अद्भुत कौतुक का रहस्य सीख रही थी। इसी वही एक विचार उसका मस्तिष्क में बार-बार बमड़ रहा था।

एकाएक स्वेन ने पनवार घुमाना छोड़ दिया और नौका आधी क वेग में द्रुत गति से उत्तर की ओर भाग चली। अब वे कभी सकरी गलियों के बीच, कभी खुदरी चट्टानों के नीचे होकर गुजरने लगे। किनार पर कहीं लाल पीले फर्मा से लहरे हुए नाशपाती के पुराने घुसा, कहीं घीवरों की रगीन भापड़ियाँ कहीं चट्टानों के झरानों से भाकते हुए हरे-हरे चरागाह दृष्टि होते थे। प्रभात के आलाक में वे सब इतने सुन्दर, इतने सजीव नजर आ रहे थे कि बसंत-सुखमा भी उनकी तुलना फीकी थी।

अब नाव एक टापू से दूसरे टापू को, एक चट्टान से दूसरे चट्टान को जाने लगी। रास्ते में कहीं जलयान, कहीं माल लड़ हुए बजड़े, कहीं छोटी छोटी नौकाएँ सामने मिलती थीं पानी की चमकीली सड़क पर वे ऐसी दृष्टिगत हो रही थीं, मानो यही रङ्गी तिलिया हो। स्वतः स्वेन भी उनकी ओर एक के विस्मय के साथ देख रहा था। आज प्रत्येक और चट्टान, क्या घुसा और चयन प्रतीत हो रहे थे, ऐसे अवर्यानीय थे, मानों किसी त्यौहार की सैरगाड़ी

'जरूर ये जानते होंगे कि-यह स्त्री सौंदर्य की अनन्य भक्त है- वह मन-ही मन कहने लगा, 'तभी तो ऐसे रंग बिरंगे साज में सज धज कर तैयार खड़े हैं।' उसे प्रसन्नता थी कि सिन्नन उन्हें इतने अच्छे रूप में देख रही थी। किन्तु न सिर्फ समुद्र और पहाड़ ही प्रत्युत रबेन भी आज अपने सबसे सुन्दर स्वरूप में प्रकट हो रहा था, क्योंकि और दिनों की अपेक्षा आज वह अधिक प्रसन्न था। अधिक शांत भी था।

धीरे-धीरे बातचीत का प्रवाह भी फूट निकला। पहले मौसिम के सत्रव में सर्चा होने लगी। तब आस-पास के दृश्यों का प्रस्तरण खिड़ गया और स्वेन उसे किनारे के द्वीप और पहाड़ के नाम और पते बतलाने लगा। कुछ ही मिनट क बाद शम और समोच ताक पर रख दिए गए और इस तरह घुल-घुलकर घातें होने लगीं, मानों वर्षों के मित्र हों। ज्यों-ज्यों साहस सुन्नता गया, त्यों-त्यों कई नई पुग्नी घातें खिड़ती गईं और सिन्नन उसका अगाध अनुभव हान दरकर मन ही मन विस्मित और उत्कठित हान लगी। विस्मित इसलिये कि समुद्र के निर्जन तट पर जनमनेवाले उस नवयुवक में इतनी प्रतिभा नजर आना एक तरह का आश्चर्य था। और उत्कठित इसलिये कि उसकी अप्रतिम नम्रता, सुशीलता और बुद्धमानी देखकर वह उसका वास्तविक स्वरूप देखना चाहता थी। वह स्वेन के सौजन्य पर मुग्ध थी, और धीरे-धीरे उसके जिये अपने मन में एक श्रद्धा का अनुभव कर रही थी। चाहती थी, ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति स परिचय प्राप्त करें, ताकि जब कभी अपनी दुबलता का भाव प्रकट हो, उससे सान्त्वना-सदानुभूति और सहायता पा सके।

घर बातचीत करते कुछ मिनट भी न बीत पाए होंगे कि स्वेन के मन में, उस भोली युवती के सम्मुख अपनी पाप-

कहने की प्रबल उत्कंठा उठने लगी। बात यह थी कि आज तक जितने भी लोगों ने उसको दोषी करार दिया था, उत सपके वह किसी न किसी हद तक पाप-जित्त सकम्ता था। सभी ने जोक में किमी-न किसी अवसर पर चोरी और धाखेबाजी की भी भूठी गवाही दी थी और अनाचार भी किया था। सभी किमी हद तक घमण्डी और सुप्त, निर्दयी और अत्याचारी रह चुके थे किन्तु यह जवान लड़की, जो एक धार्मिक वातावरण में पल थी—पाप या स्वार्थ से अभी इतनी अजित्त थी कि उसे न अपने न दूसरों की ही कृपयुक्तियों का ज्ञान था। आज तक उनके मन में न कोई बुरी भावना ही उठी थी, न किसी का बुरा ही धारा था। यह बात सच थी कि उससे उदार निर्णय पाने की आशा रखना व्यर्थ था। क्योंकि वह अस्यन भावुक और सतर्क थी अतएव बुरी और बदसूरत दीखनेवाली प्रत्येक वस्तु से नफरत किए बिना नहीं रह सकती थी। फिर भी स्वन उमक सम अपना मामला पेश करने के लिये तत्पर था। वही उसकी अति न्यायाघोश थी। उसका ही निर्णय उसे सर्वोपरि मान्य था यदि सम्राट के पास न्याय पाने के लिये जाना होता तो सम था कि वह इन्कार कर देता, किन्तु इस सामान्य लड़की के निर्णय के सम्मुख अपना सिर झुकाने के लिये वह चुशी-खुशी तैयार था।

इसी बीच, जब कि वह अपने मन का हाल कहने में हिचकिचा रहा था, उसने देखा कि मिथन पुन पहले की तरह मौ धारण किए बैठी है। ऐसा प्रतीत होता था, मानो कोई वा कहना चाहती है, किन्तु आरम्भ करते हिचकिचा रही है।

आखिरकार साहस बटोर कर वह एक दम अपने मुख विषय पर ध्या पहुँची और स्वेन की ओर मुड़कर कहने लगी

पने देखा होगा, जब आप आप, उस समय मैं आँसू गदा  
थी ?'

स्वेन ने 'हाँ' कहकर स्वीकार किया ।

'बात तो कोई बड़ी भारी न थी ।' वह अब खुलकर कहने  
ली, सिर्फ एक पत्र आज सुबह मिला था । वह मेरी एक मम्मी  
पत्र था । अभी अभी उसका विवाह हुआ है । उसका पिता एक  
घनवान व्यक्ति है और पति भी आरम्भ में इनना भला प्रतीत  
ता था कि सभी लोग आशा करते थे, ताड़की सुखी होगी × ×'

'और अब सुखी नहीं है क्या ?' स्वेन ने दोनों हाथों से  
धाम कर कहा । वह इस तरह आगे झुक गया था, माना  
अन की सली का हाज सुनने के लिये काफ़ी उत्कण्ठित हो  
जा हो ।

'हाँ, ऐसा ही प्रतीत होता है ।' युवती ने स्वेन की दृष्टि  
चाने के लिये समुद्र की ओर ताकते हुए उत्तर दिया, 'पति न  
राने क्यों उससे नाराज रहा करते हैं । वह खुद इसका कारण  
ही समझ पाती । इसलिये मुझे लिखकर पूछा है । पर मैं भी  
सके दुःख की दवा बतलाने में असमर्थ हूँ । मुझे उस बचारी  
र तरस आती है । उसकी दशा का हाज पढ़कर आँसू निकलने  
जाते हैं, हृदय फट जाता है × ×'

'किंतु आपके पति पादरी तो बड़े अनुभवी आदमी हैं ।  
उसे आपने नहीं पूछा क्या ?'

स्त्री का चेहरा लज्जा की हलकी सुखी से लाज हो गया ।  
उने स्वेन के प्रति एक सदेह मिश्रित कटाक्ष पात किया । पाया  
र के लिये दोनों की आँखें चार हो गईं ! किंतु युवक की दृष्टि  
। मकाच या द्विचक्रिचाहट का भाव न था । उसकी आँखों में

इतनी स्पष्ट ज्ञाति थी मानो सभ कुछ दिल खोजकर कहना चाहता है।

'पति से इस घात का जिक्र करना शायद मेरी सखी नहीं न करे।' सियन ने उत्तर दिया और पुन अपनी कहानी शुरू किया—'दूर असल बात यह है कि जब कभी बाहर का मौका होता है, तभी उसके पति अधिकतर बिगड़ा करते रास्ते भर जवान पर ताला लगाए बैठे रहते हैं और यदि कभी कहने का साहस करती है तो ऐसा चुभता जवाब देते हैं मानो जले पर नमक छिड़क रहे हों।'

'पर इसका क्या भरोसा कि पति को नाराज करनेवाली कोई बात आपकी सखी में नहीं है? अर्थात् दाल में काला नहीं ' नहीं !' मुझे पक्का विश्वास है कि वे दोनों सब नेक हैं। यदि बाहर भी जाते हैं तो न राग-रग में शरीक होते हैं, खेल कूद में ही। मेरी सखी तो इतनी टरती रहती है कि उस दिन की बात है, जब वे पड़ोस में एक मित्र के यहाँ दावत में वह दिन-भर वूठी औरतों में ही बैठी रही, और वगोचे तभी गई जब स्वतः मकान-मालिक ने आकर किया। और वहाँ भी कोई विशेष घातचीत न हुई। सिर्फ वगोचे के सनध में कुछ धानें छिड़ गई। उसने कुछ पौदे पसद किए और अपने मकान पर वैसे ही वगोचा लगवाने की इच्छा की। धान काई धड़ी भारी न थी। फिर भी पति महाशय बिगड़े पड़े हुए। लौटत वक्त जब सखी ने अपने पति को प्रमत्त करने के लिये वगोचे का जिक्र किया, तो वे ऐसे तमतमा उठे और क्रोध प्रदर्शित करने के लिये वगोचे के घोंड़ों को इतनी वेदनी में पीटते कि गाव लाल हो गए और अंगुलियों सफेद पड़ गईं। तब ही टाट-पटकार सुनाई गई और भविष्य में चतकी आज्ञा के





स्वतंत्र घर प्राप्त होने पर भी, स्वाधीनता पूर्वक विचार करने का अधिकार नहीं है। उसका प्रत्येक काम गलत करार दिया जा सकता है। प्रत्येक शब्द के लिये डॉ. फटकार सुननी पड़ती है। ओह! जय यह बचपन के दिनों से आज की स्थिति की तुलना करती है। ता अपने भाग्य के वैचित्र्य पर हँसे बिना नहीं रह सकती।

स्वेन पुन उत्तर देन में असमर्थ रहा। 'यह खी कितनी असाहाय्य और असमर्थ है?' वह मन-ही-मन कहने लगा, 'ऐसा-प-भी व्यक्ति नहीं, जिसके सम्मुख वह अपना कलेजा चीरकर तभी सखी के बनावटी क्रिस्ते की छाड़ में अपन कह फही है।'

'यदि मैं किसी भी रूप में उसकी सहायता कर सकती। वह ऑसु बहाती हुई कहने लगी, 'क्योंकि मैं जानती हूँ कि वह नेक परोपकारी है। उसे गरीबों को सहायता देने की उत्कण्ठ अभिलाषा है। पर अफसोस, उसे परोपकार करने की भी अनुमति नहीं मिलती, न गिर्जे में ही मनचाहे स्थान पर बैठन मिलता है। गाँव क गिर्जे में भजनिको के समीप एक स्थान है जहाँ सारा हाज अचछी तरह दृष्टिगत होता है और सर्गी स्पष्ट रूप में सुनाई पड़ता है। वह उस स्थान पर बैठने के लिये जलाशय रहती है। फ़ितु पति आज्ञा दें तब न ?'

स्वेन को अथ पया विश्वास हो गया कि सिसन स्वतः अपन ही क्रिस्ता सुना रही है, क्योंकि चर्च की जिस बैठक का वह वर्णन कर रही थी, एप्पम के गिर्जाघर में ठीक वैसी ही एक बैठक बन थी, जो खास पादरी के परिवार के लिये निश्चित थी।

'ओह! समझ गया, पति इस खी को सन्देह की दृष्टि से देखता है।' स्वेन मन में विचार करने लगा, पर इससे किस तरह है यह बात ? अचछा है यह उस तथ्य से अनभिज्ञ रहे।'

और यह सोचकर कि पादरी चर्च से वापस लौटें, तबतक प्रसन्न घर पहुँचना आवश्यक है, स्वेन ने नौका को वापस एजम की ओर पकटाई। साथ ही रजिदा विचारों से उसका ध्यान हटाने के लिए एक पहाड़ी की ओर सकत करते हुये कहा 'दरिए ! वही यीमन है, जहाँ स्वेन नामक एक व्यक्ति रहता है। उसका किस्सा तो आपने सुना ही होगा ?'

स्त्री ने सिर हिलाकर स्वीकार किया। वह बात आगे बढ़ाना नहीं चाहती थी। पर यकायक, कुछ ऐसे शब्द बोल गई, जिन्हें सुनकर स्वेन के होश उड़ गए और उसका मन की सारी प्रसन्नता विलुप्त हो गई।

'और यह तो आप सुन ही चुके होंगे' वह बोली—'कि उस व्यक्ति ने जो मदरसा बनवाया था, वह कज रात को जलकर जाक हो गया ?'

'जाक हो गया ?' स्वेन करीब करीब चीख उठा। उसके हाथों से पतवार छूट पड़ा। पाल चलट गया। नाव भी करीब करीब चक्कर खा गई।

'हाँ, जलकर निजकुल नष्ट हो गया। और एक दृष्टि से हुआ भी अच्छा ही'—वह बिना घबराहट के बोली।

'यह क्या कहती हैं आप' स्वेन न ओठ चबाते हुए कहा, लोग तो उस इमारत की बहुत तारीफ करते थे। तब भला क्या नाम हुआ उसको नष्ट करने से ?'

'हाँ, सुना तो मैंने भी था कि मकान अच्छा था। पर जब वे वहाँ जाना ही नहीं चाहते थे ? तो किस काम की वह इमारत ?'

'जाना ही नहीं चाहते थे ?' स्वेन धोककर उन्हीं शब्दों क

पहले से ही शोक के बोझ से दब रहा है। मैंने वह नेहूदा समाचा सुनाकर उसके घाव पर और नमक छिड़क दिया। हाय ! क्या यही स्मृति लेकर वापस लौटूँगी कि आज मैं इच्छान रहने पर भी एक दुखी हृदय को आघात पहुँचाया है ?

वह बार-बार अपने आपको कोंस रहीं थी। 'न जाने किसे उडवल भविष्य के स्वप्ने देर रहा था। न जाने कितने पैर बर्बाद कर डाले। बचारे ने अपना काम-धन्धा भी त्याग दिया। सिर्फ इसी एक उद्देश्य से कि लोग उसे फिर से छुपा-ट्टि न देखने लगे। पर हाय ! सारे अरमान सिट्टी में मिल गए। सब मवन्न पानी हो गया। ओफ, क्यों मैंने यह घात सुना दी ! मुझे उस तरह नहीं बोलना चाहिए था।'

रास्ते भर दोनों चुपचाप बैठे रहे। किसी ने मुँह से एक शब्द भी न निकाला।

किन्तु जब नौका एपजम के पथरीले घाट पर जा लगी और स्वेन अपनी साथिन का उतागन के लिये उठ खडा हुआ, तो सिमन ने उसका हाथ पकड़ लिया।

'सामा कीजियेगा !' वह अत्यन्त प्यार भर स्वर में बोली, 'मुझे मालूम न था आप ही स्वेन हैं' और झुककर- उसका जलाद पर अपने आँठ चिपका दिए।

'अरे ! यह क्या कर रही हैं ?' स्वेन इस तरह चौककर चिल्ला उठा, मानो किसी ने जोर से तमाचा मार दिया हो।

'कुछ नहीं, सिर्फ यही बतलाना चाहती हूँ कि मैं आपको उसी दृष्टि से नहीं देखती हूँ, जिसमें और लोग देखा करते हैं।'

और तब घाट पर उतर कर वह चट्टानों की सफरी गली और बढ़ी।

किन्तु कुछ ही क्षण बाद स्वेन पुन उसकी बाजू में जा खड़ा

हुआ। कंधे पर हाथ रखकर वह गद्गद् कण्ठ से बोला, 'आह! आपको किस तरह धन्यवाद दूँ। परमात्मा आपका भला करे। न अपने किन्तु ध्यान रहे, भविष्य में ऐसी गलती पुनः न हो। न अपने पति हीं से आज्ञा की बातों का जिक्क करे, वरना ईर्ष्या के मारे वे आपको जिन्दा न छोड़ेंगे।'

वह चला गया और सिम्रन पुन खेतों में होकर अकेली चलने लगी। किन्तु युवक के अन्तिम शब्द अत भी उसके कानों में गूँज रहे थे।

'ईर्ष्या? क्या सच है कि मेरे पति ईर्ष्या करते हैं?' वह सोचने लगी, 'नहीं! नहीं!! असंभव है। उस युवक ने क्या सोचा कि ऐसे शब्द कह डाले? उसे सोचना चाहिए था कि जी-तन से मैं पति की ही हूँ। उनके ही चरणों की मैं दासी हूँ।'

सोचते सोचते उसको आँखों में आँसु छलक आए। अपन पति के सम्बन्ध में कुछ भी अपशब्द सुनना उसे नागवार था। उसे स्वेन के शब्द सरासर अनुचित, और क्रूर प्रतीत हो रहे थे।

'भगवान् जाने यह स्वेन कैसा है? लोग कहते हैं वह वस्तुन ही अच्छा है, यद्यपि कुछ लोग उसका चेहरा देखना भी सहन करेंगे। कुछ भी हो, मैं तो समझती हूँ कि उसको जो सजा मिली है, वह अनुचित नहीं है। जरूर उसमें कुछ दोष है। मैं जानती हूँ कि मेरा पति अब मुझे प्यार की दृष्टि से नहीं देखते। पर वे ईर्ष्या तो नहीं हैं। किससे करेंगे ईर्ष्या! तब स्वेन क्या समझकर कहता था कि वे डाही हैं? × × नहीं, नहीं, यद्यपि वे मुझे चाहते नहीं हैं, कम से-कम मेरा प्रेम पर तो विश्वास रखते होंगे। सरासर झूठा ही होगा, वनपर ऐसा आरोप लगाना।'

घर का दालान में पैर रखते ही उसे अपनी दासी मिजी। उसका चेहरा बतरा हुआ था। मालकिन की ओर मुड़कर वह

जंगल में भटक रहा है, शरीर भिन्नमंगों की तरह चियड़ों से ढका हुआ है, चारों ओर काली-काली नगी चट्टानें हैं, रात्रि का अंधकार फैल चुका है, सर्दों के मारे प्राण सिकुड़ गए हैं, न कौन गस्ता सुन्न पडता है, न कहीं दीपक ही दिखाई देता है, व्याकुल होकर इधर-उधर टटोलता है, पर कहीं भी सहारा पाता । भी समय उसका हाथ अचानक किसी कुटिया के दरवाजे पर जा लगता है और सटकती आप ही आप खिसक पडती है। वह अघखुले दरवाजे को धीरे से खोलकर भीतर घुस जाता है। देखता है कि अगोठी के कोयले जलक रहे हैं। एक ओर दो कुर्सियाँ पड़ी हैं, दूसरी ओर एक सन्दूक—जिसके समीप दो एक पुरुष और दूसरी स्त्री-चुपचाप बैठे हैं। दरवाजा खुलने ही से वह हड़बड़ा कर उठ खडे होते हैं। वे घबड़ा जाते हैं और और ही अपनी सन्दूक बन्द कर लेते हैं—इसके बाद भी यद्यपि अगोठी के पास बैठने के लिये कुर्सी देते हैं, खाना परोसते हैं और विस्तरा विछाते हैं, वे मन ही-मन यही मानते हैं कि भगवान् करे, वह अजनबी मेहमान कौरन ही अपना रास्ता नापे। तब पर्यटकी कर्ष पर एक कोने में उसक लिये चटाई बिछाई जाती है। लेम्प्रेथ बूढ़ों की अनुदागता के लिये मन-ही-मन खीम्कता। क्योंकि पत्थर चुभते हैं और चटाई बहुत पतली है। वह रोपन दृष्टि से दोनों की ओर देखना है। अगोठी के समीप एक दूसरे सटे हुए वे कैने मजे के साथ सो रहे हैं। उनका आराम से से देख उसे क्रोध आता है, किंतु इसी समय उसकी दृष्टि बूढ़ों सिरहाने पड़ी हुई एक चमकीली वस्तु पर पडती है और वह के मार कोप उठता है। 'ए! यह तो वही कुल्हाड़ी है, जिस लकड़ी चीरकर आग सुजगाई गई थी।' वह भयभीत हो है—'पर ये लोग इसे सिरहाने रखकर क्यों सोए हैं

'क्या पता आशका स-क्रॉप चठता है। सइसा उस सदह हाता  
 मानो वह कुल्हाड़ी किसी खास मतलब से वहाँ रखी गई है।  
 मासानी से मिला सक। चट हाथों में आ जाय। आक, बूढे कितने  
 गिजाक हैं। बरना इतने समीप कुल्हाड़ी रखने स क्या मतलब ?  
 हि ज्यों ज्यों सोचता है, उसका सन्देह दृढ़ होता जाता है। उस  
 विश्वास होता है कि असरय उन लोगों क मन में दगा है। नींद  
 आने लगती है, पर सोने का साहस नहीं हाता। 'क्या पता आति  
 आते ही उचककर कुल्हाड़ी उठा लें और दखते दखते घड़ स  
 सि... ..' बार-बार उसे यही भय व्याकुल कर दता है और  
 उसकी शक्य बढती जाती हैं। इसी समय कमर में कानफूसी  
 सुनाई पड़ती है और लेम्प्रेच के कान खडे हो जाते हैं। बूढा न जाने  
 किस बात क लिये अनुरोध कर रहा है, पर छुटिया उसे बारबार  
 रोक रही है। 'सन्न करो, उसे सो जाने दो।' लेम्प्रेच को स्त्री  
 की स्पष्ट आवाज सुनाई पड़नी है और उसका रहा सहा स-रह  
 ती दृढ़ हो जाता है। अब उसे काफी विश्वास होता है कि बूढे  
 ति हैं और जान रचकर उसे खत्म कर देने की ताक में बैठे  
 'शोक ! किसी गरीब खाना-बदोश की जान भयकर खतरा  
 स भी रहती है।' वह मन-ही मन सोचता है—'शायद इन लागों  
 के पास कुछ रुपये पैसे हैं, जिनके लिये इन्हें भय है कि ज्योंही  
 खुराट लेने लगू, उचककर जहन्नुम पहुँचा दें।' इसी समय कमरे  
 में पुन काना-फूसी सुनाई पड़ती है और लेम्प्रेच सोने का बहाना  
 बनाकर जोर जोर से खुराटि भरने लगता है। उसे पैरों की आहट  
 सुनाई पड़ती है। बूढा उठ खड़ा होता है, राधि की प्रार्थना करता  
 है और पुन लेट जाता है। तब दोनों खुराटि भरने लगते हैं, मानों  
 और निद्रा में अचेत हो गए हों। पर लेम्प्रेच का सन्देह रत्ती  
 र भी नहीं घटता। 'क्या पता, प्रार्थना का डोंग रचकर घोखा

( १० )

**सि**तवर १९१५ की घात है। नार्जेण्ड से दक्षिण की ओर आनेवाली रेल के एक तीसरे दर्जे के डिब्बे में, मिर से पैर तक काली पोशाक पहने एक नययुवती बैठी थी। वह अपने साथियों से बातचीत करने में ही मशगूल थी, पर चूंकि उसकी आवाज जरा तेज थी, डिब्बे के दूसरे मुसाफिर भी ध्यासानी से उसके शब्द सुन रहे थे। शीघ्र ही सब लोगों को गालूम हो गया कि रेल में सफर करने का उसका यह पहला ही मौका था। भीड़ और भदल-पहल देखकर वह ऐसी उत्तेजित हो उठी। लोगों-अजनबी स्त्री-पुरुषों से मिलने-जुलने का मौका पाकर हृदय की कली पिल उठी हो। वह जगत्तार अपनी ही

कहानी सुना रही थी, जिससे पता लगता था कि संकीर्ण  
 आवरण में रहने से उसे जी का गुब्बार निकालने का कभी  
 बसर ही न मिला था। यही कारण था कि रेल के मुसाफिरों स  
 इनती दिलचस्पी के साथ बातें कर रही थी और प्रत्येक व्यक्ति  
 धतना रही थी—वह कौन है, कहाँ से आई है, कैसा सदेश  
 है।

‘यह न समझें कि इल्म के बोझ से मेरा दिमाग बिगड़ गया  
 ’ वह कह रही थी, ‘मैंने न तो इल्लिज के सिवा दूसरी कितान  
 आज्ञातक पढी है, न किसी निरर्थक वितण्डावाद से अपना  
 स्तिष्क ही बिगाड़ा है। मैं तो उस फोर कागज जैसी साफ हूँ, जिस  
 स्वयं परमात्मा ही अपने विचार अक्रिन् क्रिया करते हैं। पर  
 रु क्या, जी-भर कर अरमान निकालने का कभी मौका ही न  
 मिला, क्योंकि लैण्ड के शीत प्रदेश में जन्म हुआ और आरभ  
 ही से निर्धन और असहाय की तरह रहना पड़ा। आज भी  
 दियासलाई के कारखाने में जाकर दा घड़ी मजूरी करती हूँ, तब  
 कहीं पेट क लिये दा रोटी नसीब होती है। पति या बच्चे तो हैं  
 नहीं। तब जी का गुब्बार निकालू तो किसक सामने ? लोग तो  
 ऐम निष्ठुर हैं कि मरने-जीने का भी हाल नहीं पूछते। यदि बीमार  
 पड़ती हूँ तो कोई पानी देनेवाला भी नहीं मिलता। बल्कि पीठ  
 पीछे व मध मेरी मञ्चाक उड़ाते हैं।

सामने सीट पर एक दयालु बुढ़िया बैठी थी। वही उस युवती  
 से बातचीत करने में सबसे पहले शरीक हुई थी। जब जरूरत  
 से ज्यादा उत्तेजित होते देखा, तो शांत करने के लिये उसने युवती  
 का घुटना धपपपाया। पर स्त्री न रुकी, न चुप हुई। ऐसा लगता  
 था मानो भीतर से कोई जबरदस्त शक्ति उसे ढकेल रही है,  
 जिसको काबु में रखना डमकी ताकत के सर्वथा बाहर हो।



से यस्ति ससार क दुखों की दया मिलनेवाली है। मानों शीघ्र ही अनवरत हृष्याकांड क हाडाकार और मूक-चीत्कार का अंत, व शांति का पुनरागमन होनेवाला है।

किसान उन दिनों के स्वप्न देखने लगे, जब उन्हें जड़कों से देश की रक्षा के लिये भेजने की आवश्यकता न रहेगी। सौदागर बाजार की महंगाईक विषय में चिंता करने लगे और मजदूर खाद्य पदार्थों की कमी के लिये घबराने लगे। सभी एक स्वर में एक साथ ही चिंछा उठे—‘ओह! इस कष्टवत् जडाई का अंत कब होगा? कब इस आपत्ति से दुनिया का दुःखरा होगा?’

स्टैंडोर्टस्क की उस नवीया का स्वप्न में भी मालूम न था कि उसके शब्दों से डिब्बे में ऐसा हड़कम्प मच जायगा। जोर की आवाज में उसने उत्तर दिया, ‘मेर पत्र में ये सब बातें मिली हैं। प्रायश्चित्त हे। जान पर वे आप ही-आप दुनिया में प्रदर्शित हो जायगी।’

सुननवालों की सारी उत्तेजना तत्काज ठडी पड़ गई। कई मुसाफिर उठ खड़े हुए थे, वापस अपनी सीट पर खिसक गए। स्पष्ट था कि यह स्त्री दूसर लोगों से अधिक बुद्ध भी न जानती थी।

और तब सामने बैठी हुई बुढिया के सिवा किसी न भी उसके सन्दा पर ध्यान न दिया। धीरे धीरे वह भी जान गई कि लोग हमकी बातों में दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं। अतएव जल्दी अपनी यात्र समाप्त कर वह चुप हो गई। उसके अतिशय शब्द तो इननी धीमी आवाज में कहे गए थे कि बगज के एक दूसरे मुसाफिरों के सिवा दूसरा कोई भी न सुन सका।

गाड़ी स्टेशन के बाद स्टेशन पार करती लगातार चली जा रही थी। धीरे-धीरे लोता के सिवा सभी मुसाफिर डिब्बे से नीचे उतर गए। तब दूमरे डिब्बे का एक मुसाफिर बेइतर जगह राजता हुआ वहाँ आ पहुँचा और कोने में आसन जमाकर बैठ गया। आते ही उसने लोता के साथ बातचीत शुरू कर दी। उसका स्वर चित्ताकर्षक और मधुर था। बोली में वेद नम्रता थी। बिना लुकताधीनी किए, वह दिलचस्पी के साथ प्रत्येक बात सुनता था। दूसरों को उसकी आज़िजी शायद खटकन लगती, पर लोता तो मान-सम्मान की भूखी थी। अतएव आदरयुक्त संवोधन सुन कर मन ही मन खिल उठी।

नदी चढ़ पाई थी। मैंने सोचा, अवरय कोई शुभ घटना होने वाली है। अतएव दौड़ती हुई मैं पुरोहित के मकान में पहुँची।

‘पर वहाँ भी वही विचित्र शानि थी। मुझे दरवाजे पर पड़ा, क्योंकि वहाँ कोई भी व्यक्ति न था, जिसे मैं अपने का दूध सोपती।’

‘इसी समय अचानक ऊपर के छज्जे से सगीत की एक मयुर धारा उमड़ पड़ी और मुझे इतनी स्पष्ट ‘सुनाई’ पहन लगे। मानों उसी कमरे में, जहाँ मैं खड़ी थी, कोई सुगले स्वर में एक अद्भुत वाद्य यंत्र बजा रहा है। मैं ठिठककर खड़ी रह गई। मेरे आन्ध में धाधा देनेवाला वहाँ कोई न था। चूकि नौदरानी जापता थी, अतएव निश्चित होकर मैं कुछ देर के लिये ठहर गई। मुझे जाने की जल्पी न थी—यदि सम्भव होता तो रात भी वहीं खड़ी रहती और जाने का नाम भी न लेती। सचमुच ही उस सुरीली तान में ऐसा जादू भरा था।’

‘उस समय गिर्जाघर की पुरानी ढग की हार्मोनियम न सिया मैंने दूसरा कोई भी वाजार ही नहीं सुना था। अतएव आश्चर्य करने लगी, वह कौनसा अनूठा यन्त्र है जिसकी आवाज उस कमरे में आ रही है? ज्यों ज्यों वे लहरें मेरे कानों के पद पर टकराने लगीं, मर मस्तिष्क में मयुर और विचित्र विचार तरंगित होने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा मानों पृथ्वी से मुझ से दौड़र में परमेश्वर के समीप जा रही हूँ।’

‘पर इसी समय कमरे में कोई व्यक्ति आ गया और तत्काल वह विचित्र सगीत बन्द हो गया।’

‘आनवाही घर की महाराजिन थी। दूध ऊठेज कर उसने नैटन का कड़ा और मिठाई की एक तश्तरी सामने रखी।’

हुए बताया कि उस दिन घर की मालकिन—पुरोहित की धुकी माता—की अंत्येष्टि-क्रिया की गई थी। अतएव लोगों का भोजन के लिए बुलाया गया था।

‘उसका अनुग्रह देखकर मेरा साहस बढ़ा। मैंने पूछा वह कौन व्यक्ति है जो कुछ मिनट पूर्व इतनी सुन्दरता से ऊपर के छज्जे में बाजा बजा रहा था?’

प्रश्न सुनकर महाराजिन ताज्जुब करने लगी। ‘क्या कहती हो बेटी?’ वह भौंचक्की-सी होकर बोली, ‘ऊपर क छज्जे से संगीत की आवाज आना कैसे संभव है? पियानो तो घर क पिछले हिस्से में है और यहाँ खड़े होकर उसका स्वर सुनना असंभव है। इसके अलावा जरा साचो तो भना आन के दिन—जब कि खास मालकिन दफनाई गई हैं—कौन गाए बजाएगा?’

‘मेरी आँसों से आँसु निकल पड़े, क्योंकि बुढ़िया मुझे झूठी समझ रही थी। इच्छा हुई, फौरन दौड़कर वहाँ से भाग निकलूँ पर सोचा कि परसी हुई चीजें खाए बिना उठ खड़ा होना उचित नहीं है।’

‘इस समय भीतर का दरवाजा खुला और स्वयं पुरोहित झोंक कर बोले, ‘यहाँ क्यों बैठी हो, क्या प्रार्थना की घटी नहीं सुनी?’

महाराजिन झेंपकर बगलें झोंकने लगी। ‘इस लड़की ने मुझे ढगा दिया था। इसलिये मैं सर कुछ झुन गई’—वह अटपटे अटपटे बोली—‘कहती है, कुछ मिनट पूर्व ऊपर छज्जे से संगीत की आवाज आ रही थी।’

‘पुरोहित नेत्र विस्फारित कर बोल उठे, ‘संगीत? अट्टा! परमात्मा की लीला कितनी विचित्र है। मुझे पहले ही मरोसा

आग्रह कर रही थी—'सिघन की चर्चा छेड़कर इस व्यक्ति से अपनी यात्रा का उद्देश्य कहो। महान् पापी को भी वह अपने म उच्च मानता है उसका हृदय विशाल है। वह दुःख की कड़ुमि घूँपी चुका है। ऐसे शख्स के आगे अपने दिल की बात प्रकट करने में कुछ भी हर्ज नहीं है।'

स्टेशन के बाद स्टेशन आ रहे थे। गाड़ी भर-भर करती हुई लगातार दौड़ रही थी। बीच बीच में लोग कहीं उतरते, कहीं चढ़ते थे। तब एक भारी जंक्शन आया, जहाँ कई लाइनों का संगम होता था। लोता व सामने बैठे हुए युवक को छोड़ कर सभी मुसाफिर उस डिब्बे से उतर पड़े।

युवक पुन सचेत होकर बैठ गया। टोपी उतार कर उसने रैक पर टॉग दी और लोता की ओर मुझकर पुन-बातचीत करना शुरू किया।

वह प्रसन्न था, बुद्धिमान था, हृदय दर्जे तक नम्र था। यह आजिजी ही उसकी मजसे बड़ी लासियत थी। ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा जो पॉव मिनट तक उसकी ओर देख चुकने पर उसने अपना दुःख दर्द कहना न चाहे। प्रत्येक व्यक्ति उसमें मिलकर यही सोचता था, 'इसको अपना हाल अवश्य कहना चाहिए। यह आदमी दिज का दर्द समझ सकता है।'

और पुनः बातचीत का प्रवाह समझते देर न लगी। कार-गाने की बात करत-करते जोता बाल उठी—'मुझे आपसे एक राय पूछनी है। यह तो आप जानते ही है कि मैं अभागिन अम्मी और दुःखी हूँ × ×'

'राय ?' युवक ताज्जुब न साथ करने लगा, 'भला, मुझ जैसा आपको क्या राय दे सकता है ? तै। कहिये, किसी लकी यात्रा तो कटेगी, क्योंकि मैं भी दालसद तक

रा रहा हूँ और घर पहुँचने के पहले अभी दो दिन और रेल में इतना है।'

स्त्री ने कहना शुरू किया—'उन दिनों की बात है जब मेला प्राप्ति के जिये मैं बाइबल छास में पढ़ने जाया करती थी। उस समय मेरी एक सखी थी, जो स्ट्रैट्सके के पुराहित की बहन्या थी, और मेरे ही साथ एक कक्षा में पढ़ती थी × ×' बोलत-बोलते उसका गला रुध गया और आँखें सुख हो गई। उस क्षण भर वाद अपना आवेश रोककर वह पुनः कहने लगी, 'और मैं उसे इतना अधिक चाहती थी कि ससार का कोई भी व्यक्ति मुझे इतना प्यार नहीं लगता था × ×'

युवक चुपचाप स्थिर और शांत होकर बैठा था। पर अब उसके चेहर पर न जाने क्यों ध्वराइट के चिह्न कभकने लगे।

'पहले मुझे कह लेने दें कि उससे पहली मुकाजात किस तरह हुई। ऐसा करन से आप समझ सकेंगे, वह लड़की कैसी थी।

'हां, हाँ, सुशी के साथ कहिए। हमार पास समय की कमी नहीं है। अभी तो पूरा दिन सामने पड़ा है' युवक बोला।

'अच्छा, तो उस दिन की बात है, जब जलपान की छुट्टी के समय कक्षा के करीब दर्जन भर लड़के लड़की गिर्जे के हाते में रखे थे और प्रश्नोत्तरी के किसी विवादग्रस्त प्रिय की चर्चा में उग्ररु रहे थे। मुझे याद है, एक लड़का कह रहा था—मुझे याद है, एक लड़का कह रहा था—'मुझे पक्का विश्वास है कि परमात्मा मनुष्य मात्र से प्रेम करते हैं, वे हमारे रक्षयिता हैं। अपनी रची हुई वस्तु को कौन नहीं चाहता?'

'मैं भी उसी मण्डली में शरीक थी। हम लोग गरीबों को धांपके दूँचे थे, अतएव धनवानों के लड़के लड़की हमारे

फटकते भी न थे। वे अधिकतर अकेले ही हाते में चढ़ल करवा किया करते थे, या पुरोहित की लड़की के आसपास भोगों की तरह जुटा काते थे। कारण वह सुंदर और लुभावनी थी, और ऐसी आकर्षक थी कि एक बेर देखकर कोई भी उसके नर्मल गप बिना नहीं रह सकता था।

लड़क की बात सुनकर मैंने पुरोहित की कन्या की ओर सकेत करते हुए कहा— यदि हम सब उस-जैसे सुंदर होते तो सभ्य था कि परमात्मा हम लोगों को भी चाहते। और तुम सब लोगों की आँखें उसी लड़की की ओर मुड़ गईं।

वह हम लोगों में कुछ दूर लड़कों के साथ टहल रही थी उसका चेहरा लंघा था। आँखें गभीर थीं। गाल फूल की तर नाजुक और सुलभ थे।

बसक गौर ललाट और कर्धों पर घुँघराजी जुल्फें रेशम तरह लहरा रही थीं। चलते समय उसका मस्तक ऐसी अतु आटा से एक ओर झुक जाता था कि सुंदरता सौ-गुनी बढ़ जाती थी। साराश यह कि परमात्मा ने उसे हर बात हम लोगों से अधिक सुन्दर बनाया था।

सामन घैटे हुए युवक के मानस-पट पर यकायक एक प्य मुलाहे की परिचित रूप रखा मन्त्रकने लगी, जिसे उसने नमुद्र सैर कगन समय, हूबहू इसी रूप में देखा था। शोफ 1 2 रूप में कैसा यौवन था! कैसा सौंदर्य!

'उसका नाम सिग्रन था' जोता कहने लगी, 'निस्ससदेह एक अनाया नाम था। किंतु उस लड़की में सिर्फ यही असाधारणता न थी। यह सच था कि हमारे समान ही उस आर्ये थी, हमारे जैसे उसके नाक-कान थे और उसके माता पि हम लोगों जैसे साधारण मनुष्य थे। तथापि यह दृष्ट था

अन साधारण मनुष्यों से बिलकुल निराज्ञी थी। वह इस ससार की नहीं थी। वह किसी दूसरे ही लोक की निवासिनी थी।

सामने बैठे हुए नवयुवक ने अनजान ही अपना सिर हिला दिया। 'निस्संदेह यही शब्द उसके लिये सर्वथा उपयुक्त है।' वह मन ही मन बोल उठा, 'सचमुच ही वह किसी दूसरी दुनिया की रहनेवाली है। वह उस उड़नघ्राने पत्नी-जैसी है जो रास्ता भूलकर न जाने कैसे अपने स्वजातीय बन्धुओं से बिछुड़ जाता है और ऐन झुंड में शरीक हो जाता है जो उससे सर्वथा विभिन्न और विजातीय होते हैं।'

'क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में सिर्फ यही एक लोक नहीं है' लोता कह रही थी, 'और भी कई लोक हैं जो हमारी दुनिया से बिलकुल निगले हैं और सिधन उन्हीं लोकों में से किसी एक की निवासिनी थी। पर आप मेरी बातों का मतलब शायद नहीं समझ रहे हैं?'

'नहीं, खूब अच्छी तरह समझता हूँ' युवक बोला, 'एक बार मुझे भी एक सुन्दरी मिली थी, जो किसी दूसरे ही लोक की प्रतीत होती थी।'

'पर मैं समझ न सकी' लोता पुन अपना किस्सा कहने लगी, 'दूसरे लोक की होने पर भी सिधन क्यों नहीं जान पाई कि मैं परमात्मा की वाणी प्रकाशित करने के लिये नियुक्त की गई हूँ। अन विचार करने के लिये मैं चर्च के घटाघर की ओर चुपचाप गिसक गई। किन्तु शीघ्र ही मेरी सखियाँ वहाँ आ गयीं और व्यग मिश्रित स्वर में मजाक उड़ाने लगीं। 'यह देखो लोता इसलिये एकान्त में बैठी रो रही है कि सिधन उसकी ओर आँख भी नहीं उठाती'—एक लड़की बोली, 'जरा लोता के बालों का



तो मुआयना करो—कैसे उलझ रहे हैं, मानो कोई जगनी  
झाड़ी हा।'

'मैं चुपचाप उनकी मञ्चारु भरी धातें सुनती रही। मैं सोच  
रही थी कि सिमन की उपेक्षा का कारण मेर उलझे घाल नहीं है।  
प्रत्युत यह है कि वह दूमरे लोक की निवासिनी है।

पर लड़कियो ने मेरा पिंड न छोडा! 'जरा इसकी सुन  
तो देखो।' एक कहने लगी, 'न बदन में ढग है, न कपड़ों में।  
और आवाज कैसी है मानो कोई कौवा चिन्हा रहा है।

मेरी सहनशीलता विस्तर पडी। उसकी तीखी धारें सुन  
कर मैं अब तक चुप थी। पर अब आखाँ से आँसु उमड़ आये  
और मैं सिसकियो भर भर कर रोने लगी। मैंने हाथों से अपनी  
मुह छिपा लिया।

किंतु दूमरे ही क्षण किसी ने अपने मुलायम हाथों से मेरा  
चेहरा खाल दिया और मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो अचानक  
ही मधुर प्रकाश की एक बाढ सी आ गई है।

और जब मैं अपनी आँखें ऊपर उठाई तो मेरे आश्चर्य  
का पारावार न रहा। क्योंकि स्वतः सिमन मेरा हाथ धामे  
मुस्करा रही थी और छुट्टी के बाद नदी में नौका बिहार करने का  
अनुरोध कर रही थी।

'ओह ! उस समय मेरे हृदय में अकस्मात् ही कितना सुख  
उमड़ आया। यद्यपि मैं जानती थी कि वह केवल दया के लिये ही  
इतना प्यार प्रदर्शित कर रही है। फिर भी मैं प्रसन्न हुए बिना  
न रही और उसी क्षण उसके प्रेम-पाश में बंध गई।'

मैं भी इसी क्षण उसके प्रेम पाश में बंध गया—सामने  
ने उम दिा का चुंबन और अल्हद-हास्य याद

ने हुए मन ही मन कहा—'यद्यपि मैं जानता हूँ कि वह केवल  
बाँके लिये ही प्यार प्रदर्शित कर रही थी।'

'आह सिग्रन !' वह अर्द्ध स्वागत स्वर में गुरगुनाने लगा, 'इस  
र वश में आकर मुझे क्यों तड़पा रही है ? मैं तो समझा था  
क मदा के लिये तुम्हारी स्मृति चित्त से भुजा चुका। तब वापस  
गो आ रही हो ? क्यों सता रही है ?'

बगल लोता आगे का हिस्सा बयान कर रही थी। कथा से  
बुझी पाकर जब हम दोनों किशती पर सवार हुई और मैंने डॉड  
प्रना शुरू किया, तो उसने उत्सुकता के साथ पूछा—'क्या  
मुझे ही हम दिन मेरे मकान पर वह स्वर्गीय सगोन सुना था ?'

और घटना का किस्सा सुनाने के लिये वह अनुरोध करने लगी।  
मैंने सब कुछ कह सुनाया और बताया कि किसी दिन सप्ताह का  
दिग्ग सदेश सुनाऊंगी। पर वह न हमी न आश्चर्यान्वित हुई।

निरुत्तरता के साथ बेअशी, 'लोता मेरी तो मजबूत प्रवृत्त कामना  
यह है कि अपना जीवन योग-प्रतिष्ठित मनुष्यों की सेवा में अर्पण  
करूँ। मैं चाहती हूँ कि नस धन-र काठ और धन-जैन भय-  
कर वापियों से पौंडिन मनुष्यों की कुछ मदद करूँ और यदि  
यह न कर सकूँ तो कम-से-कम अग, गुरुगों, और बहियों की ही  
सेवा में जीवन व्यतीत करूँ। पर मुझे भय है, माता पिता ऐसे

काम में मुझे न जुटान देंगे।'  
ओह ! जब उसने वह बात कही, तब वह कितनी सुन्दर  
मतीत हुई थी। कितनी महान !

समने बैठे हुए युवक की ओर एक अर्द्ध मुन प्रकाश से बमक  
पठे। आपकी कहान, सुनकर मैं कितना प्रसन्न हो रहा हूँ।  
आप कल्पना भी नहीं कर सकतीं। वह ली की और  
केता।

'सचमुच ?' जोता प्रसन्न होकर कहने लगी, 'मैं तो  
भी, आप सुनते सुनते ऊब उठे हैं।'

'नहीं-नहीं ऐसा मत हो। उसके समय में यदि  
भर तार्ते करोगी तो भी मुझे सताध न होगा।' वह जोता  
क्या हुआ ? उसी दिन से आप दोनों गिनता कपास में  
गई ?'

'हाँ, जोता कहने लगी, 'उस दिन के बाद ज्योंही मरुत  
छुट्टी मिलती, हम दोनों किशती पर जा बैठती। वह नाक में कंध  
इधर उधर तैरना बहुत पसन्द करती थी। उस न जहाँ-जहाँ  
रल गाड़ियों में बंठने की चाह थी, न गाड़ी घोड़ों पर सवार होने  
की ही परवाह। वह तो एक छोटी सी किशती में बैठना ही सारे  
अधिक पसन्द करती थी और उसके टिज में यदि कोई पक्ष  
चस्कठा थी, तो सिर्फ यही कि वह एक बार समुद्र के दूरत धरत  
वाहती थी।'

सामने बैठे हुए अजनबी ने अपना मस्तक मुकाकर हाथों  
में अपना मुह ढाँप लिया। 'आह सचमुच ! समुद्र देखने की  
उसे कितनी प्रबल इच्छा थी, वह मन ही मन कहने लगी  
'उसने बताया था कि पदरु चर्प की थी, तभी से हमक मन में  
समुद्र दर्शन की कामना जग पड़ी थी। और भगवान ने उसकी  
इच्छा पूर्ति करने का सौभाग्य मुझे ही सौंपा था। मैं अपने  
जीवन में कम-से-कम एक सत्कार्य तो अवश्य किया है कि कि  
की चिर शक्ति यामना पूरी करान में सहायता दे सका।'

इधर जोता बिना रुक ही अपनी कहानी कहती रही, क्योंकि  
जोता की ओर से प्रोत्साहन मिलने की उसे आवश्यकता न थी  
'तब मैं यह सोचकर निराश होने लगी कि पढ़ाई समाप्त करने के  
बाद हम दोनों हमेशा के लिये एक दूसरे से विछुड़ जायगी।'

नहीं, सिमन उस प्रीष्म भर प्रतिदिन आती रही और हम घटा तक नाथ की सैर किया करती थीं। इस तरह कई यौष्म और चले गए। वह मेरे जीवन का सबसे अधिक सुखमय था।

युवक के मुह से एक निश्वास निकल पड़ी। सिमन !' अपना आप गुनगुनाया, 'यौवन और सौंदर्य का यह अनि रूप लेकर तुम क्या वाग्जार मेरे स्मृति-पट पर आ रखी हो ?' आह ! मैंने तुम्हें भुजाने का कितना प्रयत्न किया ? नना धार कल्पना की, माना तुम बूढ़ा हो चली हा, बच्चों की हो, पति को प्यार करनेवाली प्रौढ़ा पत्नी हो। तब क्या पुन वन की नवीनता समेट कर आ रही हो ?'

और अर में तुम्हें बतलाऊंगी, किस तरह उस मित्रता का वानक अर हो गया।—लोता न कहा, 'चार बप नौ म विहार ने क बाद एक दिन मैं दापडर क समय घर पर बैठी थी। उन के सुझाने दिन ये और उस दिन शायद एतवार था। मैं की खिड़की क आग बैठी इधर उधर आँखें दौड़ा रही थी। अरुमात् मुझे ऐसा प्रतीत हुआ माने सामनवारों टीले पर क लाज रग का बगला बना हुआ है। मैं समझ न सकी, सहमा इ भय इमारत उसो दिन दोरहर का यहाँ कैसे बन गई। उस के बनावट भी बड़े अजीब ढंग की थी। दुमजिला मकान था। क बाजू चौपाल और खलिहान थे, दूसरा ओर रसाइ घर और मस्तक। सामने नाशपाती के कुदर पुरान वृक्ष थे। समीप ही क लनी चौड़ी प्यारी थी, जिमकी दीवारें पथर की पनी थीं और ऊपर एक छाटो-सी कोठरी थी। पर सबसे अजीब ने का एक वेदगा वृक्ष था, जो मोट तने

डाजी । पर किसी को भी पता न चला कि पादरी को मानेवाला कौन था, न उन्होंने अपने पाप का प्रायश्चित्त ही किया । मुर्ते हैं, तभी से वहाँ के निवासियों को एक तरह का शाप लग गया है कि भविष्य में हंगर का प्रत्येक निवासी अफाल मृत्यु से मरेगा । ”

‘वाह ! यह कहाँ का न्याय है ?’ मेरी मा धोल उठी—‘अपराधी के साथ-साथ निर्दोषी भी मारे जाय ?’

‘हां, मुझे भी यह बात समझ में नहीं आती’—वह बोला, ‘किंतु इसमें सदेह नहीं कि हमारे परिवार के लोग अधिकतर अपने ही हाथों मरते हैं । कहते हैं कि इसका कारण एक वृद्ध है, जो पादरी के हत्यार की माथा और उस मामले के गुम रहस्य से परिचित भी थी । उसने ही अपने हाथों में फाटकर एक खम्बे के नीचे पत्थर खोदकर वह जाश दफनायी थी । उसके बाद वह घरवारी की उपरवाली कोठरी में बैठकर रात दिन उस खम्बे का पहरा दिया करती थी, ताकि कोई उसे उल्टाडकर न फेंक । कुछ तांगे तो कहते हैं कि आज भी वह कोठरी में बैठी खम्बे की ओर ताक रही है । और यद्यपि हंगर-परिवार के लोग अब मूल निवास स्थान छोड़ कर इधर उधर भटकते फिरते हैं, तथापि उनका वह पिंड नहीं छोड़ती । जहां कहीं वे लोग जाते हैं, उन्हें वह बुढ़िया नजर

141 लगती है । मानो उन लोगों में से एक को भी

भोगने से नहीं उचने दगी ।

‘पर यह सर्वथा असंभव है कि हमेशा इसी तरह होता

धोल उठी, ‘कुछ न कुछ रास्ता तो होगा ही, जिस का अंत हो जाय ।’

‘आपका कहना सत्य है’, वह बोला, ‘और हम लोगों

इसका प्रयत्न भी कर चुके हैं । दो व्यक्तियों ने

कि यदि पादरी हो जायं तो सभव है कि यह शाप मिट जाय । पर यह बात भी उस बृद्धा के गले न उतरी । क्योंकि ज्योंही वे पादरी बने, उनमें-से एक की मृत्यु हो गई ।'

'और दूसरा ?' मैंने उत्सुक होकर पूछा ।

'वह आज तक एन्तम का पादरी है । सुना है, यहीं आपके गाँव के पुरोहित की लड़की से उसने शादी की है ।'

इसी समय सामने बैठा हुआ नवयुवक सहसा चौकर उछल पडा । गाड़ी एक छोटे से स्टेशन के प्लेटफार्म पर आकर ठहर गई थी । युवक हड़बडा कर रैक से अपना सामान उतारने लगा । पर जोता को उसकी आहट भी नहीं मालूम हुई । बोलते बोलते उसकी आँखें तैरने लगीं और चेहरे पर एक अजीब भाव झलकने लगा । वह अटकती बोली, 'ओह ! मुझे कुछ नजर आ रहा है ' बर्फ और एक काला तबू '

तब तक वह अजनबी दिवने से बाहर निकल कर जल्दी चली

डाजी। पर किसी को भी पना न चला कि पादरी को मारनेवाला कौन था, न उन्होंने अपने पाप का प्रायश्चित्त ही किया। सुनते हैं, तभी से वहाँ क निवासियों को एक तरह का शाप लग गया है कि भविष्य में हगर का प्रत्येक निवासी अकाल मृत्यु से मरगा' . . .

'वाह ! यह कहाँ का न्याय है ?' मेरी मा बोल उठी—'अप गधी के साथ साथ निर्दोषी भी मारे जाय ?'

'हा, मुझे भी यह बात समझ में नहीं आती'—वह बोला, 'किंतु इसमें संदेह नहीं कि हमारा परिवार क लोग अधिकतर अपने ही हाथों मरते हैं। कहते हैं कि इसका कारण एक वृद्ध है, जा पादरी के मरने की मा थी और उस मामले के गुप्त रहस्य से उसने ही अपने हाथ से फाटक क एक खंभे वह जाश दुकनायी थी। उसके बाद वह कोठरी में बैठकर गत दिन उस खंभे का पहरा जा कि कोई उसे बग़ाडकर न फेंक। कुछ लोग आज भी वह कोठरी में बैठे खंभे की ओर ताक रहे। यद्यपि हगर-परिवार के लोग प्रम मूल-निवास-स्थान इधर उधर भटकत फिरते हैं, तथापि उनका वह पिंड छोड़ती। जहा कहीं वे लोग जाते हैं, उन्हें वह चुड़िया नजर न लगती है। मानो उन लोगों में से एक को भी वह पाप की सजा भोगने से नहीं बचने दगी।

'पर यह सर्वथा असंभव है कि हमेशा इसी तरह होता रहेगा', माँ पुनः बोल उठी, 'कुछ-न कुछ रास्ता तो होगा ही, जिसमें उस शाप का अंत हो जाय।'

'आपका कहना सत्य है', वह बोला, 'और हम लोगों में-से कुछ व्यक्ति इसका प्रयत्न भी कर चुके हैं। दो व्यक्तियों ने सोचा

कि यदि पादरी हो जायं तो सभव है कि यह शाप मिट जाय । पर यह बात भी उस वृद्धा के गले न उतरी । क्योंकि ज्योंही वे पादरी बने, उनमें-से एक की मृत्यु हो गई ।

'और दूसरा ?' मैंने उत्सुक होकर पूछा ।

'वह आज्ञातक एजम का पादरी है । सुना है, यहीं आपके गाँव के पुरोहित की लड़की से उसने शादी की है ।'

इसी समय सामने बैठा हुआ नवयुवक सहसा चौंकर उछल पड़ा । गाड़ी एक छोटे से स्टेशन के प्लेटफार्म पर आकर ठहर गई थी । युवक हड़बड़ा कर रैक से अपना सामान उतारने लगा । पर लोता को उसकी आहट भी नहीं मालूम हुई । बोलते बोलते उसकी आँखें तैरने लगीं और चेहरे पर एक अजीब भाव झलकने लगा । वह अटकती धोली, 'ओह ! मुझे कुछ नजर आ रहा है बर्फ और एक काला तबू '

तब तक वह अजनबी डिब्बे से बाहर निकल कर जल्दी जल्दी कदम बढ़ाता हुआ प्लेटफार्म के फाटक पर पहुँच गया । जब लोता का होश आया, वह युवक की नलाश में इधर-उधर देखने लगी । किंतु पहले ही वह अजनबी स्टेशन से बाहर निकल गया था ।



डाजी । पर किसी को भी पता न चला कि पादरी को मारनेवाला कौन था, न उन्होंने अपने पाप का प्रायश्चित्त ही किया । मुनते हैं, तभी से वहाँ के निवासियों को एक तरह का शाप लग गया है कि भविष्य में हंगर का प्रत्येक निवासी अकाल मृत्यु से मरगा ।

‘वाह ! यह कहाँ का न्याय है ?’ मेरी मा बोल उठी—‘अपराधी के साथ साथ निर्दोषी भी मार जाय ?’

‘हा, मुझे भी यह बात समझ में नहीं आती’—वह बोला, ‘किंतु इसमें सदेह नहीं कि हमारा परिवार क लोग अधिकतर अपने ही हाथों मरते हैं । कहते हैं कि इसका कारण एक वृद्धा है, जो पादरी के हत्यारे की मा था और उस मामले के गुप्त रहस्य से परिचित भी थी । उसने ही अपने हाथों से फाटक क एक खम्भे के नीचे धन्न खोदकर वह जाश दफनायी थी । उसके बाद वह बखारी की उपरवाली कोठरी में बैठकर रात दिन उस खम्भे का पहरा न करती थी, ताकि कोई उसे चपटाकर न फेंक । कुछ लोग तो कहते हैं कि आज भी वह कोठरी में बैठी खम्भे की ओर ताक रही है । और यद्यपि हंगर-परिवार के लोग अब मूल निवास स्थान छोड़ कर इतर उधर भटकते फिरते हैं, तथापि उनका वह पिंड नहीं छोड़ती । जहा कहीं वे लोग जाते हैं, उन्हें वह बुढ़िया नजर आने लगती है । मानो उन लोगो मे से एक को भी वह पाप की सजा भोगने से नहीं बचने दगी ।

‘पर यह सर्वथा असंभव है कि हमेशा इसी तरह होता रहेगा’, बोल उठी, ‘कुछ न कुछ गस्ता तो होगा ही, जिसमें उस हो जाय ।’

‘कहना सत्य है’, वह बोला, ‘और हम लोगों में-से इसका प्रयत्न भी कर चुके हैं । दो व्यक्तियों ने सोचा

कि यदि पादरी हो जाय तो संभव है कि यह शाप मिट जाय ।  
पर यह बात भी उस वृद्धा के गले न चरती । क्योंकि ज्योंही वे  
पादरी बन, उनमें-से एक की मृत्यु हो गई ।

'और दूसरा ?' मैंने बत्सुक होकर पूछा ।

'वह आज तक एजम का पादरी है । सुना है, यहाँ आ-  
गाँव के पुरोहित की लड़की से उसन शादी की है ।'

इसी समय सामने बैठा हुआ नवयुवक सहमा चौंकर चकृत  
पड़ा । गाड़ी एक छोटे स स्टेशन के प्लेटफार्म पर आकर ठहर  
गई थी । युवक दड़बड़ा कर रैक से अपना सामान उतारने लगा ।  
पर लोता को उसकी आहट भी नहीं मालूम हुई । बोलते बोलते  
उसकी आँखें तैरने लगीं और चेहरे पर एक अजीब भाव झलकन  
लगा । वह अटकती बोली, 'ओह ! मुझे कुछ खबर आ रहा है '

तब तक वह अजनबी दिवने से बाहर निकल कर जल्दी जल्दी  
फर्क बढ़ाता हुआ प्लेटफार्म के फाटक पर पहुँच गया । जन लोता  
का होश आया, वह युवक की तराश में इधर-उधर देखने लगी ।  
किंतु पहले ही वह अजनबी स्टेशन से बाहर निकल गया था ।

घटोरने का प्रयत्न करने लगी। 'सैर जो बड़ा होगा, सो तो होगा ही।' वह चित्ता दधाने के लिये कहने लगी, 'और कुछ नहीं तो इस यात्रा द्वारा दुनिया दखना तो मिला। जब माता पिता मर गये और भाई ने मेरी जायदाद हड़प कर, रहने के लिये वह बेटूदी काठगी दी, तो घर ठहर कर जीवन-प्रयाद करने में लाभ ही क्या था? उधर दिज में शांति न था। रात दिन सिधन के लिये कोई आनन्दिक शक्ति मुझे तग किया करती थी" ।

'वह देखिये, गिजाघर दिखलाई पड़ता है। हम लाग करीब करीब आ पहुँचे'—इसी समय गाड़ीवान वृद्धों के झुंमुट में छिपी हुई एक मीनार की ओर चाबुक से संकेत करता हुआ बोल उठा। 'दाया भर बाद सड़क ढालू होन लगा और नीचे नदी की टढी-मेढी घाटी में वृक्षा के झुंड और रिसानों के मकानों के साथ साथ लफड़ा का एक गिजाघर नजर आने लगा।

पर वहाँ पहुँचने के पूर्व गाड़ीवान फिर चाबुक उठाकर चिछा बा, 'और वह ~~सिद्धा~~ गिजाघरों मालकिन ही सड़क पर आ जा रही हैं।' इतना पाकर तो सुनकर साहस न जाने

पर तब तक वे इतने समीप आ गए कि सिगन ने उनकी आवाज सुन ली। वह मुड़कर देखने लगी और एक अजनबी स्त्री को गाढीवान के साथ खींच-तानी करते देख, उसके गभीर चेहर पर एक हल्की मुसकान दौड़ गई। किंतु पाण पर बाद वह मुस्करा-हट न जाने कहीं विलुप्त हो गई और छाती पर हाथ रखकर वह गाड़ी की ओर लपकी। 'अर लोता, तुम कैसे?' वह आँसु बहाती हुई चिल्ला उठी।

लोता ने सोचा, वे आँसु उपाजभ सूचक थे। क्योंकि पुत्री क पैदा होने समय वह सिगन का सहायता नहीं दे सकी। वह गाड़ी से उछलकर कूद पड़ी और पाण भर बाद ही पामा की भीख मँगाने सखी क चरणों में लाट जाती, यदि उसक पहले ही सिगन न उसे बाहु पाश में कसकर न बाँध लिया हाता!

दाना की आँखों से आँसु की धाराएँ उमड़ चलीं। लोता क लिये तो निस्संदह यह जीवन की सन्तति महान् सौभाग्य की घडी थी। उसक आनन्द का पारानार न था, क्योंकि सखी ने प्रसन्न होकर उसे अपना लिया था। पर साथ ही उसके मन में यह विचार भी बठ रहा था—'यदि मुक्त जैसी अभागिन को देखकर सिगन की आँखों में आनदाश्रु उमड़ पड़ते हैं तो जरूर उसके जीवन में सुख का अभाव है और कौटा उसके दिल में गड़

बटोरने का प्रयत्न करने लगी। 'तैर जो बढ़ा होगा, सो तो होगा ही।' वह चिंता दधाने के लिये कहने लगी, 'और कुछ नहीं तो इस यात्रा द्वारा दुनिया, देखना तो मिला। जब माता पिता मर गये और भाई ने मेरी जायदाद हड़प कर, रहने के लिये वह बेदुदी कोठरी दी, तो घर ठहर कर जीवन-बर्बाद करने में लाभ ही क्या था? उधर दिल में शांति न था। रात दिन सिग्नल के लिये कोई आंतरिक शक्ति मुझे तग किधा करती थी'

'वह देखिए, गिजाँवर दिखलाई पड़ता है। हम जोग करीब करीब आ पहुँचे'—इसी समय गाड़ीवान वृत्तों के झुगमुट में छिपी हुई एक मीनार की ओर चाबुक से सफा करत हुआ बाल उठा। क्षण भर बाद सड़क ढालू होत लगी और नीचे नदी की टढ़ी-मेढ़ी घाटी में वृक्षा के झुंड और किमानों के मकानों के साथ साथ लकड़ों का एक गिजाँवर नजर आत लगा।

पर वहाँ पहुँचने के पूर्व गाड़ीवान फिर चाबुक उठाकर चिंता का, 'और वह देखिए। खुद गिजे की मालकिन ही मडक पर ली जा रही हैं।' इन शब्दों को सुनकर लोता का साहस न जाने हँसिखर गया और उस साँस लेने में गो दिक्कत होत लगी। 'अरे! मैं क्या साबकर यहाँ तक चली याद?'—वह साचने लगी, 'यदि वह मुझे पहचान ही न सही तो कितना मजाक होगा, कैसी पिल्ली उड़ाई जायगी।'

गाड़ीवान ने साचा, यह स्त्री पादरी के यहाँ नौकरी करने आई है। अतएव मुझपर पूछा, 'गाड़ी रोक दें, जिसमें आप मालकिन से मिल सकें?'

लोता की रही सही हिम्मत भा डेर हो गई। 'कर ला!' वह लगाम छीनती हुई बोली, 'हम रास्ता मुँह से जाना नहीं चाहती।'

पर तब तक वे इनने समीप आ गए कि सिमन ने उनकी आवाज सुन ली। वह मुड़कर देखने लगी और एक अजनबी स्त्री को गाड़ीगान के साथ छींचनतानी फरते देख, उसके गमीर चेहर पर एक हल्की मुसकान दौड़ गई। किंतु क्षण पर बाद वह मुस्करा-हट न आने कहीं विलुप्त हो गई और छाती पर हाथ रखकर वह गाड़ी की ओर लपकी। 'अर जोता, तुम कैसे ?' वह आँसू बहाती हुई चिल्ला उठी।

जोता ने सोचा, व आँसू उपाजभ सूचक थे। क्योंकि पुत्री के पैदा होत समय वह सिमन का सहायता नहीं दे सकी। वह गाड़ी से उछलकर कूद पड़ी और क्षण भर बाद ही कामा की भीख मँगाने सखी के चरणों में लाट जाती, यदि वसक पहले ही सिमन ने उसे बाहु पाश में कसकर न धीरे लिया होता।

दार्ता की आँखों से आँसू की धाराएँ उमड़ चलीं। जोता के लिये तो निस्संदेह यह जीवन की सबसे महान् सौभाग्य की घड़ी थी। उसका आनन्द का पारावार न था, क्योंकि सखी ने प्रसन्न होकर उसे अपना लिया था। पर माघ ही उसके मन में यह विचार भी उठ रहा था—'यदि मुझ जैसी अभागिन को देखकर सिमन की आँखों में आनदाश्रु उमड़ पड़ते हैं तो जरूर उसके जीवन में सुख और शांति का अभाव है। अवश्य कोई काँटा उसके दिल में गड़ रहा है।'

यथायक पादरी ने उनके हाव-भाव में परिवर्तन देखा। पता नहीं, वह कौन सी बात थी जो उन्हें असामान्य प्रतीत हुई। संभव है कि मुनीम के स्वर में उत्तेजना आने लगी हो अथवा सिग्रन भी ही मुख-मुद्रा परिवर्तित दृष्टिगत होने लगी हो। कह नहीं सकते वह आकस्मिक परिवर्तन क्या था। पर पादरी को उनके अगठग में कुछ अन्तर नजर आया, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। वे अखबार पटक कर उठ खड़े हुए और साँस रोककर किवाड़ की ओट से ताकने लगे।

मुनीम अब भी रद्द-कास संस्था की नसों के बारे में कुछ कह रहा था। क्षण भर बाद सिग्रन के गालों पर आँसु की दो बूँदें लुढ़कती हुईं नजर आईं। तब धीरे धीरे कई बूँदें टपकीं और अदृश्य हो गईं। मुनीम ने उन आँसुओं को देखा, पर बहुत देर तक वह उसी स्वर में बोलता रहा, मानो सिग्रन का अवेश का उसे पता ही न हो।

तब यथायक वह इतना आगे झुक गया कि उसके हाथ सिग्रन के शरीर से लगभग छू गए। 'अच्छा! तो यही आपकी अतृप्त आकांक्षा है? यानी आप भी उस काम में भाग लेना चाहती हैं?'—वह बोला।

'ओह! पर सफल कैसे हो सकती हूँ?' वह अपनी बाँहें सामने फैलाती हुई बोली। 'मैं हृदय में चाहती हूँ कि कुछ-न कुछ करूँ। क्योंकि इस घिरोँट के सुख और आराम से मैं ऊब चठी हूँ। पर क्या करूँ, लाचार हूँ!'

र जाने में भी क्या आप बिलकुल असमर्थ हैं?

यदि कुछ दिनों के लिये मैं मुक्त हो जाती!—खी-  
हाथ छटाती हुई बोली, आखिरकार मैं भी इंसान हूँ।

कम से-कम एक घार ता मुझे स्वतंत्रतापूर्वक काम करने का मौका मिलना चाहिए ।'

मुनीम ने उसक हाथ अपने हाथों में पकड़कर हृत्प से लगा लिये । 'आप सच कहती हैं'—वह धीमी आवाज में बोला, आपको भी स्वतंत्रतापूर्वक रहने का वतना ही हक है, जितना दूसरों को ।'

किंतु इसी समय पीछे की ओर किसी के पैरों की आहट सुन दोनों चौंक पड़े । बैठक का दरवाजा एक घडाके की आवाज के साथ खुल पडा और पादरी उग्र रूप धारण कर मुनीम की प्यार लपक ।

हडबड़ाकर दानों चोरल वठे । मुनीम तो इतना भयभात हो गया कि अग समेट कर भौंगी बिछो का तरह सिकुड़ गया ।

'भागा ! जल्दी ।' सिग्रन चिल्ला उठी और भरपूर ताकत से पति के हाथ पकड़कर पूत्रा, एडवर्ड ! यह क्या मामला है ?'

इम बीच मुनीम साहस बटारकर उठा और दरवाजे की ओर जान लेकर भागा ।

पादरी ने जोर का धक्का देकर अपने हाथ छुड़ा लिए । स्त्री मेज से टकराती हुई पछाड़ खाकर जमीन पर गिर पडी । पर पति ने उसकी ओर ध्यान भी न दिया । भूखे भेड़िए की तरह वे भगोड़े के पीछे लपक । एक क्षण में दानो दालान और वरामदा पार करते हुए हात से बाहर निकल गए ।

उसी समय दरवाजे का घडाका, पैरों की भगदड़, पादरी की लपकार और सिग्रन की चीत्कार सुनकर, रसोई घर में बैठी हुई लोता चौककर उल्लस पडी । दरवाजा खोलकर उसने बाहर दे कि हाते में दा आदमी धेतहाशा भागे जा रहे हैं । क्षण भर वे दानों अघकार में विलीन होकर दृष्टि से ओकल हो गए



भगदड़ का कालाह्न नौकरों के कमर में भी सुनाई पड़ा। उन्होंने अपनी मांलकिन को लडखड़ाती हुई सामने आते देखा। उसके बाल बिखर रहे थे, कपड़े तितर-बितर हो रहे थे और जलाट से खून की बूँदें टपक रही थीं।

घबराकर वे उसकी ओर दौड़े। पर सियन ने मना करते हुए कहा—'मेरी चिंता न करो। पहले उन दोनों के पीछे दौड़ो, अन्यथा वे दूसरे को मार डालेंगे।'

वे भौंचकड़े होकर ताकने लगे।

'क्या ताक रहे हो।' वह चिल्ला उठी, जाओ जल्दी, नहीं तो दोनों को जिंदा न पाओगे।'

एक नौकर दौड़ा। बाकी दो मांलकिन की देख-भाल करने के लिये वहीं रुक गए। वे एक कुर्सी जाए, क्योंकि उसके पीछे ऐसे काँप रहे थे, मानो नीचे की जमीन हिल उठी हो।

'लोता के पास ले चलो! लोता के पास।' वह बच्चे की तरह राती हुई बोली। नौकरों ने उसे बाँहों पर उठा लिया और लोता के कमर की ओर ले चले। पर तब तक लोता स्वयं जपक कर सामने आ पहुँची।

'ओह लोता! मैंने कुछ भी न किया! सियन चिल्ला उठी, 'मैं मुनीम से बातें कर रही थी और वे समीप ही बैठक में छिपकर देख रहे थे।'

यकायक उसके चेहर पर मुर्दनी छा गई। लाता पानी लाने दौड़ी। फौरन घाव घोबर उसने पट्टी बांध-दा। चोट सख्त न थी, न घाव ही गहरा था। पर आश्रय यह थी कि सियन का मन न था। लगानार वह यही शब्द बार-बार कह रही थी—  
'मैंने कुछ न किया, केवल वससे बातें कर रही थी और वह कमर से देख रहे थे।'

'सिग्रन ! तनिक शांति रखो' जोता ने प्यार भरी आवाज में कहा, 'मुझे भय है, तुम कहीं बीमार न पड़ जाओ। ठहरो, बांदी स तुम्हाग बिस्तर तैयार करने के लिए कइ आती हूँ। तुम्हें कुछ दूर सो लेना चाहिए।'

'नहीं, नहीं, मैं वहाँ कदापि न जाऊगी।' सिग्रन योल उठी, 'मैं वस घर में अथ पैर भी न रखूंगी।'

'पर प्यागी सिग्रन ! तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए।'

'नहीं, मैं यहीं तुम्हारी खाट पर सो रहूंगी जोता ! मैं जानती हूँ, मुझे कई दिनों तक बिस्तर पर पड़े रहना पड़ेगा। अतएव मुझे ऐसा स्थान ही चाहिए, जहाँ किसी तरह का भय न हो।'

काण भर बाद पुन वह बकने लगी—'ओह ! मैंने कोई भी अपराध नहीं किया। कबज उससे कुछ दूर वातचीत की और व जपक कर टूट पड़े।'

वह आसपास खड़े हुए लोगों की ओर इस तरह नत्र विस्फारित कर देखने लगी मानो आश्चर्य कर रही हो कि क्योंकि वे लोग उसके शब्दों का अर्थ नहीं समझत।

जोता ने दोनों नौकरों से सलाह लेकर आतिफार यहाँ निश्चित किया कि बीमार की मर्जी माफिक चलना ही श्रेयस्कर है। नौकरानी फौरन मकान की ओर दौड़ी और चादर, कबज तकिए आदि लेकर वापस लौटी। सिग्रन जल्दी जल्दी कपड़े उतारने लगी। बिस्तर तैयार होने के पहले ही वह कपड़े निकाल कर सोने के जिये तैयार हो गई।

बिस्तर पर लेटते ही उसने जोता को अपने पाम आने का संकेत किया।

'अभी सोओ मत जोता !' वह अनुरोध करती हुई बोली 'मेज के पास बैठ जाओ और मुझे अपनी बाइबल पढ़

उसने सच-सच घंटा दिया कि कि मिमन खुन आराम के साथ सा रही है। न उसे चुखार है, न किसी तरह का दर्द ही है और तिर की चोट तो नहीं के बराबर है।

पर जब पादरी ने पत्नी को मकान में लाने का सवाज उठाया तो लोता ने साफ हन्कार कर दिया।

'क्यों?' पति ने पूछा, क्या वह मुझसे भयभीत है ?'

'बरा सत्र रखिए' लोता वाली, 'अभी कमजोर हैं। अन्धरी होते ही वह खुद चली आएँगी।

बीमार क मुँह से एक निश्वास निकल पड़ी। उसके चेहरे पर न सिर्फ शारीरिक, प्रत्युत एक मानसिक वेदना के भी चिह्न झलक रहे थे।

'ओह ! नहीं,' वह निराश होकर बोला, 'अन वह वापस मेरे पास नहीं आयगी। उसे आने का साहस न होगा।'

दोपहर बाद जब डॉक्टर आया, तो उसने भी सिमन के बारे में करीब करीब वही बातें कह सुनाई। 'मैं आपकी पत्नी की बीमारी को समझ ही नहीं पाता' वह पादरी से कहने लगा, 'सभव है, कोई दूसरा राग हो। पर आपको फिलहाल अधिक छेड़ छ्वाड़ नहीं करना चाहिए। जो कुछ उनका मर्जी हो, वही काम कीजिए। पता नहीं, उनके कौन-सा राग है। सभव है, किसी छूत की बीमारी का कीटाणु उनके शरीर में प्रवेश कर गया हो, जो कुछ दिन बाद भयकर रूप धारण कर ले। अतएव उनके संबन्ध में विशेष सावधान रहिएगा।'

इस तरह करीब एक सप्ताह बीत गया और स्थिति में कुछ भी परिवर्तन न हुआ। प्रति दिन चौकीदार के घर से वह लडका पत्र चुपके-चुपके आता और लोता द्वारा वापस ज्यों-का-त्यों जाता। प्रतिदिन पादरी पत्नी का समाचार जानने के लिये

लोता वा बुलाते और सियन भी प्रतिदिन सुबह से शाम तक खटिया पर पड़े-पड़े खुराटे लिया करती। निद्रा नहीं आती, उस समय स्त्रीकृति सूचक भाव से सिर हिलाने लगती थी, मानो मन ही मन किसी बात का प्रस्ताव कर स्वयं ही उसका समर्थन कर रही हो। लोता भोप गई थी कि सौन के आचरण में वह अपने भविष्य का कार्यक्रम बना रही है। पर अभी तक सियन की योजनाओं का वास्तविक स्वरूप न जान सकी थी।

एक दिन सियन ने लोता को समीप बुलाकर कहा, 'सुनो, मकान में मेरे कमर की अमुक आलमारी में कुछ रुपये रखे हैं। जगमग छ सौ होंगे। यह सब मेरी ही सम्पत्ति है, दूसरों का इस पर कुछ भी हक नहीं है। यह रकम मैं, उन पैसों से बचा-बचा कर जमा की है, जो माता-पिता साज-गिरह के दिन मुझे देत रहे हैं। मुझे चिन्ता है, कोई उन रुपयों को चुग न ले, क्योंकि दिन भर मकान सुना पडा रहता है।'

दूसरे दिन सियन ने कुछ पढ़ने की इच्छा प्रकट की और जोता ने एक अखबार ला दिया। सियन दिन भर उस अखबार में छप हुए रत्न और जहाज-सम्बन्धी विज्ञापन देखती रही। जोता ने उसकी ओर ध्यान भी न दिया। किन्तु बाद में उसे सब बातों का रहस्य का अर्थ मालूम पडा कि क्यों उसने अपने रुपये मगाये थे, क्यों अखबारों में छपे हुए जहाजों के रास्ते और टाइम टेबल पढा करती थी।

इसी दमियान दम घन के साथ जाड़ा आ धमका। बर्फ गिरने लगी। सड़कें सफेद हो गईं। बगियों का खाइलदाना बर्द हो गया और उनके बट्टने बिना पादियों की स्नेज गाड़िया बर्फ पर फिमजने लगीं। टिडकी के बाहर बर्फ की लफेदी देखकर सियन को अपने माथके की याद हो आई। उत्तर की प्रपण सर्रा

दिल से चाहते हैं ।' लोता ने उसकी बातें सुनकर कहा ।

'नहीं, नहीं' तुम नहीं जानती हो लोता ।' सिमन बोल उठी, 'मैंने कभी उनके साथ विश्वासघात नहीं किया । उनके सिवा किसी का स्वप्न में भी ध्यान नहीं किया । फिर भी वे मेरा विश्वास नहीं करते । यही बात मेरे हृदय को छेदे डालती है ।'

'पर सिमन ! युगारस्था में सदेह, ईर्ष्या आदि स्वाभाविक हैं । तुम देखोगी कि ज्यों ज्यों जनानी ढलती जायगी, ये बातें भी अदृश्य होती जायंगी ।'

'नहीं ! नहीं !' तुम उनको नहीं पहचान पाई हो ।' सिमन बेचैन होकर कहने लगी, 'यह तो उनकी खान्दानी खासियत है । उनके परिवार के सभी व्यक्ति ऐसे ही हुए हैं । पचीसों बार उन्होंने डम बुगी लत को छोड़ने की कममें खाई, घर आखिर क्या फर्क पडा ? इसी उद्देश्य से एण्ड्रम त्राडकर इस भांडखण्ड में आ बसे । सोचा, इस परिवर्तन से दिल की बेचैनी ठण्डी हो जायगी । किन्तु यहाँ आकर जो नतीजा हुआ, वह देख ही चुकी हो, और मैं जानती हूँ कि उनकी भी दशा कम दयनीय नहीं है । उनके धार्मिक व्याख्यान अब हास्याम्पद हो चले हैं । लोग बिलकुल विश्वस्वी नहीं लेते । उनकी हालत अत्यन्त चिंताजनक है । पर भी क्या किसी दर्जे कम दुःखी हूँ ? मुझे उन्होंने धर कर दिया है कि चाहे वनात् मुझे जंजीर में बाँधकर जाय, तो भी उनकी ओर मैं ..

( १७ )

अगले दिन बीमारी का बहाना बनाकर सितन सुबह से शान्त तक खाट पर पड़ी रही। मितु रात्रि क भोजनोपरान्त जइ नौकर-चाकर सा गए, वह उठ खड़ी हुई और पोशाक पहन कर बगल क कमर में जा बैठी।

‘तबीयत तो ठीक है ? लोता ने चाकर पूछा।

‘बहुत अच्छी। बइ मुस्तुग कर बोली।

लोता भाप गई कि बीमारी का ढोंग रचकर वह घर से निकल भागने की तदवीर सोच रही है। पर, निश्चय न कर सकी, किछ सपाय से उसका अनर्थकारी सकल्प रोके। गत रात्रि की तरह आज भी वे दोनों घंटों तक जागती रहीं, मितु कज की तरह आज भावर्चीत का सिजसिला न छिड़ पाया, क्योंकि सितन न जान किस विचार में निमग्न होकर चुप्पी साधे बैठी थी और लोता ने

जोता इस तरह ताकने जगी मानो सिग्रन के मन का विचार ताड गई हो। किन्तु सिग्रन बिना डगमगाए कहती रही, 'और इसमें संशय नहीं कि हमें यह कोठरी छोड़नी होगी, क्योंकि यहाँ की प्रत्येक वस्तु रोग के कीटाणुओं से दूषित हो चुकी है। पर अब हम जायगी कहा? क्या वही पुराने मकान में—वही दुःखदाह कारागार में?'

'नहीं, पादरी अपनी गलती समझ गये हैं, अतएव वह मकान, अब दुःखदाह न होगा', लोता बोली, 'अब तो तुम्हारे सुख के दिन लौट रहे हैं। सिग्रन! ज्यो-ज्यो दिन बीतेंगे, तुम्हारे जीवन की समस्त चिन्ताएँ शांत हो जायँगी।'

सिग्रन झुंझकार चठ खड़ी हुई। 'बलो, हमें मृतक की शांति में विघ्न न डालना चाहिए।' वह जैप चठाकर बोली और साधिन का हाथ पकड़कर बगल के कमर की ओर बढ़ी। उस समय दीपक के प्रकाश में उसका सलोना मुख-मण्डल ऐसी विचित्र शोभा से जगमगा चठा कि लोता ठिठक कर वहीं खड़ी हो गई और उसके असाधारण सौंदर्य की प्रशंसा करती-हुई सोचने लगी—'सचमुच ही यह स्त्री एक दुर्लभ और अनमोल रत्न है।'

'लोता!' पास के कमरे में पहुँच कर सिग्रन बोली, 'हो परमात्मा ने तुम्हें किस चदेश्य से भेजा है? केवल कि आज-जैसी स... ने मुझे सहायता दे सको!'

लोता सिग्रन का... गई, किंतु वह शीघ्र

सामने घुटन टक झुक गई, लोता ! मैंने एडवर्ड से एक बार  
 वादा किया था कि मृत्यु के सिवा कोई भी मुझे उनसे विभिन्न न  
 कर सगा, और आज तक वह वादा मैं अक्षरशः निभाया।  
 प्रतिष्ठा भा करने की अपेक्षा मर जाना लायक दर्जे वेदतर  
 है। आज परमात्मा ने पुकार सुनकर ऐसा सुन्दर अवसर  
 उपस्थित कर दिया है कि वादे की एक लकीर भी तोड़े बिना मैं  
 सदा के लिये कृप कर सकती हूँ। जाननी हो वह क्या है ? मृत्यु !'  
 लोता कुर्सी से खड़ी होने के लिये छटपटान लगी, किन्तु सिग्रन  
 ने एक न सुना। उसने जोता को जबरन कुर्सी पर बिठा दिया  
 और कहना जारी रखा—'यह परमात्मा की ही कृपा समझो कि  
 एडवर्ड का दिग्ग दुःखाप बिना अब मैं चाहे जहाँ चा मरूँगी अन्यथा  
 योही भाग राडी होनी अथवा सबध विच्छेद कर लती तो क्या व  
 एक क्षण प लिये। भी सदन पर सकते ? ऐसी दशा में तो व  
 दुनियों क को जाने में मुझे हूँ दत और पा लेने पर या तो मुझे  
 ही मार डालत या स्वत ही मर जाते। पर अब जो रास्ता सुक  
 पडा है, उसपर अमसर होने से, न उनके क्रोध का भय है, न  
 संदेह का ही। सभव है, पचाध साल तक उन्हें रज रहे, किन्तु उस  
 रज में आ धरुवाहट न रहेगी, क्योंकि औरों को चाहे जिस  
 निगाह से दख, मृत्यु को तो सदिग्ध दृष्टि से देखना असंभव है।  
 गाराश यह कि हर तरह से इसमें उनकी भलाई ही है ।'  
 'सभव है, किन्तु तुम्हारी ?'  
 'भरी ? मी तो सबसे भारी भलाई इसी बात मे है, जिससे  
 सुखी हो सकें।' सिग्रन के ओठों पर स्वर्गीय ज्याति-बुल्य एक  
 कान झलकन लगी।  
 'पर इनका तो सबसे भारी सुख इसी में है कि तुम  
 र इनके घर की शोभा बढ़ाती रहो !'



जोता इस तरह ताकने लगी मानो सिग्रन के मन का विचार ताड़ गई हो। किन्तु सिग्रन बिना डगमगाए कहती रही, 'और इसमें शक नहीं कि हमें यह फोठरी छोड़नी होगी, क्योंकि यहाँ की प्रत्येक वस्तु रोग के कीटाणुओं से दूषित हो चुकी है। पर अब हम जायगी क्या? क्या उसी पुराने मकान में—वहीं दुखड़ा कागजार में?'

'नहीं, पादरी अपनी गलती समझ गये हैं, अतएव वह मकान अब दुखड़ाई न होगा', जोता बोली, 'अब तो तुम्हारे सुख के दिन लौट रहे हैं। सिग्रन! ज्यों-ज्यों दिन बीतेंगे, तुम्हारे जीवन की समस्त चिन्ताएं शांत हो जायंगी।'

सिग्रन झुककर उठ खड़ी हुई। 'चलो, हमें मृतक की शानि में विघ्न न डालना चाहिए।' वह जैप उठाकर बोली और साथिन का हाथ पकड़कर बगल के कमरे की ओर बढ़ी। उस समय दीपक के प्रकाश में उसका सलोना मुख मगदल ऐसी विचित्र आभा से जगमगा उठा कि जोता ठिठक कर वहीं खड़ी हो गई और उसके आसाधारण सौंदर्य की प्रशंसा करती हुई सोचने लगी—'सचमुच ही यह स्त्री एक दुर्लभ और अनमोल रत्न है।'

'जोता!' पास के कमरे में पहुँच कर सिग्रन बोली, 'जानती हो परमात्मा ने तुम्हें किस उद्देश्य से भेजा है? केवल इसीलिए कि आज-जैसी सकटावस्था में मुझे सहायता दे सको!'

जोता सिग्रन का आशय भाँप गई, किन्तु वह शीघ्र ही काबू में आनेवाली स्त्री न थी। बोली, 'क्या पता सिग्रन! शायद इसलिये भेजा हो कि आज-जैसी परिस्थिति में तुम्हारे गस्ते पर रोडे अटक सके!'

'ओह जोता, तुम नहीं जानती!'-सिग्रन आवेश में उठी और जोता को बेंच की कुर्सी पर बिठाकर

सामने घुम्न देर कुछ गई, लोता ! मैंने एहउंड से एक बार  
 बाना किया था कि मृत्यु के निम्ना कोई भी मुझे उनमें विभिन्न  
 कर सकगा, और आज तक वह वाग मैंने अक्षरशः निभाया ।  
 प्रतिष्ठा मर करन की अपत्ता मर जाना लाय ठजें अक्षर  
 है । आज परमात्मा ने पुकार सुनकर ऐसा सुन्दर अवसर  
 उपस्थित कर दिया है कि वाचे की एक तस्वीर भी तोंडे दिना में  
 सदा के लिये धूच कर सकती हूँ । जाननी हो वह क्या है ? मृत्यु ।  
 लोता कुर्सी स रखी होने के लिय छटपटान जगी, किन्तु मियन  
 ने एक न सुना । "सने जोता ओ चरण कुर्सी पर बिठा दिया  
 और कहना जारी रखा—'यह परमात्मा की ही कृपा समझो कि  
 एहउंड का दिन दुम्बाए बिना अथ मैं चाह जटों जा मरूंगी अन्यथा  
 योही भाग खोती होती अथवा सधध विच्छेद कर लेती तो क्या वे  
 एक क्षण क लिय ।भी सइन कर सकते ? एमो दशा में तो वे  
 दुनियाँ क होने जाने म मुझे हूँदते और पा लेने पर या तो मुझे  
 क्ष मार हाकने या स्वत ही मर जाते । पर अथ ओ राम्ता मम  
 पदा है, उसपर अमसर होने से, न उनके क्रोध का भय है, न  
 संदह का ही । मभव है, पचाय साल तक उन्हें रज रह, किन्तु उस  
 रज में अथ कहुवाइत न रहेगी, क्योंकि थौरों का चाहे जिन  
 निगाइ स देखें, मृत्यु को तो सन्निव दृष्टि से देखना असभव है ।  
 सारा यह कि हर तरह से इसमें उनही भज्राई हो है ..."  
 'सभव है, किन्तु तुम्हारी ?'  
 'मेरी ? मी तो सनसे भारी भज्राई इसी बात में है, जिसम  
 मैं सुखी हो सकूँ ।' सियन के ओठों पर स्वर्गाय अयावि दुःख एह  
 वृषभान मजकने लागी ।  
 'पर इनका ता सधमे भारी सुख इसी में है कि दुःख  
 हर उनके घर की शोभा बढ़ाती रहा !'

हमी समय लोका चीस वठी, क्योंकि सिमन पानी में डूबने पर फिर पुनिया के जगजे पर जा चुकी थी ।

'अरे ! अरे ! भगवान के नाम पर ऐसा न करो', चाटूराजा चिल्लाया और सिमन को प्रेर लपका । 'नहीं, मैं घर न लौटूंगी !' वह वही गद्दे-खड़े दृढ़ता के साथ बोली ।

'हो, हाँ, मत लौटिए । मैं किनासे एक शब्द भी न कहूँगा । आइए, गाड़ी में बैठ जाइए । मैं अगली सराय तक पहुँचा दूँगा, क्योंकि आप-जैसी सहिष्णु के लिये बर्क में पैदल चलना आसानी का काम नहीं है ।'

'आज तो सिमन सबसुच ही एक जादूगरनी बन गई। लोका ने आश्चर्य करते हुए सोचा, यह मनमाना नाम क्या है कि भी कोई पूं नहीं करता ।'



( १८ )

वह दिन जिसका श्रीगणेश सिंगन के पन्नायन से हुआ था, ऐसी  
जम्हा और उदासीन था कि लोता उसके अवसान की  
प्रतीक्षा करते करते ऊब उठी ।

सिगन का पहुँचाकर वह कुटिया में वापस आई, उस समय  
तीन पहर रात बीत चुकी थीं । सूर्योदय के पहले आगामी  
कठिनाई के लिये तैयार हो जाना आवश्यक था । इसलिए मृगक  
क फपड़े-लत्ते जलाकर उसने अस्तव्यस्त कमरे क पर्दे पूर्ववत्  
लटका दिये और भय से कौपती हुई पटोस क कमरे की ओर  
बढ़ी, जहाँ उस अजनबी औरत की लाश अघेरे में पड़ी थी ।  
लोता ऐसी डरपोक तो न थी कि कुर्दे के नजदीक जाकर डर  
जाती, किंतु यह सोचकर कौप रही थी कि अनुचित बर्ताव न  
मृगक की आत्मा कहीं अप्रसन्न न हो उठे । अतएव रुई  
खर्मीप जाकर उसने सबसे पहले दातीन धार प्रायना

की तरफ़ मिसक-मिसक कर रोने लगी, 'ओह! मुझे क्याओ, मुझे शरण दो !'

रान उसके कंधों पर हाथ धरकर झुक गया। इतना अधिक झुक गया कि उसका कपोल सिमन के म्निगध ओठों से जा लगा। 'तुमने मशान् सफ़ट में एक बार मेरी रक्षा की थी—वह रुधी आराज से बोला, आज तुम्हारी फ़ातर पुकार सुनकर उस वपकार का हजार गुना बदला देत भी मैं क्या दिचक्रिचाकगा ?'

वह कुर्सी पर बैठकर हृदय का आवेग दवाता हुआ बोला—  
'आपिर इस दु सप्रद परिस्थिति का कारण क्या था ?'

'क्या कहूँ ? ऐसा जवा बिस्मा है कि न आरभ सूकता, न अन्त ही।' वह कुर्सी की बगल में खड़ी होकर बोली, विवाह हमें सुखप्रद न हुआ। न वे ही सुख पा सके, न मैं ही !'

'यही हात रूय का भी था'—वह अपने-आप गुनगुनाया,  
'मुझसे विवाह करके वह जग भी सुख नहीं पा सगी !'

'आप अलजेरद में वह मुनीम वाता बिस्सा तो सुन ही चुके होंगे !'

'हाँ, किंतु उसमें दुर्भाग को छाया न थी। केवल शोक ! अनवरत शोक ही था।'

'तो सचमुच ही मेरे मरने में वहाँ किसी 'क्रिया !'  
'हाँ, वहाँ तो सपका यही विश्वास था की  
छूत से मर गई !'

'ओह ! तुम्हें क्या मालूम, चेचक  
थी, वह कहते-रहते अटक गई !'

'कौन ?' स्वेन चौक उठा, ?'  
जा बेंठी और आयों

एक कमरे में सजाटा छाया रहा, स्वेन चुपचाप कर चली इक टम म वास्त था और सिमन रुमात्र भिगाती हुई मन ही मन अपना भाग्य कोस रही थी।

तब तदप्रता टहलता वह वापस मेज पर समीप आ बैठा और पूरा हाल सुनने के लिए बोला—'आगे ?'

और वह कहने लगी, किस तरह उम अजनबी स्त्री ने कमरे में प्रवेश किया था, किस तरह तड़प तड़प कर टमकी जान निकली थी, किस तरह वह चाकूबोना आ खड़ा हुआ था और अंत में हगर तक पहुँचा करे किस तरह उसके नाटों का पुजिदा चुरा कर नौ डो-ग्याह हो गया।

स्वेन ध्यानपूर्वक-उसका प्रत्येक शब्द सुन रहा था। वह जानता था कि इस अभागिन औरत के लिये दुनिया के सभी द्वार अन्न बन्द हो गये थे। अतएव निरुद्ध भविष्य में आनेवाले उसके दुखी जीवन की श्लथना कर, वह उदास हो रहा था। कह रहा था, 'यदि ससार में रहना चाहे तो इस अभागिन के लिए, अन्न जर्मों का कड़ुवा फल खाने के सिवा दूसरा मार्ग ही नहीं है।'

सिमन की राम कहानी समाप्त हो गई। फिर भी स्वेन की चुप्पी भंग न हुई। वह निश्चय नहीं कर पाता था, क्या करे, क्या न करे। और सिमन उसकी चुप्पी देखकर भयभीत हो रही थी 'वापस मुझे अराजेरद तो नहीं भेज दगा ? ओह ! कौन इस अभागिनी का घृथा भार उठाने को इत्प्रत मजूर करेगा ?' वह निगाश होकर पुन मृत्यु का आह्वान करने लगी। पर, आखिरका वह उठ खड़ा हुआ और अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण स्वर में बोला सिमन, यह मामला साधारण नहीं है। इस समय तो इसको सुनाने का रास्ता नहीं दिखलाई देता। पर, एक बात स्प

की तरफ़ सिसक-सिसक कर रोने लगी, 'ओह! मुझे बचाओ, मुझे शरण दो।'

स्नेह उसके कंधों पर हाथ धरकर झुक गया। इतना अधिक झुक गया कि उसका कपोल सियन के स्निग्ध झोठों में जा लगा। 'तुमने मशान सफ़ट में एक बार मेरी रक्षा की थी—वह रुघी आवाज़ से घोला, आज तुम्हारी फातर पुकार सुनकर उस चपकार का हजार गुना बदला दते भी मैं क्या हिचकिचाऊंगा?'

वह कुर्मी पर बैठकर हृदय का आवेग दबाता हुआ बोला—  
'आखिर इस दुःखपरिस्थिति का कारण क्या था?'

'क्या कहूँ? ऐसा लगता किस्सा है कि न आरंभ सूफता, न अन्त ही।' वह कुर्मी की बगल में खड़ी होकर बोली, 'विवाह हमें सुखप्रद न हुआ। न वे ही सुख पा सके, न मैं ही!'

'यही हाल रूय का भी था'—वह अपने-आप गुनगुनाया,  
'मुझसे विवाह करके वह जरा भी सुख नहीं पा सकी।'

'आप अजजेरद में वह मुनीम वाला किस्सा तो सुन ही चुके होंगे।'

'हाँ, किंतु उसमें दुर्भाग की छाया न थी। केवल शोक। अनवरत शोक ही था।'

'तो सचमुच ही मेर मरने में वहाँ किसी ने भी सहाय न किया।'  
'हाँ, वहाँ तो सबका यही विश्वास था कि तुम चेचक की दूत से मर गई।'

'ओह! तुम्हें क्या मालूम, चेचक से मरनेवाली कौन थी,  
'वह कहते-कहते अटक गई।'

'कौन?' स्नेह चौंक उठा,  
जा घंटी और आँसों से आँसू

पर  
देर

एक कमर में सनाटा छाया रहा, स्वेन चुपचाप कर चली हक दम म वस्तु था और सिमन रुमान भिगोती हुई मन ही मन अपना भाग्य कौस रही थी।

तब तड़पता तड़पता वह वापस मेज के समीप आ बैठा और पूरा हाल सुनने के लिए बोला—'आगे ?'

और वह कहने लगी, किस तरह उस अज्ञानघोरी स्त्री ने कमर में प्रवेश किया था, किस तरह तड़पतड़प कर उसकी जान निकली थी, किस तरह वह चाकूबोला आ रडा हुआ था और अन्त में हगर तक पहुँचा कर किस तरह उसके नाटों का पुलिदा घुटा कर नौ-शे-ग्यारह हो गया।

स्वेन ध्यानपूर्वक उसका प्रत्येक शब्द सुन रहा था। वह जानता था कि इस अभागिन औरत के लिये दुनिया के सभी द्वार अरु बन्द हो गये थे। अतएव निकट भविष्य में आनेवाले उसके दुखी जीवन की शल्पना कर, वह उदास हो रहा था। कह रहा था, 'यदि ससार में रहना चाहे तो इस अभागिन के लिए, आ हमों का कहुवा फल खेले के सिवा दुमरा मार्ग ही नहीं है।'

सिमन की राम कहानी समाप्त हो गई। फिर भी स्वेन चुपची भग न हुई। वह निश्चय नहीं कर पाता था, क्या करे, क्या न करे। और सिमन उसकी चुपची देखकर भयभीत हो रही थी। 'वापस मुझे अलजेरद तो नहीं भेज देगा ? ओह ! ओह ! ओह !' अभागिनी का वृथा भार उठान को इत्प्रत मजूर निराश होकर पुन मृत्यु का आह्वान करने लगी। वह उठ खडा हुआ और अन्यन महानुभूति सिमन, यह मामला साधारण नहीं है। इस काने का कुछ भी रास्ता नहीं दिखलाई



वातावरण दिखलाई पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि उसके दामाद जो पहले पत्नी का छोड़कर अन्य किसी की ओर आँस भी नहीं चठाने थे। अब इन छोकरियों की हसी-मजाक और नसरे-बाजी में दिलचस्पी कैसे लेने लगे ? उसे पादरी क रग-ढग में बहुत फर्क नजर आया। पहले वे कितने गम्भीर रहते थे और अब कितने चञ्चल। पहले भुलकर भी अपने सम्बन्ध में एक शब्द न कहते। पर, अब स्वत ही अपनी तारीफ के पुल बाँधने लगते—बतलाते स्कुल में कितने अच्छे नम्बर पाते थे, एग्जम में कितनी अच्छी शैली से व्याख्यान देते थे और कैसे कैसे अद्भुत काम दिखलाते थे।

लड़कियों उमकी बातें सुनकर ताजियाँ पीटनी और हसी मजाक करती थीं। पादरी उनसे प्रसन्न न थे, क्योंकि वे उन दोनों एक प्रकार की अवहेलना की दृष्टि से देखा करते थे। काम काज छोड़कर वे घण्टों तक इन युवतियों लडाया करते, मानो सास को दिखलाना चाहते उन्हें चाहती हैं। रिसन की माता को अपने अजीब परिवर्तन बहुत दुःख मालूम हुआ। वह शीघ्र ही वहाँ से निकल भागने का इरादा करने देखती, उधर उसे पुत्री का सलोना मुँहड़ा याद होने लगा कि पादरी अपनी पत्नी को

दिन उसे रगाना होना था, क्षतपव  
और कुछ बातचीत करना

तो करेंगे ही ? इस बार  
उतावलापन करने ही



वातावरण दिखलाई पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि उसके दामाद जो पहले पत्नी के छोड़कर अन्य किसी की ओर आँस भी नहीं चठाते थे। अब इन छोकरियों की हसी-मजाक और नरारे-बाजी में दिलचस्पी कैसे लेने लगे ? उसे पादरी के रग-ढग में बहुत फर्क नजर आया। पहले वे कितने गम्भीर रहते थे और अब कितने चञ्चल। पहले भुंजकर भी अपने सम्बन्ध में एक शब्द न पढ़ते। पर, अब स्वत ही अपनी तारीफ के पुल बाँधने लगते—बतजाते स्कूल में कितने अच्छे नम्बर पाते थे, एग्जम में कितनी अच्छी शैली से व्याख्यान देते थे और कैसे कैसे अद्भुत काम दिखलाते थे।

लड़कियाँ उसकी बातें सुनकर ताजियाँ पीटतीं और हसी-मजाक फरती थीं। पादरी उनसे प्रसन्न न थे, क्योंकि वे उन दोनों की अवहेलना की दृष्टि से देखा करते थे। फिर भी छोड़कर वे घण्टों तक उन युवतियों के साथ गप्पे मारते, मानो सास को दियलाना चाहते हों कि वे दोनों चाहती हैं। रिश्तन की माता को अपने दामाद का यह परिवर्तन बहुत चुरा मालूम हुआ। वह अभीर ही उठी और ही वहाँ से निकल भागने का इरादा करने लगी। जिधर भी, उधर उसे पुत्री का सलोना मुखड़ा याद हो आता। उसे होने लगा कि पादरी अपनी पत्नी को इतने शीघ्र कैसे मूल गये।

असरे दिन उसे रराना होना था, अनएव रात को वह पादरी और कुछ बातचीत करना आवश्यक समझ कर बोली—  
तो धरेंगे ही ? इस बार जाँच-परखर कीजिये  
ना उतावलापन करने से ही पहले घोवा दो

पादरी बुद्ध न बोले। वे उठे और दाय पकड़कर उसे अ कमरे में ले गये। वहा सिग्रन की सभी वस्तुएँ उन्होंने देसी बट रही थी, मानो किसी नुमाशा में लगाने का। दीवार पर उस भिन्न भिन्न आकार के चित्र लटक रहे थे, आलमारी में उसकी पुनिन्दा पुस्तक थी और पत्रों के पाम मेज पर उसकी प्रार्थना पुस्तक पड़ी थी। पादरी ने उस पुस्तक का उठाकर कहा—'मैं प्रतिदिन सिर्फ यही पुस्तक पढ़ता हूँ, दूसरी छूना भी नहीं।' तब उन्होंने एक आलमारी खोली, जिसमें हाथों के दात क दा दक्स रहे थे। पादरी ने उ द घूम जिया और याग—'यह इन्हे गहन घाटती था, अनन्तर इन वस्तुआ को न किसी को हाथ लगाने ता हूँ, न दराने ता हूँ।'

परचात मेज की दरार से गद्दीन कागज में लपकी हुई स्टेंगो इन्क की वह तस्वीर निकाली, जिसे सिग्रन सबसे अधिक चाहती थी।

'इसको भी मैं सब लोगों को नहीं देखने दता।'—वे वाले और मेज का एक चमत्कार कहने लगे—'यह कपड़ा मैं हमेशा सामने रखता हूँ, चूँकि सिग्रन ने अपने हाथों से इस बनाया था। जब धूप आती है, तो इसे बूमर कपड़े से ढक देता हूँ, ताकि मेरे फूलों का रंग न बड़े।'

इस तरह कई वस्तुएँ दिखाकर अन्त में उन्होंने दो अगुठियों काजी, जो एक चमड़े के घेग में सावधानी क साथ रखी हुई थी। 'इन्हे मैं हमेशा अपनी जेब में रखता हूँ,' वे बोले 'और रात भी सिरदान रखकर सोता हूँ।'

बुद्धिया सोफा पर बैठ गई और पादरी को समीप आने का किया—'आओ बैठो।' उसने माना की तरह ज-के-पूदा, 'आखिर तुम्हारे दिल का दर्द क्या है'

पादरी फूट फूटकर रोने लगे। 'ओह! जन्म से वह चली गई, मेरा जीवन अन्वकार-पूर्ण हो गया।'—वे सिसक सिसक कर कहने लगे, 'वह चली गयी, पर मुझे विश्वास नहीं होता कि वह मर चुकी है। लोग कहते हैं, वह चेचक से मर गयी। पर, मुझे विश्वास नहीं होता। मुझे तो यही लगता है कि वह घर छोड़कर भाग गई है, क्योंकि मैं उसे सुग्री नहीं बना सका। ओह! वह मुझसे कैसी भयभीत हो गई थी। मैं उसे जरा भी सुलन द सका। इसका केवल एक ही कारण था कि मैं अपने स्वर्गवश उसे आजादी नहीं देता था। मैंने उसे दुनिया से छिपाकर एक तरह के कारागार में कैद कर रखा था। वही याद आज मेरे कलेजे को चौर डालती है। क्या ही अच्छा-हीता, यदि अपना अस्तित्व मिटाकर भी मैं उसे कुछ दिनों के 'जिये सुखी बना सकता।'

सिग्न की माता को पादरी के शब्दों से ताज्जुब न हुआ, क्योंकि वह जानती थी कि अपने प्यारे की दृष्टि के सामने स्वयं होकर कोई भी मनुष्य पश्चात्ताप और शोक के शीघ्र बहाप ग्रिप्त नहीं रह सकता।

( २१ )

कुत्र सताह बाद पादरी एक दिन दोपहर क वक अपनी बैठक  
में लट्ट हूप ये, इनी समय लोना ने हाथ में एक पत्र लिए हुए  
कमर में प्रवेश किया। आज वह ऐसी प्रसन्न मोरूम दती थी, मानो  
अनाराम ही कोई स्वर्गीय सम्पत्ति पाकर निडाल हो गई हो।  
वमकी आँखें चमक रही थीं, कपड़े ढगदार थे और यात्र सँवार हुए  
पादरी उसकी प्रसन्नता और शांति देख कर चारु पड़े, क्योंकि  
विद्वान गई, तब से वह कभी इतनी खुश नजर न आई थी।  
कुछ दिनों से ता वह ऐसी घबेन और घबड़ायी सी रहा  
करती थी कि दिन भर अपने आप बड़-बड़ाया करती और दिवा  
मनों का अद्भुत हाज सुनाती हुई कहा करती कि किस तरह  
दुनिया का प्रलय होगा। उसके बल अस्त व्यस्त रहते, बाल चलके  
हूप और आँखें ये-नी क साथ इधर उधर दौड़ा करती। वह लोगों  
से—विशेष कर पादरी से—मुह घुराया करती थी पादरी  
को मरमान जड़कियों से तो ऐसी चिढ़ा करती थी भी

पादरी फूट फूटकर रोने लगे। 'ओह ! जब से वह चली गई, मेरा जीवन अन्वकार-पूर्ण हो गया।'—वे सिसक सिसक कर कहने लगे, 'वह चली गयी, पर मुझे विश्वास नहीं होता कि वह मर चुकी है। लोग कहते हैं, वह चेन्नक से मर गयी। पर, मुझे विश्वास नहीं होता। मुझे तो यही लगता है कि वह घट छोड़कर भाग गई है, क्योंकि मैं उसे सुखी नहीं बना सका। ओह ! वह मुझसे कैसी भयभीत हो गई थी। मैं उसे जरा भी सुख न दे सका। इसका केवल एक ही कारण था कि मैं अपने स्वार्थवश उसे आजादी नहीं देता था। मैं उसे दुनिया से छिपाकर एक तरह के कारागार में कैद कर रखा था। वही याद आज मेरे कलेजे को चीरे डालती है। क्या ही अच्छा होता, यदि अपना अस्तित्व मिटाकर भी मैं उसे कुछ दिनों के लिये सुखी बना सकता।'।

सिम्न की माता को पादरी के शब्दों से ताज्जुब न हुआ, क्योंकि वह जानती थी कि अपने प्यारे की, कल के सामने खड़ा होकर कोई भी मनुष्य पश्चात्ताप और शोक के औषु बहाप बिना नहीं रह सकता।

कुत्र सताह बाद पादरी एक दिन दोपहर के वक्त अपनी बैठक  
 में लटे हुए था, इसी समय लोता ने हाथ में एक पत्र लिए हुए  
 कमरे में प्रवेश किया। आज यह ऐसी प्रसन्न मालूम होती थी, मानो  
 अनाराम ही कोई स्वर्गीय सम्पत्ति पाकर निडाल हो गई हो।  
 'बस यही आँखें चमक रही थीं, कपड़े ढगढाग थे और बाज सँवारे हुए  
 पार्श्वी इसकी प्रसन्नता और शांति देख कर चाक पड़े, क्योंकि  
 निश्चय नहीं, तब से वह कभी इसकी गुला नजर न आई थी।  
 पिछले कुछ दिनों से तो वह ऐसी बेचैन और परेशानी में रहा  
 करता ही कि दिन भर अपने आप बड़-बड़ाया करता और दिवा-  
 स्वनी का अद्भुत दान सुनाती हुई कहा करती कि किस तरह  
 दुनिया का प्रलय होगा। उसके वल अस्त ज्यस्त रहते, याल वलके  
 हुए और आखिरी बेचनी के साथ इधर उधर दौड़ा करती थी। वह लोगों  
 से—विशेष कर पादरी से—बुद्ध धुराया करती थी पादरी  
 को मैमान जाइकियों से तो ऐसी चिन्ता करती



मित्रती, उन्हें दो चार खरी-छोटी सुनाये 'बिना नहीं' रहती थी। लड़कियाँ जोता को वापस स्टैंडोर्टस्क भेज देने के लिए पादरी से बार-बार अनुरोध किया करता थीं पर पादरी जानते थे कि उसकी देखैनी का काग्य सिग्नल का रज जो, इसलिए लाय शिकायत आने पर भी उसको घर छोड़ने के लिए नहीं कहते थे।

किन्तु आज उसके बदले हुए रंग ढन को देखकर वे सोचे बिना न रहे कि जोता सिग्नल को भूज गई है। 'आह! मेरे सिग्नल पर कीई भी उसकी याद नहीं करता।—उन्होंने मन-ही-मन कहा।

'कृपया ध्यान देकर सुनें!' जोता आत ही वाली, 'मुझे बहुत कुछ कहना है।' और तब गभीर स्वर में एक अजीब किस्सा श्रारभ कर उसने पादरी को चकित कर दिया।

'एक छोटा-मा गॉन था' वह उपदेशक की तरह कहने लगे, 'जिसके पड़ोस में थी, एक छोटी सी पहाड़ी। गॉन में एक किसान परिवार रहता था और पहाड़ी पर कुछ खानाबदोश बस्ते थे। एक दिन किसान की स्त्री, खानाबदोश की स्त्री को प्रभव के समय सहायता देने पहाड़ी पर गई। किन्तु जब बच्चे को नशलाया बुढ़िया की आरों में महसूस पानी का एक छोटा ना गिरा, जिस स ऐसी दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो गई कि घर पर बैठे वह खानाबदोशों की चोरियों पकड़ने लगी। उस दिन से जब कभी खानाबदोश आने, बुढ़िया फौरन उठे जा पकड़ता थी। एकदिन हाट से कौटले बक राह में एक खानाबदोश स उमकी नेट ही गई 'कहो जी यह कपड़ा क्यों पकड़ो?' उसने खानाबदोश के गठरी देख कर पृछा—'प्रजी नेट सस्ता हाथ लगा' आदर्म

॥ 'दी किसान आपस में लड़ रहे थे, मैं पीछे स ले भागा।

॥ मुस्फराई और बहुत देर तक उनके साथ गप्पें लगाई

॥ तब खानाबदोश बोला, 'बुढ़िया! तुम हम लोगों को ह

जगद् कैसे देख लेती हो ? और भोजी बुढ़िया ने आखों में  
 पकने का पूरा किस्सा कह सुनाया । वस, ज्योंही बुढ़िया ने अ  
 रहस्य रोला, खानाबदोश ने लपक कर उसकी आखें फोड़ ड  
 और दमशा क जिये उसे दिव्य दृष्टि से घचित कर दिया  
 यही हाल मेरा भी हुआ महाशय ! जब आपस पहली बार मुल  
 कात हुई थी । आपने निर्दयता के साथ मेर दिव्य चक्षु फे  
 कर हमेशा के लिए मुझे अधी बना दी । तब से मेरा जीवन इत  
 अयकारपूर्ण हो गया कि मुझे न कुछ दिखाई पड़ता है,  
 सुनाई ।'

पादरी चुपचाप सुन रहे थे । 'फहे जाओ !' उन्होंने शांति के  
 साथ कहा, 'मैं जानता हूँ, तुम केवल किस्सा सुनाने नहीं  
 आई हो ।'

'हाँ, मैं कोई किस्सा बनानेवाली नहीं हूँ' जाता साँस लेकर  
 कहने लगी, 'मैं एक जरूरी बात कहने आई हूँ । पर वह बात  
 कहूँ, इसके पहले मुझे एक किस्सा और कहना है । आपने सुना  
 होगा, यहाँ नजदीक ही हगर नाम की एक ऊजड़ बस्ती है । जहा  
 की विचित्र कथा आप सुन ही चुकेंगे, किस तरह वहा एक  
 पादरी का खून हुआ था । हा, तो जब कभी मुझे हगर का ध्यान  
 आता है, मेर मन में विचार उठता है कि उस आदमी को—जो  
 वहा के शाप ग्रस्त निवासियों का वशाह है और जानता है कि वहाँ  
 के लोग अधिकतर अकाल-मृत्यु पाते हैं—एक फूल जैसी कोमल,  
 निष्पाप और भोजी लड़की से विवाह करते समय क्या उतिक भी  
 खयाल न आया होगा कि वह एक भीषण अपराध करने जा  
 रहा है ।'

'लोता !' पादरी उसे चेतावनी देते हुए बोल उठे । पर  
 शान्त थी ।

कैसे हो सकती थी, अगर जन प किसी  
पभाव न होता ? अगर तुम्हारे रोगों  
अगर यह शक्ति से वम की का, जिसे तुम  
खींच लाने का हृदय सफल न कर लिए  
घटनायें कैसे हो सकती थी ?

'अच्छी बात है !' स्वेन ने आवेशर  
कहा, 'यदि तुम्हारी रूखें दृढ़ता है कि लोग  
यात्रों पर विराम किया जाय, तो फरा,  
किंतु यदि यह सच है कि रुख के अरु  
यहां तक खिंची चली-आयीं हो, तो मैं स  
दण्ड देने के लिए ही यह सिनाप कराया  
गी कि तुमसे मिलकर मेरे प्रेम की उगावा  
छठेगी ।'

'हां, वह जानती थी—सिमान ऐसे स्व  
किसी पारलौकिक व्यक्ति से जानचीन कर,  
कि प्यार करने पर भी तुम प्रेम का प्रत

शिक्षा से अथ मेरी रग रग में कितनी गहरी पैठ गई हैं। अथ मैं अलजेरद वापस जाऊंगी तो एडवर्ड मुझे किना परिवर्तित करेगा? व अथ पहले से भी अधिक सुखी होंगे और हमके लिए तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद देंगे ?

स्वेन की आँखों में आँसु घमड़ आये। वह सिग्नन का हाथ पकड़ कर मुक गया और सिसककर रोने लगा।

— 'और कल जब एडवर्ड आवेंगे' वह कहती रही, 'मैं उन्हें पूरा हाल सुना दूँगी, जिससे वे तुम्हें दार्शनिक धन्यवाद दे सकें '

'उन्हें ?'—स्वेन चाककर उलझ पड़ा।

'सुनो स्वेन।' वह दृढतापूर्वक बोली, 'अपन दुराव छिपाव का फलदा बीच में रखना ठीक न होगा। मैं उन्हें बता दूँगी कि तुम मुझे चाहते हो। बना दूँगी, जिस तरह मुझे प्रेम वा सच्चा रहस्य बात हुआ। मैं उन्हें पूरा हाल कह सुनाऊंगी, ताकि वे जान सकें कि प्रेम न किसी का आधिपत्य स्वीकार करता है, न प्रियतम क अतिरिक्त किसी की परवाह करता है। प्रेम का कानून निराला ही है। प्रेम वाद और हुनम का गुलाम नहीं है। वह चाहे जप आता है, चाहे जप चला जाता है। और ये बातें उन्हें यही जतन बाप-पदों के प्राचीन निवास स्थान हगर में बुझाकर बताऊंगी, क्योंकि प्रकृति क इस सुन्दर वातावरण में प्रेम का रहस्य सुनकर वे जागेंगे कि चह ता व भी प्रकृति की तरह महान और सुन्दर बन सकते हैं।'

झाड़ी में छिपा हुआ व्यक्ति चोर की तरह लुफकर बैठने में सज्जा का अनुभव करने लगा। समझ था कि जण भर बाद ही झमाड़ी से निकलकर सिग्नन और स्वेन क सम्मुख जा सके। यकायक अपन सम्मुख एक अजीब वस्तु देखकर वह

आ नहीं लिख गया । देखा, पन्थों के होने, जो पहले कुछ भी नहीं था, फाटक का एक पुराना खंभा है, जो तबना जंगल और बाड़ा हुआ है कि पन्थों का नशा न होना, तब भरे में टुटकर आयायी हो जाना । बाड़ी चोक पड़े, क्योंकि वही नैऋतकी सीतल का श्रमण खंभा था, न फाटक ही दिखाई पड़ता था। तो वही मने भी अश्रुति के और आँसू मन्ने लगे । कि जो तब जनाया था न मिटा, का वे नाजुब कर लेते । इमो सब करने का और मन्ना मा पना लगा कि वातचोट का प्रवाह और समुद्र ही विचार से पहली जगा है । मित्रन कह रही थी—तो सचमुच ही समान जग मरणा तुम येने-पागल हा गए थे कि घटना थी कुछ भी समझ न सके सब ?

हाँ, समान मा जग भी नहीं है—म्वेन आश्रुते-उदरने होना, हीर : एना हीरह मनी कि मैं, उम काम में जमीरु य, एकीक म्वा में मनाम मर जग अर्वा छोटन-फटकेशन जगा, ला वे दिखदिना मर । नीर मरही जांग, किग तरह गुफे उम्हाने जवरन विभा ममि तपाम विभकुन अटक गयी माना आंग के जिप वर सवगे बासायी म ।

'भही, भही, यह तुम्हारे मन की केवल अश्रुति है, वट भी ही 'अतीतय है, तुमने रश्म म में भी ऐसा काम न किया होगा ।'

'कलून उल्टी मरणा दौड़ा रही हो मित्रन ! इसुन उर्र भी । कि मैं उसमें शगेक था

'विनी।' यह जोश के साथ योगी, 'जो कोई भी है, उस एमो धान क्यवि नहीं मान सचता । मैं, तो यी मात्रा करता हूँ कि जागा ने तुम्हें थड हा धाव किलकुल झूठी है ।'



का तर्क ठिठक गया। देखा, पत्थरों के टोरे में, जहाँ पहले कुत्र भी नहीं था, फाटक का एक पुगना खमा है, जो डाना' प्रजर और सड़ा हुआ है कि पत्थरों का सदाग न होना, चाणु भर में टूटकर धराशायी हो जाता। पादरी चोंक पड़े, क्योंकि चोंक त इसकी जोड़ का वृषग खमा था, न फाटक ही दिखाने पड़ता था। सोना, मन या भक्ति है और श्रोग्य मनन लगे। फिर भी वह अपनासा खमा न मिटा, ता व ताज्जु। करन लगे। इसी बीच वनूप की ओर दग्ना ता पता लगा कि घातचात का प्रगाइ प्रय दुसरी ही दिशा में बहने लगा है। मिशन कह रही थी—'तो समनुच ही क्या उस समय तुम पेन पागज हा गण वे कि घटना की कुत्र भी स्मृति न रख सक ?'

'हाँ, स्मृति तो जरा भी नहीं है—रवेन अटकते अटकते बोना, समय सदा नहीं कि मैं उस नाम से शोरू थ, क्योंकि द्वारा पर जब उन्हें डाँटने फटकारने लगा, ता व दिग्बिना । कहने लग, किता ताह गुफे मेंहान प्रपरन बिना । जवान बिलकुल अटक गयी माता आग क जिध वह सर्वथा था।

'नहीं, नहीं, यह तुम्हारे मा की केवल भक्ति है' वह बोली। 'समय है, तुमन रमन ने मैं भी ऐसा काम न किया होगा।'

'कजूत उन्टी कटपना दोड़ा रहो हो मिशन ! इससे देह नही कि मैं उससे शोरू था ।

'विनी,' वह जोश के साथ बोली, 'जो को...  
 'वह पेसी घात कराने नहीं मान सकता।  
 'यही माना करता हूँ कि लोग ने तुम्हें  
 'घात किलकुल भूठी है !'





उसके शब्दों का विरोध करना दुस्तर था ।

स्वेन ने कविता श्रारम्भ की । कवि अपनी प्रेमिका से अनुरोध कर रहा है कि मुझे स्वर्ग में भी मत भुनना—'यह मत समझो कि मैं तुम्हें नहीं चूम सकूंगा, क्योंकि तुम मर चुकी हो, या तुम्हारे गले में बाह नहीं डाल सकूंगा, क्योंकि तुम कब्र में सा चुकी हो—'

वह सिमन की ओर पीठ किये बैठा था । उसका मस्तक झुका हुआ था, और ओसों शून्य दृष्टि से न जाने किस वस्तु की ओर ताक रही थी । सहसा उसके जी का गुब्बारा, जो सायनाल की दम सुहावनी बेला में अपनी प्रेमिका से अत्यन्त समीप रहकर भी नहीं उमड़ पाया था, कवि के फड़कते शब्दों का धक्का खाकर बह चला 'देखा'—वह कविता का दूसरा पद्य सुनाने लगा, 'सूर्य की तुलनाओं किरणों हिमाच्छादित पर्वत शिखर एवं बगीचे में खिले हुए गुलार को कैसे समान भाव से चूमती हैं ।'

कुछ क्षण तक सिमन एकाग्रता के साथ सुनती रही । स्वेन की तरह वह भी मुह फेरकर बैठ गयी मानो अपने चेहर पर भाव छिपा रही हो । पादरी को अब माद्री की ओट से उसका चेहरा साफ दिखलाई पड़ रहा था । उन्होंने देखा कि स्वेन की तरफ वह भी अपने दिग्गज भाव क आनेश में बह चली है । उसकी पलकें गिरी हुई थी, बाहें झमी हुई थी और ओठ किसी अव्यक्त वेदना से मद मद फड़क रहे थे । पादरी का उसके जवड़ ता नहीं सुनायी पड़े, पर उसके ओठों के स्पन्दन से उन्होंने अनुमान लगा लिया, मानो वह कह रही है—'आह ! उन्हें मैं ऐसे शब्द नहीं कह सकती, कभी नहीं ।'

'जब प्रयत्न क्रमशः समुद्र के गभीर वलन स्यन को विडोहित कर रहा हो'—स्वेन उसी तरह काँपती-आवाज से कह रहा था, 'और चन्द्रमा मेघ-मालाओं का घू घट काढकर अर्द्धरात्रि के समय

विलुप्त हो गया हो, उस समय कर्म का आचरण चोरकर हे सुन्दरी ! अपने दंतों ने ब्रह्म मंत्र पर गुंफे धिपका लेना और धिभित्त न होना, अतः तब मेरी आत्मा, शरीर और ससार क बचन से मुक्त न हो जाय ।'

झाड़ी में बैठे हुए व्यक्ति के शरीर में एकाएक भय मिश्रित काव की एक फफकरी फैल गई। उसने देखा कि सिमन एक चकड़ा भरी दृष्टि से इस तरह घाँटें फैलाकर ताक रही है माना चिन्तन काण से किसी वस्तु के लिए तड़प रही हो। उसके ओठ पुन एक वेदना भर स्पन्दन के साथ गुनगुना रहे थे—'नहीं, कभी नहीं ।'

पत्तों की आर से निगाह हटाकर पादरी अपने की ओर देखने लगे। वह उसी तरह निश्चय भाव से समाधि जगाये खड़ा था माना मूर्ध्भाषा में पादरी को संबोधित कर रहा हो—'तुम उन प्रगापी बुजुर्गों की सन्तान हो, जो तिनके-जैसा अपमान भी नहीं सह सकते थे, क्योंकि वे जानते थे, बदला कैव लिया जाता है ।'

कमिता समाप्त हो चुकन पर, गगीचे में गभीर सन्नाटा छा गया। वे दोनों उठ खड़े हुए। मिश्रन मस्त्रन में घुस गई और स्वेन झाड़ी के समीप होता हुआ वृत्तों के झुरमुट में छिपे हुए एक तालाब के किनारे जा खड़ा हुआ।

वह एकाग्र हाकर तालाब के गभीर जल की ओर ताक रहा था। इसी समय पादरी के मनमें एक भयकर विचार उठ खड़ा हुआ—'यह व्यक्ति सिमन को प्यार करता है। इसकी जीवित रहन देना अनरनाक है ।' और हमारे ही कारण उन्हें मुक्त पड़ा—'बाल पीछे से पानी में धरका देने की आवश्यकता है। वह तनिक भी विरोध न करेगा। वह तो स्वतः मृत्यु का आग्रह कर रहा है ।' वह एक खतरे की घड़ी थी। पादरी विरोधी भावनाओं से

युद्ध कर रहे थे। तब अनायाम ही एक विचार, जो बहुत दिनों से उनके अतस्तज में खिपा था—उठ खड़ा हुआ और खतर की घड़ी टल गई। 'तुमने एक दिन फवल इसा अपराध पर उसे चर्च से धक्का देकर निकाल दिया था कि वह मृतक का अपमान कर चुका था। पर आज तुम खुद हा जिस भीषण काम के लिए बड़े रहे हा, वह क्या है?, पादंग पशापेश में पड़ गये। 'हे भगवन्!' व साचन जग, 'मैं क्या करन चला था! वसन तो फवल मृतक की हत्या की थी, पर मैं जीवित को ही समस्त करन जा रहा था। आह, सैकड़ों जन्म में भी ऐसे महापाप का कभी प्रोयश्चित्त हा सकता है?' और अचानक ही उन्हें एक महान्-सत्य जात हा गया—'क्या जीवित, मृत्यु से हजार गुना पवित्र, महान् और अमूल्य नहीं है?'

जब उन्होंने पुन ताजाव की ओर दृष्टि डाली तो देखा कि स्वेन गायब है। सर्फ स्वेन ही नहीं, एक और वस्तु भी चक्रीयक अदृश्य हा गई थी—वह पुराना खभा भी न था।

पादरो को ऐसी आंत हा गई माना कुभावनाओं से युद्ध करत समय उन्होंने ही खम का चलाइ कर जमीन पर पटक दिया था, जो ऐसा चक्रनाचूर हा गया था कि, बुगदे और डिजके की डेरी क सिया कुछ भी वन्ह अवशिष्ट न रह गया था।

तब धीरे धीरे उन्हें ऐसा प्रतीत हान लगा मानो वह खभा बाहर नहीं था, मरतत उनक हा अत था।

हो गया है, क्योंकि उनके मन में एक विचित्र हृदयकल्पन भासित होने लगा था। उनका हृदय में प्रेम और त्याग की पुनीत भावनाओं की एक मधुर कलकलामय धारा प्रवाहित होने लगी थी। उन्हें अब पाठों ज्ञान में एक अभूतपूर्व आनन्द मिल रहा था, क्योंकि धर्मात्मिका के रूप में वे न सिर्फ असाध्य आत्माओं के पथ-प्रदर्शक, संरक्षक और नेता थे, प्रत्युत मानव जाति के विशाल परिवार के कुलपति, जगत् के विस्तृत उद्यान के माली और भूत-मटक मनुष्या के गङ्गाधर थे। जब यस्तव को उस सुशबना संध्या के समय पीठ पीछे प्रदक्षिणा में हाकर वे वापस घर की ओर पलटे, उन्हें हम वस्तु के लिए आश्चर्य होने लगा, जिसने उनको हत्या के महापाप से बचा लिया था। क्योंकि वह वहनु न प्रेम की प्रवृत्ति थी, न त्याग की, प्रत्युत जावन के पवित्रता की वह भावना थी, जो स्वयं के दुभाग्य रूपी खन में उगार आज एक विशाल घृत्न की तरह टट्टना के साथ लड़ी थी।

अगले दिन प्रायः काज के समय बगीचे में आने पर सिमन ने देखा कि करिना की पुस्तक रात को वहीं बलूत के नीचे छूट गई थी। उसने किताब का जमीन से उठा लिया, किन्तु पन्नों के बीच एक छोटी-सी धैत्री देवकर वह चोंक पड़ी। थैली उसी पृष्ठ पर रखी गई थी, जहाँ उस कागजार मुक्त सैनिक की कहानी लिखी थी। सिमन के आश्चर्य का कारण न रहा, जब उसने देखा कि धैत्री में स्वयं उसकी दो अगुठियाँ और कुछ अशर्कियाँ रखी हैं। कागजार में वह सारा मामला ताड़ गई और उसकी आँखों से अविश्वसनीय आश्चर्य का आँसू बह चला।

जब स्वयं आया, वह फूट-फूटकर रो रही थी। बहुत ढाढ़स बंधाने पर बाली—कल रात को पहचाने यही थे। उन्होंने सब

1  
1

1

7

1

1

6

1

1



घातें सुन लीं । जान लिया कि मैं तुम्हें चाहती हूँ । अतएव ये चीजें  
होइ गये हैं ।'

'वाहती हो ?' स्वेन आनन्द के मार चिछा उठा, 'क्या सच-  
मुच ही तुम मुझे चाहती हो सिध्न ?'

'पर वे नाराज नहीं हुए' वह कहती रही, 'अब मुझे लिवाने  
को वे नहीं आवेंगे स्वेन ! वे इस अगूठी द्वारा कह गये हैं कि मैं  
अब यहीं रहकर तुम्हारी हो सकती हूँ ।'

दोपहर बाद पादरी का एक सदेश लेकर जोना ने हगर में  
प्रवेश किया ।

उसे बहुत सी घातें पहनी थीं, जिनमें एक दिवा स्वप्न का  
भी हाल था । बोली—'कल रात को मुझे हगर की भंवर इमारत  
फिर नजर आई । बुढ़िया उसी तरह खिडकी में बैठी ताक रही थी,  
और वसी तरह वह पुराना सभा भी अटल भाव से खड़ा था ।  
तब अचानक ही वह बुढ़िया दर्ग की आर हाथ उठाकर उठ खड़ी  
हुई और उसका सिकुड़ा हुआ चेहरा हर्ष के मारे जगमगा उठा ।  
'हगर के प्राचीन निवासी शाप से मुक्त हो गये—एक गभोर आनाज  
सुनाई दी और दूमरे ही क्षण वह बुढ़िया, जो सदियों से वहाँ बैठी  
रही थी, जमीन पर गिरकर विलुप्त हो गई । साथ ही वह  
जाई हो गया और मकानात धडाग्रि गि ने लगे । मैं  
ई कि यह दिवा-स्वप्न मुझे अब कभी नजर न आएगा,  
हगर-निवासी शाप से मुक्त हो गये ।

विचारों की विनयाण गति दृग्दर को आश्चर्यान्वित नहीं होता । प " " सोचता है, मग विचार मौजिह है और वो " " अपनी योजना को अपने सनकर फूलन लगता है, पर जिसो अदृष्ट शक्ति द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी पर बोये गये बीज की तरह जय हजारों लोगों के मस्तिष्क में समाये ही विचार उठ खड़े होते हैं, वो सृष्टि-कर्ता की अद्भुत तीव्र दृग्दर शक्ति लज्जित हो जाते हैं । यही हास पादरो के मन में उपजे हुए 'जीवन की पवित्रता' सम्बन्धी तमोन विचार का भी हुआ । अभी वे अपनी नई योजना का प्रकाशन भी नहीं कर पाये थे कि सहसा हजारों लोगों के मन में वही अद्भुत विचार उठ खड़ा हुआ ।

जून में स्वीडन के पश्चिमी समुद्र तट के लोग वायु परिवर्तन के निरन्तर आनेवाले चामि रोंका स्वागत करने के लिए प्रतिप हजारों तरह की तैयारियाँ करने में जुट रहे हैं । क्रिश्चियॉ रगी जाती हैं, पगीचे दुर्दृष्ट किये जाते हैं, महानान पोत जाते हैं, और



हममार्गे में गरम पानी के होज तैयार रखे जाते हैं। एक सप्ताह भी नहीं बीत पाता कि विश्रान्ति और मनोरञ्जन क इच्छुक हजारों को पुरुष, रोगी-निरोगी, बूढे और बालक, रत्न गाड़ियों में लदकर सागर की हिजारें लेने क लिए आ घमकत हैं और कुछ दिनों क लिये नेपकोर्ड और आस-पास के टापुओं पर ऐसा त्याग मेला मच जावा है, मानो सारा स्वोदन ही खात्री होन आ समझा हो।

इस वर्ष भी हमेशा की तरह धूम-वाम से तैयारी की गई। सकान सजाय गय, नौवें रंगी गई, सड़कें सुगमी गई और हमाम भरे गये। पर यह तैयारी कवल उन्हीं यात्रियों के लिए थी, जा रत्न में लदकर देश के भीतरी प्रान्तों स आये थे। अतएव मुसाफिरो का एक झुंड जय जहाज में लदकर समुद्र की ओर से आया, तो नेपकोर्ड बन्दरगाह पर किसी ने भा-उनका स्वागत सम्मान न किया। पता नहीं, इसका क्या कारण था, पर एक बात स्पष्ट थी कि उस जहाज क सभी यात्रा सदास और चिड़ चिड़े दिखलाई पड़ते थे।

एक सप्ताह बाद हगर का एक व्यक्ति इन्हीं यात्रियों से मिजने के उद्देश्य से एप्लन क समीपस्थ रत्न स्टेशन पर उतरा। क्योंकि उन लोग में उसका छोटा भाई अगजात्र भी शरीक था, जो दो-तीन वर्षों तक समुद्र की हवा खाकर पागल और बीमार होकर बापस लौटा था। जय रत्न नेपकोर्ड में भाई के सकान पर पहुँचा, अगजात्र दावाने की तरह फर में इधर-वधर दौड़ रहा था। उसे थोड़े खास थोमारी तो न थी, पर उसकी आँखें सूजकर ऐसी जाल हो गई थी मानो महीनों से उस नींद है हा। एन नहीं, उस घबैनी का फार दि

अजीब भय घुम गया था, जिससे वह न लेट पाता था, न झोले ही मूँ सकता था, प्रत्युत दर घड़ी इधर-उधर दौड़ा काता था, ताकि अग्नि भक्षण न पावे।

'अगज्ञान ! यह क्या कर रहे हो ?' स्वेन ने चपराकर पूछा।  
 पर अगज्ञान न सुना ही नहीं। यह उसी तरह कमर में चक्कर खाटका हुआ बाहें उठाकर घमभी भरी आवाज में चिल्ला रहा था -  
 'भरो हत ! मारा इन समुद्र वनियों को !'

कौन म घमभी नर विशाकिता पत्नी सिर जटकाये बैठी थी। स्वेन को देराकर यह बाल उठी, 'ओह ! किमी तरकीब स अगर इन्हें नींद आ जोय, तो फाय भर म यह दखी गिट जाय। पर, दुभाग्य स न जान क्या डर समा गया है कि न पा लेटते हैं, न झोले मूड़ते हैं। दिन रात इसी तरह हवा में बाह फटकारत हुए दौबन रहत हैं—'

स्वन न उसका ब्यान खीचने का घूमरा रास्ता न देख किसी पुरानी स्मृति की याद दिलात हुए कहा—'जाज ! याद है, किस तरह वेद व धीवरों क साथ तुम एक दिन मुझे मरा साँप खिजाने भीमन आवे थे ?'

अगज्ञान फौरन चकते चकते टक गया। 'कौन, स्वेन ?' यह झोले फाड़कर बाला, 'भरो आगे, अब मैं पागज हाने के पहले तुम से सामा माँग सकूँगा।'

घमभी अज्ञसानो छत्रों से टपाटप कई बूद झोले दुभक पड़े। उसने कहा शुरु किया, किस तरह उत्तरी समुद्र के भयकर युद्ध के बाद एक दिन उनका जहाज देसी जगह जा पहुँचा था, जहाँ युद्ध में मारे गए सिपाहियों की हमारों लारों समुद्र के वक्ष - स्वप्न पर तैर रही थी। 'वे चित्त नहीं थीं यह कहने लगा, 'प्र

शले में बँधी हुईं रबर की वैजियो के कारण बिलकुल खड़ी तैर रही थीं, जिनसे उनके सिर पानी से ऊपर, साफ साफ दिखाई देते थे। ऐसी हजारों लाजें थीं, जिनसे सारा समुद्र भरा हुआ दिखलाई देता था। ओह, स्वेन ! जरा कल्पना तो करो, वह दृश्य कितना भयावना रहा होगा। पर सबसे भयंकर बात तो थी कि पानी पर तैरते हुए उन नर-मुएदों की आँखें, सिर पर मँडराती हुई समुद्री चोजों ने नीच रखी थीं। ओह ! वह वीभत्स दृश्य अब भी आँखों के सामने नाचने लगता है। इसीलिए न साता हूँ, न आँखें मूड़ता हूँ, क्योंकि मुझे भय है, पजकें टापते ही वे डरावनी नेत्र विहीन लाशें फिर न दिखने लगेँ।' वह भयभीत होकर बोधते मोलते रुक गया, पर क्षण भर बाद फिर कहने लगा, 'तब एक अजीब घटना हुई। जहाज के नायब-कप्तान, जो बहुत देर से उस भयंकर दृश्य का देखा रहे थे, आँखें मूँकर पानी में कूद पड़े। वह वीभत्स दृश्य उनके लिए असह्य हो उठा। वे समझ गये कि एक बार वह नजारा देख लेने पर जीवन भर शांति मिजना असम्भव है। ओह ! आज पढ़ना रहा हूँ कि उस समय मैंने भी अपने कप्तान का अनुकरण क्यों न कर लिया।'

'नहीं, नहीं ऐसा न कहो।' स्वेन बोला, 'तब बात को याद ही मत करा।'

पर अगजोल चुप न हुआ—'तब हमें अनोखी बातें सुनीं। हमें -क्रोध आ रहा था, इसलिए थन्दूकें उठाकर लगे उन चीलों को दनादन मारने। किन्तु भारी मूर्खता थी। भला हममें उन निर्दोष अघोषित अपराध ? वे तो केवल मरी हुई लाशें नीचे रहे दोष उन राक्षसों की नृशलता के समक्ष था ही। जन्होंने चुटकी बजाते समुद्र का वस्तु स्थान हजारों

नौजवानों की ताशों से पाट दिया था ? वही बात तुमसे कहना चाहता था स्वेन ! कि जय मनुष्य के प्रति मनुष्य को नृशसता का करता हूँ तो सिर लज्जा के मार झुक जाना है। ओह ! क्षमा करो भैया ! एक दिन अपने आपको बड़ा मानता हुआ मैं तुम्हें ध्रुव की उस दुर्घटना के लिए घृणा की निगाह से देखा करता था, जबकि स्वयं सिवा जीवन का निरादर करने के दूसरा धन्या ही नहीं करता था। मैं आज तक न माता पिता की सेवा की, न किसी और के सहायता दी। तुमने तो उन चीजों को तरह फल मृतक का अपमान किया, पर मैंने सिवा जीवन का तिरस्कार करने के और क्या किया ?

वह भाई के चरणों में लड़खड़ाकर गिर पड़ा और क्षमा की मील माँगता हुआ फूट फूटकर राने लगा।

'सब अच्छा होगा जाल !' स्वेन ने भाई के यात्रों में अगुली सुहरात हुए कहा, 'अब भी स्थिति सभल सकती है।'

'नहीं, अब सब चला गया है। वह नजारा सदा के लिये आर्यों में स्थापित हो चुका है। मैं पागल हो जाऊँगा।'

स्वेन ने अपने हाथों से भाई की आँखें मूढ़ दी। 'यगजाल ! आओ, मेरा हाथ आँखों पर रहते तुम्हें वेद भी भयानक बात न दिखेगी।'

'ओह, मच कहते हो स्वेन !' -  
जैस परापकारी के हाथों में चमरका

'आँखें मूढ़ -  
अब हम जिस त  
सेवा कर सकते

अगजोल ने आखिरी मूँद ली और सवा डेढ़ डेढ़ सखी तैर गोड़ी में मस्तक रखकर वह दरतत ही-दरतत गभीर 'फूँ' दिखाई देते हुए चला गया।

x

x

y

वह दिन सचमुच ही विन्ध्य और अद्रमुन था। ऐसा प्रतीत होता था मानो नेपफोर्ट के सभी मनुष्यों का सद्सत्ता उषी नवीन सत्य की अभिव्यक्ति हो गई थी, जो अगजोल के मस्तिष्क में उस दिन उठ खड़ा हुआ था।

जब अद्रमुन निद्रा में अचेत हो गया, स्वेन उठा और पस्ती में देता हुआ टहलने के लिए समुद्र की ओर बढ़ा। किन्तु योड़ी ही दूर गया होगा कि एक औरत ने सामन आकर उसका हाथ पकड़ लिया। स्वेन पहचान गया, वह नेद के मछीद म्मेपपन की पत्नी थी। म्मेपपन भी सुद में शगेक हुआ था और तीन वर्ष बाद अपनी दोनों टाँगों और एक मुन्ना लेकर वापस घर लौटा था।

स्वेन औरत के साथ उसके मशर पर पहुँचा। 'ओह! कितने दिनों से मैं क्षमा माँगने के लिये प्रायश्ची मतोष्ठा कर रही थी—वह बेली, 'क्याकि जय में उन लोगों की शान्त माचनी हूँ, जो ऐसे गैतानी इधियार बना रहे हैं, जिनसे कई निर्दोस प्राणी जन्म भर के लिए लूट खाते हैं, ता आरके प्रति धिये हुए दुःख-पहार के लिए मुझे महान् पश्चताप होना है। क्याकि आपने तो पेशल मृत्क की हिंसा की थी, पर, वे दिन-उदाड़े हजारों जिं लोगों का जिवद करने के लिए छुरियाँ घिसा करते हैं।'

ससने बातचीत करने के बाद जब स्वेन आगे बढ़ा,

एक औरत मिली, जिसे वह फौरन पहचान गया कि

की जूजिया है, जिसने आठ वर्ष पूर्व उसकी वि

को घृणा के साथ ठुकरा दिया था। 'क्षमा कीजिए!' वह समीप आकर बोली, 'उस समय मुझे मालूम न था कि मृत्यु से जीवन का निरादर कितना बदतर होता है। जब मैं देखती हूँ, कितने बच्चे इस भयङ्कर युद्ध से अनाथ हो गए हैं, कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गई हैं, और दिन रात भूखों मरती हैं, तो आपके बारे में अपने भ्रूणपूर्व विचार के लिए मैं शर्म से गड़ जाती हूँ।' बच्चों के परले हों पर उसे एक बच्चा-बच्चा नवयुवक मिला, जो तौड़कर उसक पैरों में गिर पड़ा, और आरों में आँसु भरकर बोला, 'आप मुझकी जानत दाग, क्योंकि आप आसन छान्दर गये, उस समय मैं जवान मान घरस का लडका था। पर मुझे आप से क्षमा माँगनी है, क्योंकि उस समय और लडका व साथ में भी आपको चढाया करता था, और जब कभी आप बाजार में निकलत मैं आपकी गालियों सुनाना हुआ पाछे पीछे दौड़ना था। पर अब मैं जानगया हूँ कि आप बिलकुल निर्दोष थे। बगकि युद्ध में शान्ति होकर जब मैंने अपनी आँसुओं से मृत्युवादी अपने भाइयों की टग करत इलाकी मुझे प्रतीत हुआ कि मृत्यु के प्रति अपराध करने की अपत्ता जावकी हिसा करना भारी पाप है।'।

उस अपरिचित युवक से पैर छुड़ाकर स्वेन एक समीपवर्ती पहाड़ी पर चढ़ गया और समुद्र की अन्तर्गत जलराशि पर झूलते दौड़ाना हुआ मन ही मन बोला, 'यदि मर जीवत व तूफत से लोगो का हम परम मृत्यु की इ भयङ्कर ही सही कि मानव जीवन की हिमा व बदकर दूसरा भीषण अपराध नहीं है, तो इमक वृद्ध की राह ही कि मेरे दुर्भाग्य के पडुप बीज में भलाइ व माठे अर्क भी अन्तर्हित थ।'।

**ज**ब आगजों की तीव्रत दुर्घ्न हो गई, स्वेन टहलता हुआ एक दिन दोपहर के दक्ष नेपफोर्ड के बदरगाह पर आ पहुँचा। देखा, 'नेद' अपने पुराने घाट पर खड़ी है और ओलास आदि उसके पुराने मलजाह मछली के शिकार पर जाने की तैयारी कर रहे हैं। गरभी क दिन ये, अतएव समुद्र की हवा खाने के लिए स्वेन का दिता लजचाने लगा। सोचा, वी एक रात समुद्र पर ही क्यों न पिताह जाय। ओलास राजी तो न था, पर इन्कार नहीं कर सकता था। अतएव स्वेन जा लदा और क्रिस्ती रवाना हुई।

मौसिम बुरा न था, अतएव काफी शिकार हाथ लगने की सम्भोद थी। फिर भी स्वेन ने देखा कि नेद क मछाह न जाने क्यों बदास और चिड़चिड़े हो रहे हैं, न किसी से बोलत हैं, न मुस्कराते हैं, केवल मनहूम की तरह मुँह कटकये चुपचाप बैठे हैं,

और बोलते भी हैं तो सिवा गाली-गलौज के बात नहीं करते, मानो एक दूसरे का मुँह भी देखना न चाहते हों। स्त्रेन को वह चुपगी अलगन लगी। वह रात भर डक पर अकेला बैठा रहा, पर किसी ने उससे कुछाज क्षेव भो न पूछा, मानो सबक मिजाज क्रिकिरे हा रहे हों।

प्रातः काल हुआ और जाँच बाहर खींची जाने लगी। एक आर अ्येजाम खींच रहा था, दूसरी ओर कोरफीजोन। बाकी सब मछलियाँ निकालने का तैयार खड़े थे। पहला बाम्ब आया और इद्र धनुष के रंग की बड़ी-बड़ी मछलिया दखकर सब लाग चहक रहे। पर ज्योही जाल ऊपर उठा, चमचमाती मछलियों के साथ एक काली काजी वस्तु दखकर सब लोग स्तब्ध हो गये। वह किसी अदमी की लाश था, जो मछलियों के साथ जाल में उमरक गई था। एक व्यक्ति उन छुड़ान के लिए लपका, पर ओलास ने डोंट पर कहा, 'छाड़ो उसे। यहाँ आआ, दूसरी आ पहुँची है।' और क्षण-भर बाद आपस में निपटी हुई दो और लाशें जाल में दिख-लाई पड़ीं। इसी समय कोरफीजोन न भी मछलियों के साथ एक भयकर तोष ऊपर खींची। क्रमशः मछलियों, लाशा और जालों का डेर पर डेर लग गया। मछलियाँ जाल में उलटती हुई तदप रही थीं जिससे डेर की भयकरता और भी अधिक बढ़ जाती थी। उस दृश्य को दखकर स्त्रेन की आँसों में आँसू झनक आये। उसने दोड़ स बार बार आँसू पोंछी, पर आँसू न रुक। आखिरकार काम छाड़कर वह एकान्त में जा खड़ा हुआ और सिसक सिसक कर जा का गुस्वार निकालने लगा।

मछाई अन्तमने होकर जालों से मछलियाँ निकालने में व्यस्त थे। अब पहले से भी अधिक बढ़ास, मौन और चुप हो रहे थे।



शुभो समय मुलिया की आवाज आयी—'सब फालतू चीजें जात्र  
स निकाल कर पानी में फेंक दो ।'

रघुन गी रहा था, पर सहायता देना आश्चर्यक समझ पुनः  
अपने ध्यान पर आ खड़ा हुआ और महाशे के भयका काम में  
योग बन गया । वे फालतू कृपा निकालकर पानी में फेंक रहे थे  
और जाल सुकसाकर एक ओर घटारत जाते थे । इसी समय  
एक न एक वर्दावाजी लारा को जाल की छोरियों से बाहर  
निकाली । किसी ने कहा—'सब फालतू चीजें पानी में  
फेंक दो ।'

रघुन न उसे रोना । बोला, 'ओलास ! क्या दर्ज है, यदि यह  
कत्रिभान में दफना दी जाय ?'

पर ओलास कच मानने वाला था । 'नहीं, नहीं'—बढ़ बोला,  
'विश्वी स इन पुणित वस्तुआ को गटपट पर पर देना ही  
ठीक होगा ।'

एक की आवाज के आगे और भी वेग से समझ पड़े । दूता क  
साथ बढ़ बोला, 'सुने चाहे पानी में धक्का दे दो, मैं इस लारा का  
नहीं फलने दूँगा !'

जोगो ने देखा कि जैसा वह पहता था, वैसा करने का भी  
तैयार था । ओलास गुराया और किनारे हट गया । रघुन न लाग  
पठावी । वह भारी वी, हमलिय अरला न बठा सका । एक आदमी  
मदद करने आ गया । क्रमश सभी जालों जालों से निकालकर  
एक ओर रख दी गयी । धीमी ही एक ओर लारा पाकर किसी ने  
कहा—'जर्मन मानुम देता है' और हम अगेज वाली लाग की  
पाजू में लिटा वा ।

रघुन न आश्चर्य के साथ देखा कि विश्वी पर बढ़े हुए  
वे भाग गइसा बढ़ल गये । वे न गाली दत थे —

शांत और गभीर होकर खड़े थे, मानो उन्हें किसी से भी धुंका न हो। ऐसा प्रतीत होता था मानों डूबे हुए सैनिकों की लाशों का समुद्र में सड़ने से बचाकर उनका मन में भारी शांति छा गयी हो।

प्रत स्वेन भी अपने मन के आकस्मिक परिवर्तन से आश्चर्यचकित हो रहा था। आज अनायास ही उसे वह अलौकिक शक्ति मिल गयी थी, जो वर्षों से—रासकर घुम से ज़ोटा तम से—उमके लिए दुर्लभ हो गयी थी। आज मनुष्य की अमर, अविनाशी आत्मा के इन ऊमड़ कलेवर्गों के पचाने के उपलक्ष्य में उम अपने चारों ओर साधुवाद की अमल्य अष्ट वाग्यो सुनाई पड़ रही थी—‘तुम मुक्त हो गये। तुम्हारी कालिमा धुल गयी। तुमने इन मानव-रागीरों के लिए अपने प्राणों की भी परवाह न की, अतः तुम्हारा प्रायश्चित हो गया।’

उसका हृदय आनन्द और शान्ति के साथ मद् मद् नृत्य करने लगा। वह मन ही मन कहने लगा—‘अब लोग चाहें निरस्कार और शक्तिरहित रहें, तुम्हें चिंता नहीं है। क्योंकि तुम्हें सताप है कि मेरी तपस्या परिपूर्ण हो गयी। मैंने अपना आपको जीत लिया।’

इसी समय गुलिया की आवाज आयी—'सब फालतू चीजें जाल  
म निकाल कर पानी में फेंक दो ।'

स्वेन रो रहा था, पर सहायता देना आवश्यक समझ पुनः  
अपने स्थान पर आ खड़ा हुआ और महादोष के भयकर काम में  
योग देने लगा । वे फालतू कृषा निकाजकर पानी में फेंक रहे थे  
और जाड़े सुनम्माकर एक ओर बटोरते जाते थे । इस समय  
स्वेन ने एक वर्दीवाली लाश को जाल की टोरियों में बाहर  
निकाली । किसी ने कहा—'सब फालतू चीजें पानी में  
फेंक दो ।'

स्वेन ने उसे रोना । जोला, 'ओलास ! क्या दर्ज है, यदि तुम  
फर्मिस्तान में दफना दी जाये ?'

पर ओलास कब मानने वाला था । 'नहीं, नहीं'—वह बोला,  
'किश्ती से इन पुणित यस्तुओं को मटपट दूर कर देना ही  
ठीक ठागा ।'

स्वेन की आंखों के आंसू और भी वेग से चमक पड़े । दूता के  
साथ वह बोला, 'मुझे चाहे पानी में धक्का दे दो, मैं इस लाश को  
नहीं फेंकने दूँगा ।'

जोगों ने देखा कि जैसा वह पहता था, वैसा करने से भी  
नैवार था । ओलास गुरीया और फिनारे हट गया । स्वेन न लाश  
बठायी । वह भारी थी, इसलिए अकला न बठा सका । एक आदमी  
मद्द करन आ गया । क्रमशः सभी जाड़े जालों से निकाजकर  
एक ओर रख दी गयीं । वही ही एक ओर लाश पाकर किसी ने  
कहा—'जर्मन सालूम दता है' और बने अग्नेज वाली लाश की  
बाजू में लिग था ।

स्वेन । आश्चर्य के साथ उठा कि किश्ती पर सड़े हुए लोगों  
के साथ—दफन गये । वे न गाती देते थे, न गाती थीं ।

शांत और गभीर होकर खड़े थे, मानो उन्हें किसी से भी घृणा न हो। ऐसा प्रतीत होता था मानों इन्हे हुए सैनिकों की लाशों का समुद्र में सड़ने से बचाकर उनके मन में भारी शांति लायी हो।

अतः स्वप्न भी अपने मन के आकस्मिक परिवर्तन से आश्चर्यचकित हो रहा था। आज अनायास ही उसे वह अलौकिक शांति मिल गयी थी, जो वर्षों से—चासकर घुप से लौटा तब से—उमके लिए दुर्लभ हो गयी थी। आज मनुष्य की अमर, अविनाशी आत्मा के इन ऊँचड़े कलेवर्गों के बचाने के उपलक्ष्य में उस अपने चारों ओर साधुवाद की असह्य अष्ट वाणी सुनाई पड़ रही थी—'तुम मुक्त हो गये। शुम्हारी कालिमा धुल गयी। तुमने इन सत्त्व शरीरों के लिए अपना प्राणों की भी परवाह न की, अतः शुम्हारा प्रायश्चित्त हो गया।'

उसका हृदय आनन्द और शांति के साथ मद् मद् नृत्य करने लगा। वह मन ही मन कहने लगा—'अब लोग चाह विरहकार और बहिष्कार करते रहे, मुझे चिंता नहीं है। क्योंकि मुझे सताप है कि मेरी तपस्या परिपूर्ण हो गयी। मैंने अपना आपको जीत लिया।'

**आ**ज एप्लम के कब्रिस्तान में उत्तरी-समुद्र के भयंकर युद्ध में मर हुए नानिकों की कुछ लाशें, जो बहती हुई अफ़्ग़ानिस्तान के पश्चिमी तट पर आ पहुँची थी, दफनाई जा रही हैं। गिर्जाघर के समीप स्मशान के हाते में लगभग सत्रह लाशों के लिए लंबी चौड़ी कब्र खोदी गई है, जिसके आसपास पड़ोस की ग्रामीण जनता कंधे-से कंधा भिंटाकर गभीरनापूर्वक खड़ी है। यह एप्लम के इतिहास में एक असाधारण घटना मानी जायगी, क्योंकि इससे पहले उस छोटे-से कब्रिस्तान में न कभी इतना बड़ा जनाजा आया, न इतना भारी जन समुदाय ही एकत्रित हुआ था।

भाड़ में माता और भाई के साथ स्वेन भी दृष्टिगत हो रहा है, जो पिछले आठ वर्षों से गिर्जाघर के इतने नज़दीक कभी नहीं आया था और प्रवेश करते समय बहुत हिचकिचा रहा था, किंतु माता के प्रबल अनुरोध से उसे जाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

था। तानिया, जो अगजोअ से मित्रने के लिए हगर से आई थी, उसे आनाजानी करत दर घोज चठी थी, 'सुना स्वेन ! में भी तुम्हारी तरह इस गिर्जे में प्रदम रगना नहीं चाहती, पर सैनिकों की इन लारों को पविस्वात तक लाने के लिए तुमने इतनी दौड़-धूप की कि सप्ताह भर किनार के टापू छानते फिरे, तो अतिम समय मुझे छिपाये अजग रक्दा रहना कितना अनुचित होगा। और जब तुम दर रह हो कि तुम्हारे प्रति लोगों को मनोवृत्ति अब पहले जैसी नहीं है, तो क्या कारण है कि गिर्जे की शक्ति देवत ही राजें माकने अगते हो ?'

तानिया का कहना सोलहों आना ठीक था, क्योंकि लोगों की विचार-धारा में अब मचमुच ही आकाश पाताप का अंतर नजर आने लगा था। पिछले युद्ध के भीषण हत्याकाण्ड और भयकर दुर्भाग्याम का नजारा देख चुक थे। इसलिये असह्य छो पुरुषों की तनि लेनवाजे उस बोभरस मृत्यु यज्ञ की तुलना में स्वेन का छोटा सा अपराध उन्हे नगण्य प्रतीत होने लगा था। 'ओह ! मृत्यु न जीवन किना अधिक पुनीत और महान् है'—अब वे स्वेन की परापचार वृत्ति और युद्ध पीड़ितों की सहायता करने की जगत देखकर कहने लगे थे, 'निस्संदह स्वेन उन लोगों से ज्ञान दर्जे श्रेष्ठ है, जो मानव-जीवन की पवित्रता का निरादर कर दिन-गहाड़े हजगों त्रेगुनाह का तलवार के घाट बतार रहे हैं।'

इस स्वेन की अन्तर्दशा में भी पहले की अपेक्षा भारी परिवर्तन दृष्टिगत होने लगा था। जिस दिन से उसने समुद्र में डूबी हुई लारों वचाकर परापकार और सेवा का व्रत ग्रहण किया था, उस दिन से ऐसी अभूतपूर्व शांति का अनुभव होने लगा था, जो न वैभव से उपजबभ हो सकती थी, न असाधारण वीरता या यश से ही। अब उसे जीवन में पहले पहल

कि ससार में सुख नाम की भी कोई वस्तु है। 'आह ! पहले कितना दुखी और अधोष था।' वह अब सोचने लगा था, 'यह भी नहीं जानता था, जीवन किने कहते हैं। किन्तु अब कलक की कालिमा से मुक्त होकर वापस सिन्न के पास जाऊंगा तो वह कैसी खिल उठेगी ! अब लोग चाहे मेरा बहिष्कार करना न छोड़ें, तो भी मुझे दुःख या ग्लानि न होगी, क्योंकि मुझे विश्वास हो गया है कि मेरी अतरात्मा अब मुझे दोषी करार नहीं देती। मेरे पापों का प्रायश्चित्त हो चुका है।'

एप्लम के इस महत्वपूर्ण कार्य में शरीक होने के लिए अजमेरद के पादरी भी प्रायें थे। उन्हें देखकर पहले तो स्वेन के मन में एक बचैना होने लगी, किन्तु दूर ही था वह सोचने लगा, 'आह ! यह व्यक्ति मेरा कितना भारी हितेच्छु है ! भला कौन मुझे इतना सुन्दर उपहार दे सकता था, जैसा भिन्न-जैसे अनमोल गज के रूप में इस महात्मा ने मुझे प्रदान किया है। निरसदह यह एक महात्मा है, क्योंकि इसके चेहर पर त्याग और आत्म बलिदान की एक असाधारण छाप है।'

अब लाशें दफना दी गईं और अंतिम भजन समाप्त हो चुका, की स्मृति में कुछ कहने के लिए बत्र के सम्मुख । स्वेन को प्रारम्भिक शब्द नहीं सुनाई दिये, । अपने भूतपूर्व जन्मानों को धन्यवाद देकर पादरी त्योंही पीछे से बाह खींचकर किसी ने स्वेन का । कर दिया । पलट कर देखा तो वही अजनबी औरत आई, जो दा बप पूर्व उत्तर से आनेवाली रेल से उसे ही एक दिन मिल गई थी ।

'अकेली ही आई हूँ'—लोता ने गभीर मुख मुद्रा देखकर कहा, 'उनके साथ नहीं' बसने

संकेत किया। पर व्याख्यान जोर जोर के सध शुरू हो गया था, इसलिए म्येन ने लोता की बातों पर ध्यान न दिया। वह पन्द्रह कर उसी आर गौर के साथ दूरने लगा, जिधर सारी भीड़ एकत्र दृष्टि में ताक रही थी।

'मित्रो !' पादरी सिद्धस्त वक्ता की तरह गभीर आवाज से कह रहे थे, 'इस अमर समाधि क सम्मुख खड़ा होकर आज मैं मृत्यु और जीवन की पवित्रता क सम्बंध में कुछ बहूँगा। मुझे विश्वास है कि यहाँ एक भी व्यक्ति ऐसा न होगा, जो मृत्यु की अर्जभ्य पवित्रता से अनभिज्ञ होकर न जानता हो कि मृतक का अपमान करनेवाला देना लोक में कठोर दण्ड का भागी होता है। आपका याद होगा कुछ वर्ष पूर्व यहाँ एजम में म्येन नामक एक व्यक्ति रहा करता था, जिस हम सब तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से दूर करते थे, क्योंकि वह प्रकृति और समाज क एक महान नियम का अनिहमण कर मृत्यु की पवित्रता का निरादर कर चुका था। मैं समझता हूँ, आप में से कुछ लोगो ने तो उस दिन अपनी आँखों से देखा होगा, किम तरह इसी गिर्जाघर के मंच से उसके पाप की घेपणा की गई थी, किस तरह लज्जित और निरस्त होकर वह नीचा मिर क्रिय गिर्जे से घुपघुप निकला था, और उसक बाद किस तरह लोगों का व्यगपर्या भर्त्सना मडता हुआ, वह अपने जीवन की निराशा घड़ियों गिना करता था। आप का याद होगा, कितनी निदयता से हम लोग तिरस्कार के तीखे धारों से उसका फलेजा छेदा करते थे, कितनी भीषणता क साथ समाज क प्रथम अक्षर—बहिष्कार से उसपर प्रहार करत थे, यहा तक कि चारों ओर से सता सता कर हम लोगों ने उस एजम छोड़कर बाहर चले जाने के लिए विवश कर दिया था, तथाकि व्यक्ति अपनी बेइद आज़िजी, सहनशालता और



विमुक्त नहीं होता था। वह दूमरों की राह से हमेशा अछूत की तरह दूर रहता, चुपचाप सब लोगों के तीखे व्यंग्य और उपहास सहन करता और अधिकतर ऐसे ही लोगों के साथ मिथुन-जुनत रहता था, जो निकट श्रेणी के होते। जैसे—अनाथ बच्चे, गंदे भिखारी और बदमाश खानाबदोश”। और प्रतिदिन हम सुना करते थे कि आज उसके प्रयत्न से अमुक बदमाश रास्ते पर लग गया है और अमुक अनाथ बालक घर-दूर पा गया है। पर हम उसकी बेहद आज़िजी देखकर ऊन उठे थे, क्योंकि जब कभी कोई असाध्य काम आ खडा होता, वह क्रौंन आगे बढ़कर उसे पग पर डालता था, मानो किसी भी रास्ते में हमारे महानुभूति वापस पाने का प्रयत्न कर रहा हो। हम उसकी अमीम सहनशीलता देखकर घबराने लगे, चाहत थे, कि किसी तरह उस व्यक्ति से हमारा पियड छूटे। पर इच्छा होने पर भी हम उसे समाज में वापस शरोक करने के लिए अममर्थ थे, क्योंकि उसे दण्ड देकर अपराध से मुक्त करना हमारी शक्ति से बाहर था। उसने हमारे प्रति कोई अपराध किया होता, तो हम उसे दण्ड भी देते। किंतु वह तो एक प्राकृतिक धर्म का उल्लंघन कर चुका था, तब भला ईश्वर के न्यायालय के उस महान अपराधी को मुक्त करने या सजा देने की हममें क्या शक्ति थी! भाइयो, जरा कल्पना काजिये, उस अभाग को उस समय कैसी दयनीय दशा रही होगी। वह दूमरों की भलाई करके अपने पापों का प्रायश्चित्त कर रहा था। तथापि मृत्यु उसके कंधों पर झुककर एक व्यर्थमय मुसकान के साथ कह रही थी—‘तुम उस शिकजे में फंस गये हो, जिससे सस्तर की कोई भी शक्ति अब तुम्हें नहीं छुड़ा सकती!’

स्वप्न की माता कूट कूटकर रा रही थी। पर वह निर्भीक हाकर वृक्षा की ओर ताक रहा था। यद्यपि उसका मनप पुन उसी

आजिजी का अनुभव हो रहा था, जो समाज की सदानुभूति के लिए उसके चेहरे पर पहले झलकती थी, तथापि उसक मन में अब पहले-जैसी आत्म-ग्लानि न थी। वह निश्चित होकर बका का एक एक शब्द सुन रहा था, माना लोगों में अपनी गुनी चर्चा होने की उसे तनिक भी परवाह न हो।

किंतु पिछले कुछ दिनों से हम देखते हैं कि मृत्यु का साम्राज्य अविनाशिक विरजित और प्रबल होता जा रहा है—' व्याख्यान जारी था, 'हम देखते हैं कि मृत्यु, हिंसा और अत्याचार क भयानक अघों से दिनोंदिन मानव जाति पर अपना अतक जमा रही है। आज एक भी ऐसी घुलाई नहीं, जो मृत्यु क राज्य में प्रोत्साहन न पानी हो। वह तरह-तरह के घटमप, रोग और अपराध फैला रही है, फसल क पहले ही कच्चे पौधे काट लेती है और युद्ध के भीषण घघ अथ द्वारा चुटकी बजाते हजारों लोगों की तोंकों के मुह चढ़ा रही है। आज कितना विघवाए मृत्यु क अत्याचार से तड़प रही हैं, कितनी माताए अनाथ बालकों को लाकर रो रही हैं, कितनी चूटे, अज्ञान बेटों को खोकर नैगश्य के समुद्र में डूब रहे हैं। अब हजारों मनुष्यों का दिन-दहाड़े बल्ल होना और समुद्र में डूब जाना एक मामूली खेल हो गया है। तब प्रश्न उठता है—क्या मृत्यु क इस मनमाने जुल्म के विरुद्ध तो। लनवाली एक भी शक्ति समार में मौजूद नहीं है, जो अस्त मानव जाति को भारी बढ़ियाँ काटकर उसे मुक्त कर सकें? उत्तर मिलता है—है क्यों नहीं! मृत्यु का आजन्म शत्रु—जीवन क्या सभी अत्याचारों को तहस-नहस कर फिर से मानस जाति को हरी भगी करन के लिए समर्थ नहीं है? पर पुन सवाल उठता है—तब क्यों हमार पैरों की बढ़ियाँ नहीं दूटती? क्या हम जीवन का सबसे अधिक नहीं चाहते? भाइयो! इसी प्रश्न का उत्तर दन क लिए मैं आपके सम्मुख खड़ा हुआ

क्योंकि मुझे प्रतीत होता है कि अभी तक हम लोगों ने जीवन को केवल उपेक्षा की दृष्टि से देखा है, मानो वह कोई बिना वेतन का गुलाम हो, जिससे काम तो पूरा ले सकते हैं, पर तनख्वाह नहीं देने पड़ती। सच पूछा जाय तो हम लोगों ने जीवन को रोटी जैसा समझ रखा है, जिसे खाते ता सभी हैं, पर धन्यवाद कोई भी नहीं देता, मानो उसमें कोई भी गभीर तत्व निहित न हो, मानो उसका न कोई मूल्य हो, न स्वरूप ही।

‘आप लोग कहते होंगे कि यह जानते हुए भी कि हम जीवन को सबसे अधिक प्यार करते हैं, पादरी धोरी कल्पना भिड़ा रहा है। पर भाइयो! मैं पूछता हूँ, क्या जीवन को कलवान बनाने के लिए उसे कवल प्यार करना ही पर्याप्त है? यदि ऐसा ही हो, तो हमारे अच्छे कभी-कभी काटे-जैसे क्यों हो जाते हैं, यद्यपि हम उन्हें मरने अधिक प्यार करते हैं। क्या इससे साफ पता नहीं लगता कि जिस तरह बच्चों की सुवाग्ने क लिए प्रेम के अतिरिक्त बुद्धि, शिक्षा और शांति की जरूरत है, उसी तरह जीवन के लिए भी किसी और वस्तु की आवश्यकता है? भाइयो! जीवन एक नज-विवाहिता बधू है, जिसे सुशील बनाने के लिए न सिर्फ प्रेम की प्र गुन शांति, पवित्रता और मरम की आवश्यकता है। जीवन तब तक मृत्यु से जोहा लेन योग्य नहीं हो सकता, जब तक उसका रोम रोम अहिंसा, जाति प्रेम और पवित्रता से अभिमन्त्रित न किया जाय। मुझे प्रसन्नता है कि पिछले कुछ दिनों से हमें इस महान सत्य की अभिव्यक्ति होने लगी है कि जीवन, मृत्यु से ऊपर गुना अधिक पवित्र, महान और मूल्यवान है, और जीवन के पुजागिया का सम्मान करना, अनार्थों को आश्रय देना, पतितों को राह बनाना और मरका समान भाव से दखना ही महान धर्म है। प्रसन्नता की बात है कि अने एवम क अधिकांश लोग स्वयं क

प्रति क्रिये गये अपन अपराध के लिये पश्चात्ताप कर रहे हैं और उसकी परीक्षण वृत्ति का सम्मान करते हुए उसे प्यार की निगाह से देखने लगे हैं। क्योंकि व जान गये हैं कि कोई कैसा ही अपराध क्यों न हो, यदि वह जीवन का भक्त, लोगों का सेवक और गरीबों का सहायक है, तो वह सबसे अधिक आदर और प्रेम का पात्र है।'

'अतएव जीवन के सच्चे पुजारी से, यदि आप लोगों की ओर से, मैं आज पूर्वकृत अपराधों के लिये क्षमा मागू और क्षमा करूँ कि वह सबथा निर्दोषी है, तो आशा है कि आप मे से कोई भी असहमत न होगा।'

समझी आँसों में धौंस छूटकर आये। किसी ने भी पादरी के शब्दों का विरोध न किया।

'मुझे प्रसन्नता है कि दूसरे जरिए से साबित होने के पहले ही आपने उसे बगुनाह स्वीकार कर लिया—पादरी जेब से एक पत्र निकालते हुए बोले और तब विस्तारपूर्वक कहने लग, किस तरह उत्तरी समुद्र के नावियों की लाशों से कई कागज पत्र बरामद हुए थे, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण पत्र उस अमेज की जेब से मिला था जिसकी लाश के लिए स्वेन नेद के महाहों से भगद पड़ा था। पत्र अमेजी में था, इसलिए उसका अनुवाद करते हुए पादरी पढ़ने लगे—

'प्यारी मेरी

कल हम लोग युद्ध के लिए कूच कर देंगे। पता नहीं, फिर मिलना वसीव होगा या नहीं। इसीलिए आज एक बात जित रहा हूँ, जिसे प्रकट क्रिये बिना मुझे पत्र में भी शांति न मिलगी। मेरी... सिंगफील्ड के यहाँ

सके, तो उन्हें सूचित कर देना कि उनका गोद लिया हुआ लड़का, भ्रुव यात्रा में हमारे साथ उस वीभत्स पाप में शरीक नहीं हुआ था। वह बेचारा घण्टों से बेहोश था। जब होश में आया, तो हमने उसे झूठमूठ ही बहका दिया था कि वह भी आदमी का भौंस खा चुका है, जिससे बाद में हमारे विरुद्ध मुखबिरी न कर सके ।”

पादरी बोलते-बोलते रुक गये। पर क्षण भर बाद स्वेन की ओर देखकर रुद्ध-रगठ से बोले, 'स्वेन! मैंने ही एक दिन इस गिर्जागर के मच से तुम्हें दोषी करार देकर समाज से बहिष्कृत किया था। आज परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ कि तुम्हें निर्दोषी घोषित कर पुनः समाज में सम्मिलित करने का सौभाग्य भी मुझे ही मिला है। मैं घोषणा करता हूँ कि तुम सर्वथा पवित्र हो। अब तुम्हें दुनिया से मुह छिपाने की आवश्यकता न होगी। अब तुम्हारी ओर एक बच्चा भी निरस्कार के साथ अंगुली नहीं उठा सकेगा x x'

सुननेवालों के दिल में आनन्द और विस्मय की एक मनसती फैल गई। वे वर्षों पहिच्छर स्वेन को पुनः अपने बीच पाकर आनन्द के आँसु रवाने लगे। पर स्वेन उसी तरह शांतभाव से अपने स्थान पर चुपचाप खड़ा था। उसे समाज में आने की इतनी खुशी न थी, जितनी इस बात से उसकी अतःमा भी अब उसे निरपराधी स्वीकार कर रही थी।

'किन्तु आप लोग शायद पूछने लगेंगे कि यदि स्वेन बेगुनाह था, तो उसे इतना कष्ट क्यों उठाना पड़ा?' पादरी पुनः भीड़ की ओर मुड़कर कहने लगे, 'तो इसके लिए मैंने दो उत्तर सोचे हैं। पहला तो यह कि परमात्मा सुख देने के पहले अधिकतर दुःख दिया करते हैं। अतएव स्वेन को भी उन्होंने तरह तरह के

कष्ट दिये, ताकि अत में उसे मनोवाञ्छित सुख उपलब्ध हो सके। दूसर, कलियुग में ईश्वर हमें प्रत्यक्ष वाणी द्वारा नहीं, प्रत्युत मनुष्य के कर्म द्वारा आदेश दिशा करते हैं, ताकि हम जान सकें कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में सृष्टिकर्ता का कोई निगूढ सदेश निहित है। भाइयो! मुझे विश्वास है कि परमात्मा ने स्वर्न का भी एक महान सदेश देकर भेजा है, जिसके द्वारा घोरअज्ञानों घकार के इस युग में हमें दुख के जाल से मुक्ति पाने का सघा रास्ता दिखाया है पडे—'

स्वर्न का हृदय इन शब्दों का सुनकर आनन्द के मार बाँसा उछाजन लगा। 'आह! सिध्न कितनी प्रसन्न होगी, जब कलक की कालिमा से मुक्त होकर मैं वापस उसके पास जाऊंगा।' वह भावी सुख की कल्पना में गोते लगाने लगा। पर न ज्ञान क्या उसके पैर पैले काँपने लगे कि उससे पड़ा न रहा गया। वह घुटनों के बल जमीन पर झुक गया। उसका कलेजा धक-धक कर रहा था। पर भीतर-ही भीतर उसके जी में अब एक घेदना भी उठ रही थी।

'क्योंकि इस व्यक्ति ने हमें सिखाया है कि बुराई के विरुद्ध युद्ध करने में निरे उपदेश और आदर्श के पाठ निष्कल रहते हैं'— वक्ता कह रहे थे 'आवश्यकता तो इस बात की है कि पतित का पाप मिटाने के लिए उसके मन में पाप के प्रति घृणा का ऐसा भाव भरा जाय कि उसके आत्मा दहल उठे और तब तक चैन न ले, जब तक पाप की दुर्गन्ध उसके अंतराल से समूल नष्ट न हो जाय। भाइयो! नफरत की भावना को दुनिया की बुराई का नष्ट करने का साधन बनाकर, स्वर्न ने हमें बतला दिया है कि मनुष्य अपने दुख के फाटे से समस्त बुराईयों उखाड़ कर मानव-जाति का महान उपकार कर सकता है।'

व्यापार-वद्योग स लाभ चठाकर, हर तरह से इस भीषण दृष्ट्या-  
काण्ड मे याग दिया है। इसलिए ये भयङ्कर लाशें तैरती हुई  
आज हमार तट परी और आ रही हैं, ताकि हम देख सकें, युद्ध  
कैसी घृणित और वीभत्स वस्तु है।

‘मित्रो ! समुद्र के वज्रास्थल पर तैरती हुई ये लाशें भूतों की  
कहानी जैसी कल्पित नहीं है। ये रूप की तरह ठोस हैं और  
वतला रही हैं कि ये किसी दिन पुन इस तट पर हमी स्वरूप में  
आ सकतो हैं, क्योंकि युद्ध के विरुद्ध चाहे-जैसी वक्रताए म्नादी  
आ सक्तो हैं, क्योंकि युद्ध के विरुद्ध चाहे-जैसी वक्रताए म्नादी  
जानी हों और शक्ति क उपासकों द्वारा उसकी चाहे जितनी छिछो  
चढ़ाया जाती हों, तथापि युद्ध का अस्तित्व सत्तार से मिटा नहीं  
है। इसलिए मैं आपसे अनुरोध कर रहा हूँ कि आप इन लाशों  
पर से अर्पित न हटावें, ताकि एक दिन-‘युद्ध’ शब्द का उच्चारण भी  
आप लोगों के लिए पर्याकटु हो जावे कि वसे न कोई सुने, न  
वाले। भाइया ! युद्ध की भाषणता का यह अतिम स्वरूप नहीं  
है। क्या पता, कुछ वष बाद आज का वीभत्स नजारा मुजा  
दिया जाय और हमारी भावो प्रजा नये जोश, दण्माह के सथ पुन,  
युद्ध के नगाडे वजान लगे। क्या पता भविष्य में इसस भी  
भयङ्कर दृष्ट्याकाण्ड हो और लोग पुन रण वीरता की प्रशंसा  
और उपासना करन लगे। अतएव आवश्यक है कि मानव जाति  
के मन में हम अभी से युद्ध के प्रति घृणा की ऐसी भावना भर दें  
कि भविष्य में लड़ाई का दुनिया स

मानव-जाति का सधत प्रवण शठ है  
युद्ध क रूप में पलट  
सक्त है और  
जिसमें स्वर्ण

जाय। युद्ध

पादरी बोलते-बोलते रुक गये, क्योंकि पीछे से डॉह तीव्र स्वर सहसा किम्पी ने कहा—'स्वेन को हालत खतरनाक है, यह बत्तेजना वससे महन नहीं हो सकी, उसका फटोजा टूट गया है '

व्याख्यान जहाँ का तहाँ रह गया। पादरी भीड़ को घोरते हुए स्वेन की ओर लपके। वह माता की गोद में सिर रखे मुर्दे की तरह खमीन पर पड़ा था। उसकी छाती, हृदय की मचलक धक्कन क मारे, धाँसनी की तरह काँप रही थी। पादरी को श्वात दृश्य का वसका पीजा मुखमण्डल प्रेग की एक मधुर मसकान से आलोकित हो उठा। वह हाथ बढ़ाकर, कामा मॉगन के लिए श्रयना धन्यवाद वन क लिये, अस्पष्ट स्वर में गुनगुनाया। पादरी उसके सम्मुख घुटनों क पन झुक गये। उनका हृदय स्वेन जैसे अनमोज मित्र का खोर की आशका से काँप उठा। व रोते हुए अवरुद्ध कण्ठ से चिखा उठे—'मर वधु, कहीं जाते हो ? ओह, यही रडो, कम स-कम सिमन की ही खातिर ' '

लोग उसे पड़ोस क एक मकान में उठा ले गये। भीड़ में से एक डाक्टर भी उसके पास जा पहुँचा था। परीक्षा करके वस पादरी के कान में कहा कि रोगी एक दो घटे से ज्यादा वक्त का मेशमान नहीं है।

इस वक्त वक्ता की प्रतीक्षा में भीड़ ज्यों की त्यों वक्त्र क आस पास जुटी थी। उन्हें आशा थी कि जाते जाते पादरी और कुत्र कहेंगे, जिसस उन्हें जीवन के दु खों से मुक्ति उपलब्ध हो सक। पर बहुत दूर तक घाट जोड़ने के बाद जब समाचार लान क लिए आदमी भेजा गया, तो पता लगा कि पादरी मरणासन्न स्वन का छोड़कर नहीं आ सकते। वे रोगी के गले में डॉह डालकर बैठे हैं। वह उन्हें अतिम वक्त अपने से अलग होने देना नहीं चाहता।



**व्या**ख्यान की समाप्ति के लिए भीड़ अभी पादरी की प्रतीक्षा में ज्यों की-त्यों खड़ी थी। इसी समय गिर्जे के हाते में अजीब आवाज सुनकर लोग विस्मय के साथ चारों ओर ताकने लगे। क्षण भर बाद उनकी नष्टि घुटानों के बज गिरी हुई एक स्त्री पर पड़ी, जो वहाँ फैलाकर अर्द्ध सुपुलावस्था में बोल रही थी। उसकी आँखें खुदी हुई थी और सस्तक पीछे की ओर लटक गया था, मानों नेमान होकर वह कोई अद्भुत दिवा-स्वप्न देख रही हो।

‘मैं वन मृतकों की आत्माएँ देख रही हूँ, जिन्हें इस शमशान में हम लोगों ने आज दफनाया है’, वह कहने लगी—‘वे मृत्यु के क्षण प्रदश में प्रवेश कर चुक हैं और विद्यालय जैसे प्रतीक हान वाल एक विशाल भवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। द्वाराप्राप्त गच्छता है, किन्तु वे भीतर प्रवेश करने के लिए दुलङ्ग मचाते हैं।

कहते हैं—'हम दुनिया क मद्रसे से पास हो चुके हैं । अब अतिम परीक्षा देने यहाँ आ बगिरिवत हुए हैं ।' द्वारपाल कहता है, 'तुम लोग समय से पढ़न पढ़ाई छोड़कर आ पहुँचे हो, पर अब मैं वह भवन का विशास फाटक खोल देता है और सबको एक लगे छोड़े बाजार में ले जाऊँ सदा घर दत्ता है । ये सब कठोर परीक्षा क भय से खोप उठन हैं । इसी समय एक दिव्य पुरुष प्रकट हावे हैं, जिनका शुभ ललाट पर चाँदी जैसा रत्न केश नारा रशम की तरह लहरा रहे हैं । 'पृथ्वी क विद्यालय स उत्तीर्ण विद्यार्थियों ' व समीप आकर पूछते हैं, 'दुनिया मेरी दस अक्षाएँ आज कज किस रूप मे पाजती है ?' विद्यार्थी इस सवाल मरन को सुनकर तिल उठन हैं । पर उत्तर देते समय न जाने क्यों, पनही जवान तुतलाने लगती है, आवाज भारी जाती है और गला रुधने लगता है । व स्वतन्त्री समझ पात, क्योंकि व शब्दों का उच्चारण करत समय उन्हें कठिनाई होन लगती है । अत्यन्त कठिनाई से व उत्तर देते हैं— 'मिट्या देवो की पूजा न करा, 'प्रभु क नाम का दुरुपयोग न करा 'रविवार को रवा, मत से शुद्ध रहो,—माता पिता की सेवा करो—'

वृद्ध पुरुष उनकी अटकत देख मुस्करा दते हैं । 'तुम लोगों न ये शब्द क्यों रट लिए हैं' व कहते हैं, 'पर ये तो चार ही हूँ ! रोव छ अक्षाए क्यों हैं ? मृतक इस बार फौरन योज उठत हैं । उन्हें अपने विद्यालय मे सीखी हुई अक्षाएँ याद आ जाती हैं । न वकी जवान तुतलाती है, न गला ही रुधने लगता है । एक स्वर में, एक साथ ही सब योज उठत हैं—'हत्या करा, चोरी करो, व्यवहार करो, झूठ बोलो, पड़ोसी को लूटो, उसका मकान छीन लो, खत फाट लो, घर उजाड़ दो, स्त्री चडा लो ।' इतनी तेजी

देकर वे आनन्द के मारे

'तुं ! मैं कहों गई थी ? क्या बोली थी ? क्या सचमुच ही परमपिता ने मेरे मुख से अपना सदेश सुना दिया ?' लोता आश्चर्य करती हुई बोली । उसकी आँखों से आनन्द की अखिल अश्रुधारा बह चली थी



# उपसंहार

एक वर्ष बाद

अलजेरद क पादरी की कुटिया के सामने एक घोडा गाडी आ लड़ी हुई। शोक सूचक काने वस्त्र पहन एक नवयुवनी उसने उतरी और चुपचाप मकान क पिछले कमरे में चली गई। उसक आगमन से किसी को भी आश्चर्य न हुआ, क्योंकि उसक जीवन रहने की अकयाह पहले फैल चुकी थी। पुन उस छोटे-त परिवार में शांति का साम्राज्य छा गया। पादरा अब पत्नी क जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते थे। स्वन की मृत्यु के बाद वे अधिकतर अकेले ही पका-त-जीवन व्यतीत करत थे। न दूसरों क काम में दखल देते थे, न अपनी ही स्वच्छदता मे हस्तक्षेप करने देते थे।

×                      ×                      +                      ×

एक दिन पार्यवश सिमन पनि क कमर में गयी, तो उसे ऐसी आनन्दमयी कणकपो का अनुभव हुआ, मानो किसी सुने प्रदश से अधानक प्रेम क पुलकित रातावरण में आ पहुँची हो। उसन दगा कि दीवारों पर भिन्न भिन्न अवस्था के उसक ही अनेक फाटो लटक रहे हैं। अलमारियों में उसकी ही चुनिन्दा किनारें सजी हुई हैं। मेज पर उसक ही हाथों स बना हुआ बेन-बूटेगर रुमाल है और पलंग क सिरहान उसकी ही प्यारी भजन माला की पुस्तक है। उसे समझते दर न लगी, यह पति की ही छति है। वह आनंद क मार गद्गद् हो गयी।

‘आपकी शायद मालूम नहीं है कि खेत अपने सम्पत्ति छोड़ गया है’ पादरी क समीप आकर वह

पाकर उस अमेज सज्जन ने—जिसने उसको गोद लिया था—अपनी समस्त सम्पत्ति उसके नाम कर दी थी। वह रकम अब जोल को तालिया को मिली है। इसी क संव्रध मे जोल का आज एक आया है। वे हम लोगों को हंगर बतौर उपहार दे रहे हैं स्वेन द्वारा आरम्भ किये हुए लाव-सेवा के कार्य को आगे पन्न का हमें अनुरोध करते हैं। मैं समझती हूँ, वहाँ हमें काम का का अच्छा क्षेत्र मिल सकेगा।

पादरी का चेहरा गभीर हो गया। वे उठ खड़े हुए और कम में चहल कदमी करने लगे।

‘अच्छी बात है। यदि जाना चाहो तो मैं रोकूँगा नहीं। लापरवह की तरह बोले, ‘बाहे जहाँ रहे मेरे लिए एक सा है।’

‘ओह एहउह ! वह चोंककर बोल उठी, ‘इस घर के सिवा मे दूसरा कौन-सा आश्रय है ?’

‘पर तुम्हारा घर में रहना ही क्या मेरे लिए पर्याप्त है ?’

सिम्पन कुछ भी उत्तर न दे सकी। उसका गला रुंध गया। हाथ पकड़कर वह पति को खिड़की के समीप ले गई। धर्मोचे की ओर सफेत करती हुई बोली—‘याद है, हम आये इस समय यहाँ अनफशा के कुछ जगली पौधे थे, जिनकी कोई दल-भाल नहीं करता था, तथापि वे प्रति वर्ष ऊगा ही करते थे वे फले-फूले और अनफशों के लिए स्वयं न

